प्रयास

वार्षिक आख्या
1994-95

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश,
लखनऊ

प्रयास

वार्षिक आख्या

1994-95

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश
अनुसंधान भवन, निशातगंज, लखनऊ

LIBRARY & DOCUMENTATION CENTRE
National Institute of Educational
Planning and Administration
17-B, Sri Aurobindo Marg,
New Delhi-110016
DOC, No.....
Date.....

हमारे प्रयास

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उ०प्र० द्वारा वर्ष 1994–95 में कृत शैक्षिक कार्यों की एक झलक प्रयास के रूप में आपके सम्मुख है। प्रारंभिक, माध्यमिक और शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता संबर्द्धन हमारी प्राथमिकता है और इसे प्राप्त करने हेतु हम प्रतिबद्ध भी है। हमारा सदैव यह प्रयास रहता है कि शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे नवीन प्रयोगों, तकीनको, प्रबिधियों और शैक्षिक नवाचारों को हम शिक्षकों और छात्रों तक पहुँचायें तथा शिक्षण और प्रशिक्षण के क्षेत्र में उत्पन्न समस्याओं और कठिनाइयों का समाधान खोंजें।

यह प्रयास इसी का प्रतिफल है। मैं परिषद के समस्त विभागों के सभी सदस्यों के सहयोग और निष्ठा के प्रति उन्हें साधुवाद देता हूँ।

परिषद के क्रियाकलापों में निखार और गुणवत्ता लाने में आपके सुझाव हमारे लिए प्रेरणा स्त्रोत होगें।

डॉ. कृष्णावतार पाण्डेय

निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उ.प्र.
लखनऊ

अनुक्रमणिका

		पृष्ठ संख्या
1.	राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद	1
2.	प्रारम्भिक शिक्षा विभाग	18
3.	मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग	43
4.	विज्ञान और गणित विभाग	51
5.	मनोविज्ञान और निर्देशन विभाग	55
6.	हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषा विभाग	74
7.	अंग्रेजी तथा अन्य विदेशी भाषा विभाग	82
8.	श्रव्य दृश्य और शिक्षा प्रसार विभाग	88
9.	पाठ्यक्रम और मूल्यांकन विभग	93
10.	शैक्षिक प्रशासन एवं नियोजन विभाग	96
11.	व्यवसायपरक शिक्षा विभाग	98
12.	जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान (अध्यापक शिक्षा विभाग)	100

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उ०प्र०

पृष्ठभूमि :

प्रदेश के शैक्षिक स्तरोन्नयन, विविध शोध, अध्ययन, प्रशिक्षण कार्यों के विकास तथा शैक्षिक संस्थाओं, आयोजकों एवं शिक्षकों के मार्ग दर्शन के उद्देश्य से भारत सरकार की नीति एवं सुझाव के आलोक में उत्तर प्रदेश शासन द्वारा सितम्बर 1971 में राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश की स्थापना की गयी जिसे प्रदेश के शैक्षिक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक कदम के रूप में लिया जाना चाहिए।

गठन :

परिषद के सुचारु संचालन, शैक्षिक कार्यक्रमों के नियोजन, स्तरोन्नयन विस्तार और प्रचार–प्रसार के लिए उत्तर प्रदेश शासन शिक्षा (13) अनुभाग संख्या 2024/15(13)/1499(47)/82 लखनऊ दिनांक 13 अगस्त 1983 के अनुसार नौ सदस्यीय एक समिति गठित की गई है जिसके अध्यक्ष माननीय शिक्षा मंत्री उत्तर प्रदेश, उपाध्यक्ष शिक्षा सचिव, उत्तर प्रदेश तथा सदस्य सचिव, निदेशक राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद उत्तर प्रदेश हैं।

उद्देश्य और कार्य क्षेत्र :

परिषद के लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए इसके बहुआयामी कार्य क्षेत्र के अन्तर्गत निम्नांकित उद्देश्यों की संकल्पना की गयी है :–

- शैक्षिक स्तरोन्नयन एवं विकास के लिए स्वयं अनुसंधान करना, अनुसंधानों का समन्वयन एवं क्रियान्वयन करना तथा इन्हें प्रोत्साहन देना।
- उच्च स्तरीय सेवापूर्व एवं सेवारत् प्रशिक्षण की व्यवस्था।
- शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण के क्षेत्र में विद्यालय विस्तार सेवा में संलग्न संस्थाओं को परामर्श।
- उन्नत शैक्षिक विधियों और कार्यक्रमों से विद्यालयों तथा शैक्षिक आयोजकों को अवगत कराना।
- अपने उद्देशों की पूर्ति के लिए राज्य के शिक्षा विभाग, विश्वविद्यालयों, अन्य शैक्षिक संस्थाओं और अभिकरणों से सहकार एवं सहयोग।

- ❑ विद्यालय स्तरीय शिक्षा संबंधी नवाचारों, अभिनव प्रवृत्तियों, प्रविधियों, सूचनाओं आदि का संग्रह और प्रचार।
- ❑ राज्य प्रशासन तथा अन्य संगठनों को विद्यालय स्तरीय शैक्षिक स्तरोन्नयन के संबंध में परामर्श।
- ❑ पाठ्य पुस्तकों, शिक्षण सामग्री तथा अन्य उपयोगी साहित्य का निर्माण तथा प्रकाशन।
- ❑ ऐसे सभी कार्यों का सम्पादन जिन्हें परिषद अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आवश्यक और लाभप्रद समझे।
- ❑ राज्य सरकार द्वारा संदर्भित शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण संबंधी अन्य कार्यों का सम्पादन।

परिषद के विभाग :

परिषद के अन्तर्गत निम्नांकित विभाग अपने–अपने क्षेत्रों के अनुसंधान विकास प्रशिक्षण, विस्तार, मूल्यांकन संबंधी कार्यों का निष्पादन करते हैं :–

1. प्रारंभिक शिक्षा विभाग तथा अनौपचारिक शिक्षा एकक।
2. मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग।
3. विज्ञान और गणित विभाग।
4. मनोविज्ञान और निर्देशन विभाग।
5. हिन्दी तथा अन्य विदेशी भाषा विभाग।
6. अंग्रेजी तथा अन्य विदेशी भाषा विभाग।
7. श्रव्य–दृश्य और शिक्षा प्रसार विभाग।
8. पाठ्यक्रम और मूल्यांकन विभाग।
9. शैक्षिक प्रशासन एवं नियोजन विभाग।
10. व्यवसायपरक शिक्षा विभाग।

इन विभागों में से कुछ विभाग जैसे–प्रारम्भिक शिक्षा विभाग, विज्ञान और गणित विभाग, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग, मनोविज्ञान और निर्देशन विभाग, श्रव्य–दृश्य और शिक्षा प्रसार विभाग एवं अंग्रेजी तथा अन्य विदेशी भाषा विभाग इलाहाबाद में स्थित हैं। हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषा विभाग, वाराणसी में स्थित है। प्रदेश की राजधानी लखनऊ में निदेशक परिषद के प्रशासनिक कार्यालय के अतिरिक्त पाठ्यक्रम और मूल्यांकन विभाग, शैक्षिक प्रशासन और नियोजन विभाग तथा व्यवसायपरक शिक्षा विभाग कार्यरत है। विज्ञान

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उ.प्र.

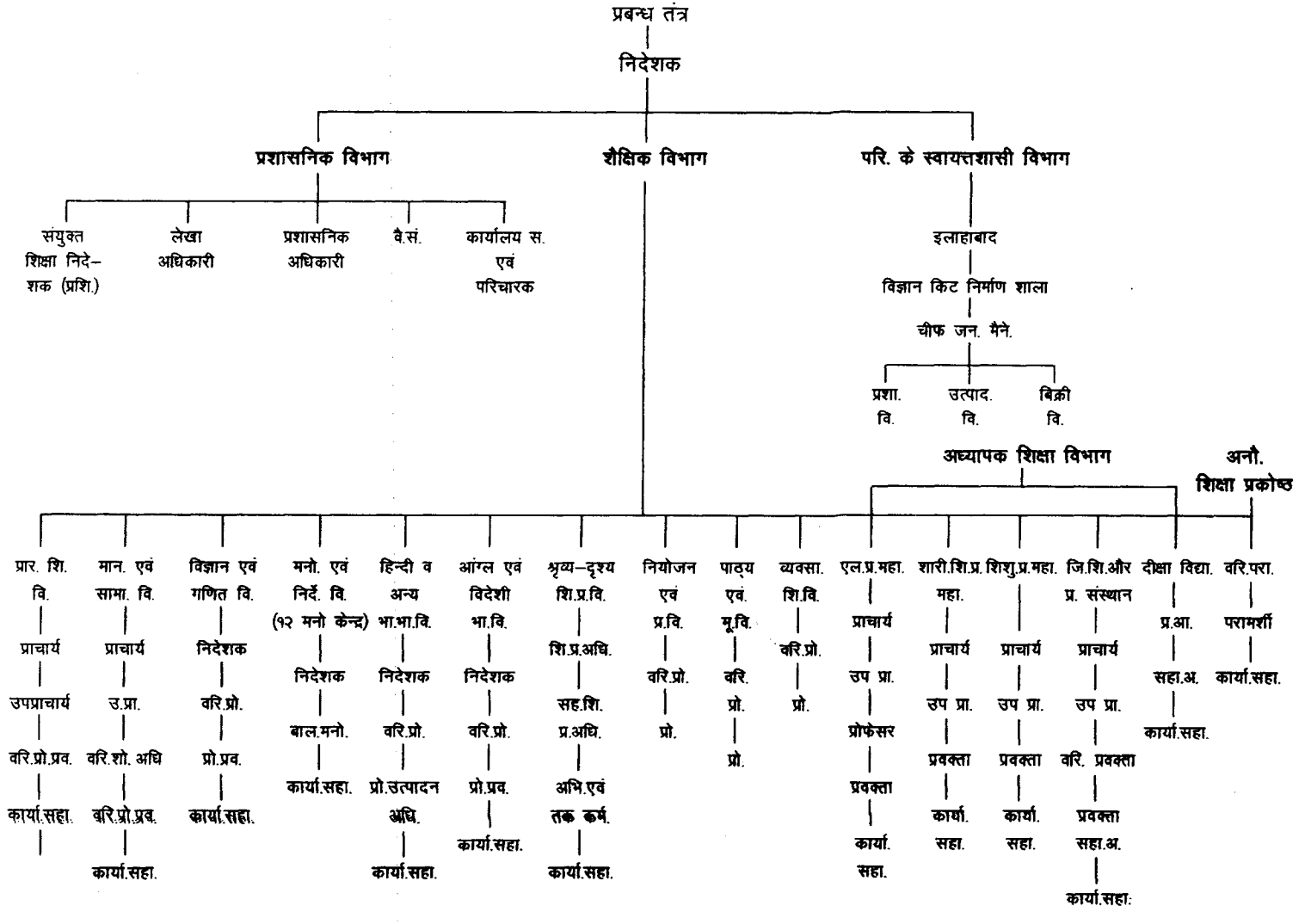

किट निर्माणशाला, इलाहाबाद स्वायत्तशासी संस्था के रूप में निदेशक परिषद के अधीन कार्यरत् है।

इसके अतिरिक्त राजाज्ञा संख्या 191/15(13)/93–1499(79)/92 दिनांक 4 मार्च, 1993 के द्वारा प्रदेश में संचालित 13 एल.टी. प्रशिक्षण महाविद्यालय, 4 शारीरिक प्रशिक्षण महाविद्यालय, 2 शिशु प्रशिक्षण महाविद्यालय तथा 33 राजकीय दीक्षा विद्यालय तथा 62 जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान परिषद के प्रशासनिक और वित्तीय नियंत्रण में कार्यरत् है।

परिषद के प्रमुख कार्य

1. शोध, अध्ययन, सर्वेक्षण–

विद्यालयी शिक्षा एवं अध्यापक शिक्षा के गुणात्मक विकास एवं युगीन आवश्यकताओं के संदर्भ में शोध, अध्ययन तथा सर्वेक्षण परिषद की प्रमुख गतिविधियाँ हैं। जिसके द्वारा कार्यक्रमों के मूल्यांकन एवं भावी कार्यक्रमों के नियोजन में सहायता मिलती है। वर्ष 1991–92 में 60 प्रकरणों पर क्रियात्मक अनुसंधान तथा वर्ष 1992–93 में 70 ऐसे प्रकरणों पर कार्य किया जा चुका है। वर्ष 1993–94 में 113 कार्यक्रमों को सम्पादित किया गया। वर्ष 1994–95 में 110 प्रकरणों पर कार्य किया गया है।

परिषद द्वारा परीक्षाफलों में अप्रत्याशित गिरावट एवं अनुचित साधनों के प्रयोग की प्रवृति तथा इस संबंध में शासन द्वारा किये गये उपायों जैसी ज्वलंत शैक्षिक समस्याओं पर अध्ययन किये गये हैं। जिनमें हाईस्कूल तथा इण्टरमीडियट परीक्षा फल की प्रवृति, परीक्षा में अनुचित साधन प्रयोग एक संज्ञेय अपराध तथा विभिन्न शिक्षा बोर्डो की परीक्षा प्रणाली का तुलनात्मक अध्यन विशेष उल्लेखनीय है।

2. कार्यशाला एवं विचार गोष्ठियाँ–

परिषद द्वारा समसामयिक शैक्षिक विषयों और समस्याओं पर समय–समय पर विशेषज्ञों, शिक्षकों, शिक्षाविदों तथा विभागीय अधिकारियों के सहयोग से शैक्षिक गोष्ठियों एवं कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है। सन् 1991–92 में 60 तथा 1992–93 में 113 तथा 93–94 में 126 कार्यक्रमों का लक्ष्य पूरा किया गया इसमें राष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन विशेष उल्लेखनीय है। वर्ष 1994–95 में 120 कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है।

3. गुणवत्ता का संवर्धन पाठ्यक्रमों का संशोधन परिवर्द्धन और विकास–

पाठ्यक्रमों का संशोधन परिवर्द्धन और विकास एक सतत् प्रक्रिया है। इस दृष्टि से परिषद द्वारा पाठ्यक्रमों के संशोधन और विकास के संबंध में चिन्तन मनन किया जाता है। गत दशक में विद्यालयी शिक्षा एवं अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में पाठ्यक्रम विकास पाठ्य पुस्तकों के निर्माण एवं मूल्यांकन की दिशा में परिषद की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ रही हैं। शिक्षा नीति और एन.सी.ई.आर.टी. की गाइड लाइन्स के परिप्रेक्ष्य में निम्नांकित पाठ्यक्रमों में संशोधन/परिवर्द्धन के साथ लघु प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों का निर्माण भी किया गया है।

- प्राथमिक स्तरीय पाठ्यक्रम।
- उच्च प्राथमिक स्तरीय पाठ्यक्रम।
- एल.टी. पाठ्यक्रम का समवेतीकरण। प्रदेश में प्रचलित एल.टी. के विभिन्न पाठ्यक्रमों को समन्वित कर नवीन पाठ्यक्रम का स्वरूप दियाा गया। जिसे शासन द्वारा स्वीकृत होकर जुलाई 1992 में लागू किया गया।
- बी.टी.सी. पाठ्यक्रम।
- डी.जी.पी. पाठ्यक्रम।
- शिक्षकों तथा अधिकारियों के लिए सेवारत् लघु प्रशिक्षण पाठ्यक्रम।
- प्रारंभिक अनौपचारिक तथा प्रौढ़ शिक्षा अभिकर्मियों हेतु सेवारत् प्रशिक्षण पाठ्यक्रम।
- इसके अतिरिक्त युगीन आवश्यकताओं तथा अपेक्षाओं के परिप्रेक्ष्य में कक्षा 1 से 12 तक के प्रत्येक विषय के पाठ्यक्रम को संशोधित करने का लक्ष्य बनाया गया है। जिसका कार्य प्रारंभ हो चुका है। इसके साथ ही कक्षा 9 से 10 के अध्यापकों के लिए सेवारत शिक्षा प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया तथा शारीरिक शिक्षा के प्रचलित सी.पी.एड. एवं डी.पी.एड. पाठ्यक्रमों का नव विकास किया गया है।

4. पाठ्य पुस्तकों की गुणवत्ता में वृद्धि हेतु पुस्तकों का विकास–

शिक्षा नीति की कोर पाठ्यक्रम एवं एन.सी.ई.आर.टी. के गाइड लाइन्स के परिप्रेक्ष्य में पाठ्यपुस्तकों के पुनः लेखन का कार्य सम्पन्न किया गया। इस संदर्भ में किये गये कार्य का संकलित विवरण इस प्रकार है–

(क)	1990	कक्षा–1	1 पुस्तक	
		कक्षा–3	4 पुस्तकें	कुल 5 पुस्तकें
	1991	कक्षा–2	2 पुस्तकें	
		कक्षा–4	4 पुस्तकें	
		कक्षा–6	10 पुस्तकें	कुल 16 पुस्तकें
	1993	कक्षा–5	3 पुस्तकें	
		कक्षा–7	6 पुस्तकें	कुल 9 पुस्तकें
(ख)	1994	कक्षा–5	1 पुस्तक	

कक्षा–7	4 पुस्तकें	
कक्षा–8	4 पुस्तकें	कुल 9 पुस्तकों का नवरचना का कार्य किया जा रहा है।

(ग) अनौपचारिक शिक्षा के अन्तर्गत निम्नांकित पुस्तकों का पुर्नलेखन कार्य किया गया।

1. ज्ञानदीप भाग–1 2. ज्ञानदीप भाग–2

3. हमारी धरती हमारा परिवेश, 4. विज्ञान का आनन्द। इसी के साथ उर्दू माध्यम की पुस्तकों की नवरचना तथा अनुवाद का कार्य भी किया गया है।

5. राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा –

छात्रों की प्रतिभा संबर्धन के लिए भारत सरकार द्वारा संचालित राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा योजना के व्यापक प्रचार–प्रसार तथा प्रथम स्तरीय परीक्षा के सम्पादन का दायित्व भी इसी विभाग पर है। इसी परिप्रेक्ष्य में विगत पांच वर्षो की उपलब्धियों का उल्लेख्य है और संख्यात्मक दृष्टि से वर्ष 1992 तक उत्तर प्रदेश का स्थान राष्ट्रीय स्तर पर द्वितीय रहा है। वर्ष 1993 में प्रदेश का स्थान तीसरा रहा है जो वर्ष 1994 में राष्ट्रीय स्तर पर पुनः द्वितीय हो गया है।

1989	रु 71
1990	रु 89
1991	रु 81
1992	रु 90
1993	रु 68
1994	रु 71

6. विज्ञान प्रदर्शनी–

छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास और विज्ञान के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करने हेतु परिषद द्वारा प्रतिवर्ष जनपद, मण्डल और राज्य स्तर पर विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है। इसमें छात्रों द्वारा निर्मित वैज्ञानिक उपकरणों की प्रतियोगिता आयोजित की जाती है। इस वर्ष इसका आयोजन जनपद बांदा में दिसम्बर 1994 में किया गया।

7. विशेष अनुस्थापन प्रशिक्षण (एस.ओ.पी.टी.) कार्यक्रम –

शिक्षा विभाग मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार की योजना के आलोक में प्रदेश में विशेष

अनुस्थापन प्रशिक्षण (एस.ओ.पी.टी.) कार्यक्रम का क्रियान्वयन परिषद द्वारा किया जा रहा है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में आपरेशन ब्लैक बोर्ड, भाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान विषयों के न्यूनतम अधिगम स्तर पर तथा शैक्षिक तकनीकी के प्रयोग पर विशेष बल दिया गया है।

इस योजना के अन्तर्गत प्रदेश के प्राथमिक स्तर के 2,77,456 शिक्षकों को चरणबद्ध रूप में चार वर्षो में प्रशिक्षित किया जायेगा। इस वर्ष 74700 शिक्षकों की प्रशिक्षित करने का लक्ष्य है। प्रदेश के 85 "की पर्सन्स" तथा 625 रिसोर्स पर्सन्स का प्रशिक्षण पूर्ण हो चुका है।

उक्त प्रशिक्षण के लिए 3 प्रकार की प्रशिक्षण सामग्रियों की 75–75 हजार प्रतियाँ मुद्रित कराई जा चुकी है। इस परीक्षण का आयोजन निकट भविष्य में प्रस्तावित है।

8. विश्वबैंक परियोजना –

"सबके लिए शिक्षा" योजनान्तर्गत प्रदेश के 10 जनपदों में विश्वबैंक परियोजना लागू की जा रही है। इसके प्रबन्धन और प्रशिक्षण तथा पर्यवेक्षण का दायित्व राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद को दिया गया है।

इस योजना के अन्तर्गत गोरखपुर और बाराबंकी जनपदों का बेस लाइन सर्वे का कार्य परिषद द्वारा किया जा रहा है। इसके कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण कार्य परिषद द्वारा दिसम्बर, 1994 एवं जनवरी, 1995 में किया गया। सर्वेक्षण से संबंधित टूल्स का मुद्रण कराकर संबंधित संस्थाओं को उपलब्ध कराया गया। परिषद द्वारा गोरखपुर एवं बाराबंकी जनपदों में सर्वेक्षण का कार्य दिनांक 23 जनवरी, 1995 से प्रारम्भ किया जा चुका है।

उपर्युक्त योजना के अन्तर्गत आयोजित होने वाले अध्यापकों के प्रशिक्षण हेतु " प्रशिक्षण मंजूषाओं" का निर्माण तथा प्रकाशन कराया गया। फीडबैक के आधार पर इन मंजूषाओं में अपेक्षित संशोधन कार्यशाला के माध्यम से कराकर उन्हें संशोधित रूप में मुद्रित कराया गया। इसके अतिरिक्त इस योजना में 40 मास्टर ट्रेनर्स का प्रशिक्षण 327 बी.आर.सी. संदर्भदाताओं का प्रशिक्षण सम्पन्न हो चुका है। 6 जनपदों में वी.आर.सी. स्तर पर अध्यापकों का प्रशिक्षण किया गया। साथ ही इन्डक्सन लेवल प्रशिक्षण हेतु मंजूषाओं का निर्माण किया जा चुका है। इस योजना के अन्तर्गत प्रशिक्षण टास्कफोर्स नामिका पैनेल आदि की बैठकें भी आयोजित हो चुकी हैं।

9. राज्य शैक्षिक प्रशिक्षण एवं प्रबन्ध संस्थान की स्थापना –

सभी के लिए शिक्षा कार्यक्रम के क्रियान्वयन के लिए विश्वबैंक द्वारा पोषित राज्य शैक्षिक प्रशिक्षण और प्रबन्ध संस्थान की स्थापना, इलाहाबाद में की गयी है। इनके भवन का निर्माण कार्य हो चुका है। इस संस्थान में विभिन्न क्षेत्रों के शैक्षिक अभिकर्मियों को प्रशिक्षित किया जायेगा।

10. स्टेट जर्नल का प्रकाशन –

सभी के लिए शिक्षा कार्यक्रम के व्यापक प्रचार–प्रसार तथा शैक्षिक वातावरण के निर्माण के लिए संकल्प नामक मासिक का प्रकाशन जनवरी, 1994 में प्रारम्भ किया गया है।

11. सबके लिए शिक्षा वातावरण सृजन –

प्रदेश में प्राथमिक शिक्षा में नामांकन वृद्धि, गुणवत्ता संवर्द्धन और समुदाय का सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा प्रदेश के 5 जनपदों–लखनऊ, बाराबंकी, सिद्धार्थनगर, मिर्जापुर और अल्मोड़ा में शिक्षा के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने और 6 से 14 वय वर्ग के बच्चों को विद्यालय भेजने तथा 6 वर्ष की आयु के सभी बालक–बालिकाओं को विद्यालय में प्रवेश दिलाने के उद्देश्य से वातावरण सृजन कार्यक्रम क्रियान्वित किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य नारा "सबके लिए शिक्षा और शिक्षा के लिए सब" रखा गया।

निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रदेश, जनपद, विकास खण्ड और विद्यालय संकुल स्तर पर अधिकारियों, शिक्षकों, शिक्षक प्रशिक्षकों, शैक्षिक संगठनों के अभिकर्मियों तथा समुदाय के प्रतिनिधियों को 20 मई से 30 जून, 1994 तक प्रशिक्षित किया गया। इस प्रशिक्षण के लिए 4 प्रकार के प्रशिक्षण पैकेज तैयार किये गये। इस कार्यक्रम के संचालन में जन जागरण के लिए संचार माध्यमों का भी सहयोग लिया गया। इस प्रशिक्षण में पांचों जनपदों के 64 विकासखण्डों के 11443 गांवों को आच्छादित किया गया। इन जनपदों से प्राप्त सूचनाओं के अनुसार यह तथ्य उभर कर आया है कि कार्यक्रम का जन मानस पर अनुकूल प्रभाव पड़ा है और छात्र नामांकन में वृद्धि हुई है।

12. शिक्षक अभिप्रेरण –

शिक्षा में गुणात्मक सुधार के कार्य की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी शिक्षक है। प्राथमिक शिक्षा को इस दिशा में अभिप्रेरित करने और अपने दायित्वों का पूर्ण निष्ठा और समर्पण से निर्वहन करने का बोध कराने के लिए यूनीसेफ और प्राथमिक शिक्षक संघ के सहयोग से प्रदेश के सभी प्राथमिक तथा उच्च प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के लिए "शिक्षक संकल्प" नामक पोस्टर का विकास किया गया। शिक्षक दिवस 5 सितम्बर, 1994 को माननीय मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में लखनऊ में आयोजित समारोह में 10 हजार शिक्षकों ने संकल्प लिया। प्रदेश के 95 हजार विद्यालयों को पोस्टर की प्रति उपलब्ध करायी गयी। कार्यक्रम के व्यापक प्रचार–प्रसार के लिए जन–संचार माध्यमों का भी सहयोग लिया गया।

13. पर्यावरण शिक्षा –

छात्रों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए प्रदेश सरकार ने एक व्यापक योजना बनायी है। इस योजना के अंतर्गत पाठ्यक्रम और शिक्षण सामग्री का निर्माण शिक्षक प्रशिक्षण, छात्रों के लिए शैक्षिक भ्रमण का आयोजन स्मारकों पर पर्यावरण का प्रभाव का अध्ययन ग्रामीण पर्यावरण संतुलन आदि बिन्दुओं को सम्मिलित किया गया है। इस कार्यक्रम के लिए सरकार द्वारा 13,38,600.00 की धनराशि स्वीकृति की गयी है। परियोजना का संचालन झांसी मण्डल में किया जा रहा है।

14. न्यूनतम अधिगम स्तर कार्यक्रम –

प्रदेश के उन्नाव जनपद के नवाबगंज विकास खण्ड तथा लखनऊ जनपद के सरोजिनी नगर विकास खण्ड में न्यूनतम अधिगम स्तर कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है। इन दोनों विकास खण्डों के सभी प्राथमिक शिक्षकों को भाषा, गणित, विज्ञान और सामाजिक अध्ययन विषयों के कक्षा 1 से 5 तक के पाठ्यक्रम में न्यूनतम अधिगम स्तरों तथा बाल केन्द्रित क्रियाधारित शिक्षण के लिए प्रशिक्षित किया गया। इस वर्ष लखनऊ जनपद के चिनहट विकास खण्ड में योजना क्रियान्वित की गई। इसके अंतर्गत विकास खण्ड के शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। छात्रों की अधिगम उपलब्धि के सही परीक्षण हेतु प्रश्न बैंक का निर्माण किया गया।

15. उर्दू शिक्षक प्रशिक्षण –

उर्दू को दूसरी राजभाषा का दर्जा प्रदान कर उसकी शिक्षा का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया गया है। इसके लिए प्रदेश में चार उर्दू प्रशिक्षण संस्थायें निर्धारित की गई हैं। इन संस्थाओं में वर्तमान सरकार द्वारा 60 के स्थान पर 200 सीटों की व्यवस्था की गई है। इसके साथ ही साथ उर्दू शिक्षकों के सेवारत प्रशिक्षण के लिए परिषद द्वारा जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थाओं के उर्दू अध्यापकों का संदर्भदाता प्रशिक्षण आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण के पश्चात सेवारत उर्दू शिक्षकों को प्रशिक्षित करने की योजना है।

16. वाह्य सहायित परियोजनाएं –

परिषद द्वारा संयोजित अनेक परियोजनाओं का उद्देश्य पाठ्यक्रम नवीनीकरण तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में ऐसे कौशल अपनाना है जो बच्चों के जीवन और पर्यावरण से जुड़ सके। राष्ट्रीय स्तर पर यूनीसेफ सहायता प्राप्त कतिपय परियोजनाएं प्रदेश में संचालित हैं, जो निम्नवत् है।

(अ) क्षेत्र सघन शिक्षा परियोजना –

इस परियोजना का उद्देश्य प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण और सबके लिए शिक्षा का लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उपयुक्त कार्यक्रमों और कार्यनीतियों का विकास, प्रयोग और परीक्षण करना है। इसके लिए समुदाय की अधिकतम सहभागिता सुनिश्चित करना परियोजना की प्रमुख कार्यनीति है। वर्तमान में यह परियोजना मिर्जापुर के सिटी और छानवे विकास खण्ड के 217 गांवों में संचालित है।

(ब) पूर्व प्राथमिक शिक्षा परियोजना–

यूनीसेफ और एन.सी.ई.आर.टी. के सहयोग से यह परियोजना 1986 से इलाहाबाद जनपद के मूरतगंज तथा चायल विकास खण्डों में संचालित है। वर्ष 1990 से इसे समन्वित बाल विकास योजना (आई.सी.डी. एस.) से सम्बद्ध किया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य बच्चों का सर्वांगीण विकास, शिक्षा के सार्वजनीकरण के लक्ष्यों की प्राप्ति तथा बालिका शिक्षा को बढ़ावा देना है।

(स) जनसंख्या शिक्षा परियोजना

इस परियोजना के अन्तर्गत जनसंख्या के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने हेतु औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों ही शिक्षा क्षेत्रों में जीवन की गुणवत्ता के विकास, पर्यावरण, संरक्षण तथा सीमित परिवार की संकल्पना के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने संबंधी कार्यो का संपादन किया जाता है।

(द) बालिका शिक्षा विकास योजना

बाराबंकी जनपद के बंकी और देवा विकास खण्ड में संचालित इस योजना के साहित्य निर्माण तथा अभिकर्मियों के प्रशिक्षण कार्यो के साथ परिषद द्वारा क्रियान्वयन संबंधी सहयोग प्रदान किया जा रहा है।

17. विज्ञान किट निर्माणशाला –

जर्मन गणराज्य की सहायता से 7वीं योजना में विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग, इलाहाबाद के परिसर में विज्ञान किट निर्माण कार्यशाला की स्थापना की गयी है। 22.31 लाख की लागत से भवन निर्मित हो चुका है तथा 2.50 करोड़ की मशीनें और संयंत्र स्थापित हो चुके हैं। निर्माणशाला में अब तक 685 किटों का निर्माण कार्य पूरा किया जा चुका है तथा 2500 किटों के निर्माण की तैयारी प्रगति पर है।

18. प्रकाशन–

परिषद अपने द्वारा किये गये कार्यो से संबंधित साहित्य का प्रकाशन भी करता है जिसमें से कतिपय प्रकाशन निम्नवत हैः–

1. दोहरी शिक्षा व्यवस्था की समाप्ति।
2. परिदृष्य (परिषद के विभागों के कार्यो का परिदर्शन)
3. प्रतिभा की किरण।
4. उत्कर्ष प्रथम पुष्प।
5. उत्कर्ष द्वितीय पुष्प।
6. उत्कर्ष तृतीय पुष्प।
7. एक दशक (परिषद के गत दस वर्षो के कार्यो का संक्षिप्त विवरण) हिन्दी एवं आंग्ल संस्करण।
8. चिन्तन प्रथम पुष्प परिषद द्वारा किये गये शैक्षिक शोधों का संकलन।
9. चिन्तन द्वितीय पुष्प।
10. चिन्तन तृतीय पुष्प।
11. चिन्तन चतुर्थ पुष्प।
12. शिक्षा में गुणात्मक विकास का संकल्प (राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद के निदेशकों का राष्ट्रीय सम्मेलन)

13. अभिप्रेरण प्रथम पुष्प।
14. भारतीय इतिहास पर राष्ट्रीय सम्मेलन (इतिहास पाठ्य पुस्तकों के लेखन के नये आयाम, आर्य समस्या, युग युगीन कौशल)
15. तरुण शिक्षक (सेवापूर्व शिक्षक प्रशिक्षार्थियों हेतु)
16. एल.टी. पाठ्यक्रम।
17. उत्तर प्रदेश में संस्कृत शिक्षा दशा और दिशा।
18. आचार्य राममूर्ति समिति द्वारा प्रस्तुत राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की समीक्षा आख्या की सिफारिशों के उत्तर प्रदेश में कार्यान्वयन के संदर्भ में प्रतिवेदन।
19. हाईस्कूल तथा इण्टरमीडियट परीक्षाफल की प्रवृत्ति एक अध्ययन।
20. प्रयास वार्षिक आख्या 91–92, 92–93
21. माध्यमिक स्तर प्रवृत्ति नियोजन का स्वरूप और उसका प्रभावी क्रियान्वयन।
22. हाईस्कूल में पूर्व व्यावसायिक शिक्षा की सम्भावनायें सुझाव एवं संस्तुतियाँ।
23. वाणी अंक–65
24. वाणी अंक–66
25. आंग्ल सम्मेलन की आख्या आंग्ल भाषा का गिरता स्तर।
26. राष्ट्रीय विविधासंकलन।
27. नए क्षितिज की खोज।
28. वृत्ति नियोजन का स्वरूप एवं प्रभावी क्रियाकलाप।
29. परीक्षा में अनुचित साधन प्रयोग एक संज्ञेय अपराध।
30. गीत मंजूषा।
31. कथा मंजूषा।
32. खेल मंजूषा।
33. उत्तर प्रदेश में विभिन्न शिक्षा बोर्डों द्वारा आयोजित की जानेवाली हाईस्कूल स्तरीय परीक्षा प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन।
34. नव ज्योति अंक–406
35. नव ज्योति अंक 407 (शिक्षक दिवस विशेषांक)
36. प्रयोस 93–94
37. चिन्तन पंचम पुष्प

उपशीर्षक/लघुशीर्षक	01–वेतन	03–मंहगाई भत्ता।	04–यात्रा व्यय	05–अन्य व्यय	06–कार्यालय व्यय	07 टेली फोन
1	2	3	4	5	6	7
001 निदेशन और प्रशासन						
01. राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिक्षद।	417	384	57	60	55	18
003. प्रशिक्षण						
03. परिषद का प्रारम्भिक शिक्षा विभाग–राज्य शिक्षा संस्थान, इलाहाबाद	2780	2585	110	350	200	13
04. परिषद का हिन्दी भाषा विभाग राज्य हिन्दी संस्थान वाराणसी	611	562	28	75	37	05
05. परिषद का अंग्रेजी विभाग–आंग्ल भाषा शिक्षण संस्थान, इलाहाबाद	655	580	37	140	52	05
06. परिषद का मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग राजकीय केन्द्रीय अध्ययन विज्ञान संस्थान, इलाहाबाद	3130	3026	60	420	155	06

अनुदान सं. 75 **धनराशि हजार रू. में**

09–पेट्रोल एवं अनुरक्षण	11– किराया उपशुल्क और कर स्वामित्व	12– प्रका– शन	15– छात्र वृत्ति छात्र वेतन	19– लघु निर्माण, वेतन	20– मशीनें एवं साज सज्जा	23– अनु रक्षण	32– अंतरिम सहायता	33– अन्य व्यय	योग
8	9	10	11	12	13	14	15	16	17
45	10	75	-	20	15	10	10	80	1256
45	12	35	03	70	-	20	22	70	6315
-	08	12	-	30	-	10	13	10	1401
-	20	05	24	67	-	07	14	12	1618
13	21	05	-	62	-	25	25	90	7048

उपशीर्षक / लघुशीर्षक		01–वेतन	03–मंहगाई भत्ता	04–यात्रा व्यय	05–अन्य व्यय	06–कार्यालय व्यय	07 टेली फोन
1		2	3	4	5	6	7
07.	परिषद का विज्ञान और गणित विभाग–राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान, इलाहाबाद	1770	1548	80	240	150	09
08.	परिषद का श्रव्यदृश्य शिक्षा अनुभाग, शिक्षाप्रसार विभाग इलाहाबाद	1924	1840	58	390	190	05
004.	**अनुसंधान**						
03.	परिषद कामनोविज्ञान तथा शैक्षिक निर्देशन विभाग–मनोविज्ञानशाला, इलाहाबाद	2920	2675	90	415	130	05
04.	परिषद का शैक्षिक तकनीकी विभाग–राज्य शैक्षिक तकनीकी संस्थान, लखनऊ	01	–	–	–	–	–
	योग	**14208**	**13210**	**520**	**2090**	**969**	**66**

अनुदान सं. 75 धनराशि हजार रू. में

09–पेट्रोल एवं अनुरक्षण	11– किराया उपशुल्क और कर स्वामित्व	12– प्रका– शन	15– छात्र वृत्ति छात्र वेतन	19– लघु निर्माण, वेतन	20– मशीनें एवं साज सज्जा	23– अनु रक्षण	32– अंतरिम सहायता	33– अन्य व्यय	योग
8	9	10	11	12	13	14	15	16	17
17	25	05	-	20	-	15	20	570	4469
48	08	20	-	30	-	17	21	130	4681
–	45	15	–	20	–	25	25	47	6412
–	–	–	–	–	–	–	–	–	01
168	**149**	**172**	**27**	**319**	**15**	**129**	**150**	**1009**	**33201**

202—सामान्य शिक्षा—आयोजनेत्तर - 80 - सामान्य आय—व्ययक 1994-95 (आयोजनागत) प्राविधान

अनुदान सं.—75

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद

	शीर्षक / उपशीर्षक	01—वेतन	03—मंहगाई भत्ता	04—यात्रा व्यय	05—अन्य व्यय	06—कार्यालय व्यय
	1	2	3	4	5	6
003.	**प्रशिक्षण**					
01.	केन्द्रीय आयोजनागत / केन्द्र द्वारा पुरोनिधानित योजनाएं					
0101.	जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान	18020	13342	1550	3634	3000
004.	अनुसंधान (शतप्रतिशत केन्द्र को)					
0102.	पर्यावरणीय शिक्षा योजना (शतप्रतिशत केन्द्रीय पोषित)	-	-	-	-	-
03.	परिषद का मनोविज्ञान तथा शैक्षिक निदेशन विभाग—मनोविज्ञानशाला, इलाहाबाद	118	114	10	18	15
04.	परिषद का शैक्षिक तकनीकी विभाग—राज्य शैक्षिक तकनीकी संस्थान, लखनऊ	-	-	-	-	-
05	राज्य विज्ञान संस्थान के प्रांगण में जर्मन जनवादी गणराज्य की सहायता से स्थापित विज्ञान किट्स वर्कशाप को अनुदान	-	-	-	-	-
04	प्रारंभिक स्तरीय पाठ्य पुस्तकों की गुणवत्ता के विकास हेतु राष्ट्रीय पाठ्य पुस्तकों की संरचना उर्दू अनुवाद तथा पुनर्लेखन।	-	-	-	-	-
योग		**18138**	**13456**	**1560**	**3652**	**3015**

धनराशि हजार/रू. में

07–टेली फोन	11– किराया	12– प्रकाशन	14– सहायक अनुदान अंशदान/ राज्य सहायता	20– साज /सज्जा	32– अंतरिम सहायता	33– अन्य व्यय	योग
7	8	9	10	11	12	13	14
62(	-	2000	-	6560	2304	7056	58086
-		-	-	-	-	771	771
-	2	-	-	-	8	15	300
-	-	-	300	-	-	-	300
-	-	-	-	800	-	-	800
-	-	-	-	-	-	100	100
62(	**2**	**2000**	**1100**	**6560**	**3212**	**7942**	**60357**

प्रारम्भिक शिक्षा विभाग

प्रारम्भिक शिक्षा के सार्वजनीकरण तथा गुणात्मक उन्नयन की दिशा में प्रारम्भिक शिक्षा विभाग, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उ.प्र. की विशिष्ट इकाई के रूप में निरन्तर प्रयासरत है। प्रशिक्षण, कार्यशाला, पाठ्य पुस्तक लेखन, प्रकाशन, शोध अध्ययन एवं सर्वेक्षणों के माध्यम से प्रारम्भिक शिक्षा की गुणवत्ता वृद्धि, प्रचार एवं प्रसार में इस विभाग की भूमिका अग्रगण्य है। संस्थान में संचालित युनीसेफ सहायित परियोजनाओं एवं केन्द्र पुरोनिर्धारित योजनाओं के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम प्रारम्भिक शिक्षा के विकास एवं स्तरोन्नयन में योगदान देते हैं।

प्राविधिक इकाई

प्राथमिक शिक्षा, शिक्षा की नींव है। प्राथमिक शिक्षा के प्रसार को सफल बनाने के लिए सक्षम अध्यापकों की आवश्यकता है। प्रशिक्षित शिक्षक को अपने पूर्वार्जित ज्ञान के साथ नवीनतम ज्ञान और शिक्षा जगत में विकसित नवीनतम शैक्षिक प्रविधियों की जानकारी का होना आवश्यक है। प्राथमिक शिक्षा में हो रहे अनुसंधान, प्रगति, अभिनव प्रवृत्तियों, कौशलों के विकास, समाजोपयोगी उत्पादक कार्य आदि के शिक्षक को अवगत कराकर ही शिक्षा में गुणात्मक विकास किया जाना सम्भव है।

शिक्षा के स्तरोन्नयन हेतु सेवा पूर्व प्रशिक्षण के साथ सेवारत प्रशिक्षण भी अनिवार्य है। प्रशिक्षित शिक्षकों के पुनर्बोधन हेतु साहित्य सृजन, प्रकाशन आदि के साथ–साथ प्राविधिक इकाई के नियोजित, स्थायी कार्यक्रमों में पाठ्यक्रम–निर्माण, उसमें यथावश्यक संशोधन एवं प्रवर्द्धन, नवसंशोधित बी.टी.सी. पाठ्यक्रम के आधार पर लेखन कार्य हेतु विभिन्न गोष्ठियों का आयोजन, अन्य प्रदेशों एवं अन्यान्य पाठ्यक्रमों के सेवारत प्रशिक्षण का तुलनात्मक अध्ययन, विभिन्न शोध–कार्य करना एवं दीक्षा विद्यालयों के प्रधान अध्यापकों और शिक्षक–प्रशिक्षकों को उनकी अनेक समस्याओं पर शोध करने हेतु प्रोत्साहित करना इस प्रकोष्ठ के मुख्य कार्य हैं। इसके अतिरिक्त समय–समय पर बेसिक शिक्षा से सम्बंधित अधिकारियों को पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण भी इस इकाई द्वारा प्रदान किया जाता है।

इस इकाई द्वारा वर्ष 1994–95 में कृत कार्यों का विवरण निम्नवत् है–

1. सेमिनार रीडिंग/क्रियात्मक अनुसंधान सम्बन्धी पत्रक–निर्माण कार्यशाला

प्रदेश की प्राथमिक शिक्षा से सम्बद्ध शिक्षक–प्रशिक्षकों को सेमिनार रीडिंग/क्रियात्मक शोध सम्बन्धी कार्य की जानकारी देने एवं विद्यालय की समस्याओं के त्वरित समाधान हेतु प्राथमिक स्तरीय शिक्षकों में शिक्षक प्रशिक्षकों के माध्यम से सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास करने के उद्देश्य से माह अक्टूबर 1994 में सेमिनार

रीडिंग/क्रियात्मक अनुसंधान सम्बंधी पत्रक–निर्माण कार्यशाला का आयोजन किया गया। उक्त कार्यशाला में डायट तथा दीक्षा विद्यालयों के शिक्षक–प्रशिक्षकों को सेमिनार रीडिंग/क्रियात्मक अनुसंधान सम्बंधी प्रारूप एवं प्रविधि की जानकारी दी गई।

2. सबके लिए शिक्षा–अवधारणा एवं स्वरूप विषयक प्राथमिक स्तरीय शैक्षिक निरीक्षकों का प्रशिक्षण

सबके लिए शिक्षा का मुख्य लक्ष्य वर्ष 2000 तक प्रदेश में प्राथमिक स्तर पर शत–प्रतिशत नामांकन धारण और उपलब्धि को सुनिश्चित करना है। लक्ष्य की प्राप्ति में अध्यापकों, शैक्षिक निरीक्षकों आदि की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसी उद्देश्य से माह फरवरी, 1995 में इलाहाबाद, प्रतापगढ़ तथा फतेहपुर जनपदों के प्रत्युप विद्यालय निरीक्षकों को इस प्रशिक्षण कार्यशाला में आमंत्रित किया गया तथा उन्हें सबके लिए शिक्षा की अवधारणा एवं स्वरूप से अवगत कराया गया।

शोध/अध्ययन/सर्वेक्षण

शीर्षक– प्राथमिक विद्यालयों में बालिकाओं के नामांकन, धारण तथा सम्प्राप्ति पर अध्यापिकाओं की उपलब्धता का प्रभाव।

उद्देश्य–1 प्राथमिक विद्यालयों में बालिकाओं के नामांकन पर अध्यापिकाओं की उपलब्धता के प्रभाव पर पता लगाना।

2. बालिकाओं के धारण पर अध्यापिकाओं की उपलब्धता की प्रभावकारिता का पता लगाना।

3. बालिकाओं की शैक्षिक सम्प्राप्ति पर अध्यापिकाओं की उपस्थिति के प्रभाव का आकलन करना।

शोध अध्ययन हेतु इलाहाबाद जनपद के बहादुरपुर विकास खण्ड के 20 प्राथमिक विद्यालयों का चयन किया गया। इस शोध की अवधि अप्रैल,94 से मार्च, 95 तक रही जिसके अंतर्गत कार्य सम्पन्न किया गया।

निष्कर्ष– विभिन्न विद्यालयों के प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण और निवर्चन से इस परिकल्पना की पुष्टि का कोई आधार नहीं मिलता कि जिन प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापिकाएं नियुक्त हैं, उनमें बालिकाओं का नामांकन, उनका धारण तथा सम्प्राप्ति उन विद्यालयों की अपेक्षा बेहतर होती है जहां अध्यापिकाएं उपलब्ध नहीं हैं।

सुझाव– उपर्युक्त विषयक अपेक्षित सुधार हेतु निम्नवत सुझाव प्राप्त हुए हैं :–

1. अभिभावकों से सम्पर्क।

2. बालिका शिक्षा के महत्व से जन सामान्य को परिचित कराना।

3. जनसंख्या पर रोक, जिससे छोटे बच्चों के पालन पोषण में बालिकाओं की मदद की जरूरत न हो।

4 विद्यालय में कढ़ाई–बुनाई और गृह शिल्प की शिक्षा की व्यवस्था करना।

5. बालिकाओं को छात्रवृत्ति प्रदाना करना।

6. चलचित्र के माध्यम से रूढ़िवादिता समाप्त करना।

7. प्रत्येक विद्यालय में सुयोग्य अध्यापिकाओं की नियुक्ति।

शीर्षक– विद्यालय छोड़ देने तथा पढ़ाई न प्रारम्भ करने से संबंधित समस्या का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

उद्देश्य– प्रस्तुत शोध अध्ययन करके इस बात का पता लगाया गया कि शिक्षा के सार्वजनीकरण हेतु युद्ध स्तर पर प्रयास किये जाने के बावजूद भी बेसिक विद्यालयों में कम नामांकन, न्यून उपस्थिति तथा शाला त्यागियों की समस्या निरंतर क्यों बनी हुई है। विद्यालय न जाने वाले बच्चे बालक और बालिकाएं दोनों हैं। समुदाय के विद्यालय न जाने वाले कुछ बच्चे ऐसे हैं जो बीच में ही विद्यालय छोड़ देते हैं और कुछ बच्चे ऐसे हैं जिनका नामांकन ही नहीं होता। ऐसे बच्चों की संख्या प्राथमिक स्तर पर बहुत अधिक होती है। यह एक राष्ट्रीय समस्या है। इस समस्या के कारणों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करके उनके निवारणार्थ उपयोगी सुझाव प्रस्तुत करना इस शोध का मुख्य उद्देश्य है।

निष्कर्ष एवं सुझाव

यह शोध अध्ययन मिर्जापुर जनपद के नगर विकास खण्ड में किया गया। इसमें कुल 11 बेसिक विद्यालय तथा उनके सेवित क्षेत्र सम्मिलित किए गए। पूरित प्रपत्रों के विश्लेषणोंपरान्त निष्कर्ष के रूप में संतोषप्रद परिणाम प्राप्त हुए। सम्मिलित विद्यालयों के सेवित क्षेत्र के प्रवेश हेतु निर्धारित आयु वर्ग के बच्चों का कुल नामांकन 84 प्रतिशत हुआ है। शाल त्यागियों की संख्या केवल 3 प्रतिशत ही रही। अभिभावक भी शिक्षा के प्रति अपेक्षाकृत अधिक जागरूक हैं।

ऐसा प्रतीता होता है कि क्षेत्र सघन शिक्षा परियोजना का यहां की शिक्षा पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। उक्त योजना इस क्षेत्र में गत दो वर्षो से क्रियान्वित की गई है। यदि इस योजना का विस्तार सम्पूर्ण जनपद में प्रभावी ढंग से किया जाय तो वहां की शिक्षा की स्थिति को और भी सम्मुनत किया जा सकेगा। इसके साथ ही पूर्व प्राथमिक शिक्षा परियोजना तथा विद्यालयोन्मुखी परियोजनाओं का क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जा सके तो इस समस्या का समाधान आसानी से किया जा सकेगा और शिक्षा के सार्वजनीकरण के लक्ष्य को निश्चित रूप से प्राप्त किया जा सकेगा।

शीर्षक : प्रदेश के परिषदीय प्राथमिक विद्यालय तथा उच्च प्राथमिक विद्यालयों में प्रवेश हेतु निर्धारित आयु वर्ग के उपलब्ध बच्चों के सापेक्ष नामांकन की स्थिति।

आवश्यकता : शिक्षा के सार्वजनीकरण के परिप्रेक्ष्य में यह ज्ञात करने की आवश्यकता अनुभव की गई कि निर्धारित आयु वर्ग के उपलब्ध बच्चों में कितने बच्चे परिषदीय प्राथमिक तथा उच्च प्राथमिक

विद्यालयों में नामांकित हैं।

उद्देश्य:1. प्रदेश के परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों के सेवित क्षेत्र के निर्धारित आयु वर्ग के उपलब्ध बच्चों की जानकारी कराना।

2. यह ज्ञात करना कि उस सेवित क्षेत्र के निर्धारित आयु वर्ग के उपलब्ध बच्चों में से कितने बच्चों ने परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों में प्रवेश लिया तथा कितने बच्चों ने प्रवेश नहीं लिया।

परिसीमन : यह अध्ययन गोरखरपुर जनपद के भरहर ब्लॉक के 15 परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों तक सीमित है।

निष्कर्ष :1. प्रदत्त विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि चयनित विद्यालयों के सेवित क्षेत्रों में पढ़ने वाले बच्चों में से 47 प्रतिशत बच्चे स्कूलो में नामांकित हैं। इनमें से 71 प्रतिशत बालक और 29 प्रतिशत बालिकाएं हैं।

2. परिषदीय प्राथमिक विद्यालयें में नामांकित 92 प्रतिशत छात्रों में 71 प्रतिशत बालक तथा 29 प्रतिशत बालिकायें नामांकित हैं।

3. मान्यता प्राप्त प्राथमिक विद्यालयों में कुल नामांकित बच्चों में 5 प्रतिशत बच्चे शिक्षा प्राप्त करते हैं। जिनमें 81 प्रतिशत बालक तथा 19 प्रतिशत बालिकाएं हैं।

4. अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में नामांकित बच्चों में 3 प्रतिशत बच्चे इन केन्द्रों में शिक्षा प्राप्त करते हैं।

5. चयनित विद्यालयों के सेवित क्षेत्रों में संस्कृत पाठशाला/अरबी मदरसा या अन्य किसी प्रकार के विद्यालय प्राप्त नहीं हुये हैं।

6. पढ़ने योग्य सम्पूर्ण बच्चों में से 43 प्रतिशत परिषदीय स्कूलों में, 2.5 प्रतिशत मान्यता प्राप्त प्राथमिक विद्यालयों में तथा 1.5 प्रतिशत अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में नामांकित हैं।

अस्तु ये निष्कर्ष निकलता है कि प्रवेश हेतु निर्धारित आयु वर्ग के उपलब्ध बच्चों के सापेक्ष नामांकन की स्थिति परिषदीय विद्यालयों में 43 प्रतिशत है।

सुझाव : 1. सेवित विद्यालय क्षेत्रों में विद्यलय जाने योग्य बच्चों की बाल गणना सही ढंग से की जाये।

2. विद्यालय सेवित क्षेत्र के प्रत्येक घर से शिक्षक सम्पर्क स्थापित करते रहें और अभिभावकों को इस बात के लिये प्रेरित करते रहें कि उनके घर में जो बच्चे विद्यालय में प्रवेश लेने की आयु का हो जाये उसे वे अनिवार्य रूप से विद्यालय में प्रवेश दिलायें।

3. स्कूल न जाने वाले बालक/बालिकाओं की सूची उनके पूर्ण विवरण तथा उनके विद्यालय न जाने के कारण सहित तैयार किया जाय और बच्चों को विद्यालय में प्रवेश लेने के लिये शिक्षकों के साथ-साथ संबंधित उच्च अधिकारियों से भी इस कार्य में सहयोग प्राप्त किया जाय।

शीर्षक : अध्यापकों द्वारा प्रयुक्त शिक्षण विधि का मूल्यांकन।

उद्देश्य:1. छात्रों में वर्णों को ध्वनियों को सुनकर शुद्ध, स्पष्ट और उचित रूप से उच्चारण की योग्यता का विकास करना।

2. परिचित तथा अनुभूत विषय पर सरल एवं शुद्ध भाषा में अपने भावों तथा विचारों को दूसरों के सम्मुख व्यक्त करने की क्षमता का विकास करना।

3. वर्णों और मात्राओं को पहचान कर शुद्ध उच्चारण करने की योग्यता का विकास।

4. पढ़ते समय शब्दों, वाक्यांशों तथा वाक्यों के अर्थ को ग्रहण करते हुए पठन क्षमता का विकास।

5. लिखित सामग्री में व्यक्त भावों और विचारों के अनुरूप स्वर के आरोह अवरोह की योग्यता का विकास।

6. लिखित अंश को पढ़कर उसके भावों को स्वयं समझने और दूसरों को समझाने की क्षमता का विकास।

उपर्युक्त शोध अध्ययन हेतु इलाहाबाद नगर के 5 विद्यालय चयनित किये गये। प्रत्येक विद्यालय के कक्षा 1 से 5 तक भाषा पढ़ाने वाले शिक्षकों से सम्पर्क कर पृच्छा प्रपत्रों द्वारा भाषा पढ़ाने की विधियों का मूल्यांकन किया गया। भाषा शिक्षण की विधियों के परीक्षण हेतु छात्रों से वार्तालाप किया गया। छात्रों की दक्षता सम्प्राप्ति को प्रभावित करने वाले कारकों तथा शोध के औचित्य को ज्ञात करने हेतुं भाषा पढ़ाने वाले शिक्षकों से भी पृच्छा प्रपत्र भरवाये गये।

शोध अध्ययन की अवधि अप्रैल, 94 से मार्च, 95 तक रही जिसके अंतर्गत कार्य सम्पन्न किया गया।

निष्कर्ष :

प्रदत्त सूचनाओं के विश्लेषणोपरान्त यह निरूपित किया गया कि कक्षा 1 तथा 2 में सुनने तथा बोलने की क्षमता विकसित नहीं हो पाई है। वे स्वर और व्यंजनों का सही ढंग से उच्चारण नहीं कर पाते हैं। जहां तक लिखने का प्रश्न है कक्षा 1 तथा 2 के छात्रों में लिखने की दक्षता विकसित नहीं हो पाई है। कक्षा 3 में छात्र वर्णों को लिख पाते हैं। कक्षा 3 के छात्रों में भी उच्चारण अर्थात सही ढंग से बोलने की क्षमता का विकास नहीं हो पाया है।

कक्षा 4 में छात्र अटक–अटक कर पाठ पढ़ते हैं। वे लिख लेते हैं किन्तु वर्तनी संबंधी अशुद्धियां अधिक करते हैं।

कक्षा 5 में यह आशा की गई थी कि भाषा सम्बन्धी सभी कौशलों का विकास छात्रों में हो गया होगा किन्तु केवल 5 प्रतिशत ही छात्रों में बोलने, सुनने और लिखने की क्षमता पायी गयी अतएव भाषा शिक्षण के चार कौशल–बोलना, सुनना, पढ़ना और लिखने की दक्षता का विकास केवल 5 प्रतिशत ही हो पाया है।

शिक्षकों ने भाषा शिक्षण में सही विधियों का अनुपालन नहीं किया।

अल्प अध्ययन

विश्व बैंक पोषित सबके लिये शिक्षा परियोजनान्तर्गत इलाहाबाद जनपद के दो विकास खण्डों (सोरांव व चायल) के परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में छात्रों की उपस्थिति, अध्यापक प्रशिक्षण, पाठ्य पुस्तकें तथा न्यूनतम अधिगम स्तर से सम्बंधित अल्प अध्ययन किया गया।

राष्ट्रीयकृत पाठ्य पुस्तक लेखन

शिक्षा के सार्वजनीकरण की दृष्टि से सस्ती एवं उत्कृष्ट पाठ्य–पुस्तकें समान रूप से सर्वत्र सुलभ हो सकें एतदर्थ पूरे प्रदेश में राष्ट्रीयकृत पाठ्य–पुस्तकें प्रचलित की गई। पुस्तक लेखन श्रृंखला के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय चरण में क्रमशः कक्षा 1,3,6,2,4,5 एवं 7 की विभिन्न विषयों पर आधारित पाठ्यक्रमानुसार पुस्तकों की पाण्डुलिपियों का प्रणयन कार्य पूरा किया जा चुका है। यह पुस्तकें मुद्रित होकर विद्यालयों में चल रही हैं।

उक्त के अतिरिक्त राष्ट्रीयकृत पाठ्य–पुस्तक लेखन के अंतर्गत वर्ष 1994 में निम्नलिखित पुस्तकों की नवनिर्मित पाण्डुलिपियों को समीक्षोपरान्त अंतिम रूप दिया गया है :–

1. हमारा इतिहास और नागरिक जीवन, भाग–3, कक्षा–8
2. संस्कृत सुबोध, भाग–3, कक्षा–8
3. कृषि विज्ञान, भाग–2, कक्षा–7
4. हमारा भूमण्डल, भाग–2, कक्षा–7

प्रारम्भिक स्तर की राष्ट्रीयकृत पाठ्य पुस्तकों (उर्दू) का पुनर्लेखन तथा अन्य विषयों की पाठ्य पुस्तकों का उर्दू भाषा में अनुवाद

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के आलोक में सबके लिये शिक्षा हेतु मातृ भाषा–भाषी नागरिकों को राष्ट्र की मुख्य धारा में जोड़ने तथा उर्दू भाषा–भाषी भावी नागरिकों में राष्ट्रीय आकांक्षाओं के अनुरूप योग्यताओं, कौशलों, वांछित अभिवृत्तियों एवं मूल्यों का विकास करने के उद्देश्यों को दृष्टिगत रखकर वर्ष 1994–95 में उर्दू की दो पाठ्य पुस्तकों का पुनर्लेखन कराया गया जो निम्नवत् है :–

1. बेसिक उर्दू रीडर भाग 2, कक्षा 2
2. बेसिक उर्दू रीडर भाग 4, कक्षा 4

इनके अतिरिक्त कक्षा 2 एवं कक्षा 4 की अन्य विषयों की राष्ट्रीयकृत पाठ्य पुस्तकों का उर्दू में अनुवाद कराया गया जो निम्नांकित हैं :–

1. बाल अंकगणित भाग 2, कक्षा 4

2. बाल अंकगणित भाग 4, कक्षा 4

3. विज्ञान आओ करके सीखें भाग 2, कक्षा 4

4. हमारी दुनिया हमारा समाज भाग 2, कक्षा 4

उक्त के अतिरिक्त अनौपचारिक शिक्षा की दो पाठ्य पुस्तकों का भी हिन्दी से उर्दू भाषा में अनुवाद कराया गया जो निम्नवत् हैं :–

1. ज्ञान दीप भाग 1 प्रथम छःमाही

2. ज्ञान दीप भाग 1 द्वितीय छःमाही

सांख्यिकी अनुभाग

उत्तर प्रदेश, अन्य राज्यों व भारत के शैक्षिक आंकड़े संकलित किये गये तथा इन आंकड़ों को सम्पादित कर उत्तर प्रदेश की शिक्षा सांख्यिकी (तुलनात्मक एवं प्रगतिदर्शक) वर्ष 1994 के रूप में प्रकाशित किया गया।

पत्राचार अनुभाग

राज्य शिक्षा संस्थान, उ.प्र., इलाहाबाद की स्थापना काल वर्ष 1966 से अवधि विभिन्न चरणों में यह अनुभाग पत्राधारित प्रणाली के माध्यम से बेसिक विद्यालयों में नियुक्त अप्रशिक्षित अध्यापक/अध्यापिकाओं को द्विवर्षीय बी.टी.सी. का प्रशिक्षण प्रदान कर अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। उक्त के अतिरिक्त 1992–93 में प्रदेश के 63 जनपदों में से कुल 51 जनपदों में सेवारत मृतक आश्रित अप्रशिक्षित अध्यापक/अध्यापिकाओं के लगभग 5000 आवेदन पत्र प्राप्त हो चुके थे जिन्की सम्यक् जांचकर पंजीकरण का कार्य पूरा किया गया कितु शासन स्तर पर अब यह निर्णय लिया गया है कि उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम संबंधित जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थानों एवं राजकीय दीक्षा विद्यालयों के द्वारा संच्चालित होगा। ऐसी स्थिति में निदेशक परिषाद के आदेशानुसार उपर्युक्त सभी आवेदन पत्रों को मण्डलीय सहायक निदेशक (बेसिक) के पास इस आशय से वापस भेज दिया गया कि वे अपने मण्डल के सम्बन्धित जनपदों के बेसिक शिक्षा अधिकारियों को तत्काल आवश्यक कार्यवाही करने के लिए निर्देशित करें।

उपर्युक्त के अतिरिक्त प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत एल.टी./बी.एड. प्रशिक्षित किन्तु बी.टी.सी. अप्रशिक्षित अध्यापकों के अल्पकालिक प्रशिक्षण (20–20 दिन के दो फेरे) हेतु पाठ्यक्रम एवं पाठ्य साहित्य का निर्माण कर उसे मण्डलीय स्तर पर चयनित जिला शिक्षा और प्राशिक्षण संस्थानों को प्रेषित किया गया।

दिनांक 1 व 2 मार्च, 1995 को मण्डलीय स्तर पर चयनित जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थानों के प्राचार्यो/उप प्राचार्यो तथा एक प्रशिक्षण प्रभारी प्रवक्ता हेतु दो दिवसीय गोष्ठी का आयोजन राज्य शिक्षा संस्थान, उ.प्र., इलाहाबाद में किया गया। गोष्ठी में प्रशिक्षण से सम्बन्धित समस्याओं पर विचार–विमर्श किया गया और उन्हें उक्त प्रशिक्षण को प्रभावी बनाने हेतु आवश्यक निर्देश दिये गये।

प्राथमिक विद्यालयों में सेवारत बी.टी.सी. अप्रशिक्षित अध्यापक/अध्यापिकाओं के दो वर्षीय पत्राधारित बी.टी.सी. प्रशिक्षण से सम्बन्धित प्रथम वर्ष हेतु प्रशिक्षण साहित्य तथा निर्देश पत्र सम्बन्धित जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थानों एवं राजकीय दीक्षा विद्यालयों को प्रेषित किया गया।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा परियोजना

पूर्व प्राथमिक शिक्षा के व्यापक महत्व और उसकी आवश्यकता को देखते हुए इस परियोजना का शुभारम्भ प्रदेश में वर्ष 1983 में किया गया। परियोजना के संचालन का दायित्व प्रारम्भिक शिक्षा विभाग (राज्य शिक्षा संस्थान), राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उ.प्र. इलाहाबाद को सौंपा गया। इस कार्य हेतु संस्थान में पूर्व प्राथमिक शिक्षा प्रकोष्ठ का गठन किया गया। परियोजना के प्रयोग हेतु इलाहाबाद के दो विकास खण्ड चायल एवं मूरतगंज का चयन किया गया जहां भवनयुक्त प्राथमिक विद्यालयों में पूर्व प्राथमिक केन्द्र खोले गये और पूर्व प्राथमिक शिक्षिकाओं की नियुक्ति की गई। यूनिसेफ की वित्तीय सहायता तथा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली के शैक्षिक मार्ग दर्शन में परियोजना प्रायोगिक चरण में चलाई गई तथा विद्यालयों के नामांकन, अवधारण क्षमता तथा छात्र–छात्राओं की उपलब्धियों का मूल्यांकन राष्ट्रीय परिषद, यूनिसेफ एवं संस्थान द्वारा किया गया जिससे प्राप्त आंकड़ों ने पूर्व प्राथमिक शिक्षा के अनुकूल प्रभाव को सिद्ध किया।

परियोजना के अंतर्गत सम्बन्धित अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों के आयोजन किये जाते हैं। संदर्भित साहित्य जैसे संदर्शिकाओं, शिशु साहित्य, चार्टों, फोल्डरों, पोस्टरों, कैसेटों आदि का भी विकास इस परियोजना के अंतर्गत निरंतर किया जाता रहा है। वर्ष 1994 में परियोजना के अंतर्गत किये गये प्रमुख कार्य निम्नवत् हैं :–

बैठक/गोष्ठी

राज्य स्तरीय सम्मेलन की तिथि तथा आयोजन स्थल पर विचार विमर्श करने हेतु समन्वय समिति की बैठक दिनांक 28.2.94 को राज्य शिक्षा संस्थान, उ.प्र., इलाहाबाद में निदेशक राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद की अध्यक्षता में हुई, जिसमे प्राचार्य, राज्य शिक्षा संस्थान तथा प्रकोष्ठ के सदस्यों के अतिरिक्त एन.सी.ई.आर.टी., यूनीसेफ तथा साक्षरता निकेतन के प्रतिनिधियों ने प्रतिभागिता की।

समन्वय समिति की द्वितीय बैठक 15.7.94 को राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, लखनऊ में निदेशक, बाल विकास एवं पुष्टाहार की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक में लीड स्कूलों के प्रधानाध्यापकों की बैठक, डायट के संदर्भ व्यक्तियों का प्रशिक्षण तथा मंजूषाओं की मुद्रण संख्या निश्चित करने के बारे में विचार विमर्श किया गया। निदेशक, आई.सी.डी.एस. ने लिंकेज कार्यक्रमों में गति लाने का भी आश्वासन दिया।

कथा मंजूषा तथा गीत मंजूषा की पाण्डुलिपियों के अनुमोदनार्थ तकनीकी समिति की प्रथम बैठक दिनांक 15.7.94 को राज्य शिक्षा संस्थान, उ.प्र., इलाहाबाद में आयोजित की गई। बैठक में संस्थान के सदस्यों के अतिरिक्त फील्ड एडवाइजर एन.सी.ई.आर.टी. इन्चार्ज, उ.प्र. एन.सी.ई.आर.टी. बाल कथाकारों, कवियों तथा

उपनिदेशक, साक्षरता निकेतन ने प्रतिभाग किया तथा पुस्तकों का अनुमोदन किया और कुछ सुझाव दिये जिन्हें क्रियान्वित किया गया।

तकनीकी समिति की द्वितीय बैठक दिनांक 24.10.94 को विषयाधारित वार्तालाप चार्टो तथा उस पर आधारित प्रश्नों की समीक्षा हेतु राज्य शिक्षा संस्थान उ.प्र. इलाहाबाद में आयोजित की गई।

सलाहकार समिति की बैठक दिनांक 24.11.94 को राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद लखनऊ में आयोजित की गई। बैठक में 1994 के कृत कार्यो की समीक्षा तथा आगामी वर्ष (1995) के प्लान आफ एक्शन की रूपरेखा तैयार की गई।

राज्य स्तरीय सम्मेलन

प्रदेश में पूर्व प्राथमिक शिक्षा की वर्तमान स्थिति एवं इसके प्रसार की सम्भावनाओं पर उच्च स्तर पर विचार विमर्श करने हेतु राज्य स्तरीय सम्मेलन का आयोजन दिनांक 5.5.94 से 6.5.94 को गोविन्द वल्लभ पन्त सामाजिक विज्ञान संस्थान, झूंसी, इलाहाबाद में किया गया। सम्मेलन में प्रोफेसर डा. राम सकल पाण्डेय, विभागाध्यक्ष, शिक्षा शास्त्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रोफेसर विनीता कौल, विभागाध्यक्ष पूर्व प्राथमिक शिक्षा एन.सी.ई.आर.टी., श्रीमती मीरा प्रियदर्शी, यूनीसेफ, कु. माया उप्रेती महिला समाज कल्याण परियोजनागत राज्यों के समन्वयकों, राज्य शिक्षा संस्थान के प्राचार्य, प्रकोष्ठ के सदस्यों, क्षेत्र सघन शिक्षा परियोजना से सम्बद्ध सदस्यों तथा अन्य विशिष्ट व्यक्तियों ने प्रतिभागिता की। सम्मेलन में पूर्व प्राथमिक शिक्षा के वर्तमान ढांचे में सुधार लाने तथा प्रसार की रणनीति सम्बन्धी बिन्दु तैयार किये गये।

कार्यशाला

वार्तालाप चार्टो के विषय क्षेत्र तथा विषय बिन्दुओं के निर्धारण हेतु एक चार दिवसीय कार्यशाला दिनांक 5.4.94 से 8.4.94 तक आयोजित की गई।

गीत मंजूषा के सम्पादन हेतु चार दिवसीय कार्यशाला दिनांक 17.5.94 से 20.5.94 तक आयोजित की गई। पुस्तक की पाण्डुलिपि तैयार करने हेतु आयोजित इस कार्यशाला में 10 विशेषज्ञों ने भाग लिया।

कथा मंजूषा के सम्पादन हेतु चार दिवसीय कार्यशाला दिनांक 7.6.94 से 10.6.94 तक आयोजित की गई कार्यशाला में 9 विशेषज्ञों ने प्रतिभागिता की।

वार्तालाप चार्टो को विकसित करने हेतु आठ दिवसीय कार्यशाला दिनांक 22.7.94 से 29.7.94 तक आयोजित की गई। कार्यशाला में 6 कलाकारों तथा चार विशेषज्ञों ने प्रतिभागिता की। विषयाधारित वार्तालाप चार्टो पर आधारित प्रश्न निर्माण करने हेतु दिनांक 17.5.94 से 20.5.94 तक एक कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला में 9 विशेषज्ञों ने प्रतिभागिता की।

आंगनबाड़ी मैनुअल ने सम्पादन हेतु एक छः दिवसीय कार्यशाला दिनांक 17.10.94 से 22.10.94 तक आयोजित की गई। कार्यशाला में 8 विशेषज्ञों ने भाग लेकर पुस्तक की समीक्षा की।

कक्षा एक के पाठों पर आधारित पाठ संकेत तैयार करने हेतु एक आठ दिवसीय कार्यशाला दिनांक 15.11.94 से 22.11.94 तक आयोजित की गई जिसमें 24 विशेषज्ञों तथा लेखकों ने प्रतिभागिता की।

प्रकाशन

वर्ष 1994 में निम्नलिखित पुस्तकों का मुद्रण किया गया :–

1. वर्ष 1983 से 1990 तक की परियोजना की आख्या
2. खेल मंजूषा
3. गीत मंजूषा
4. कथा मंजूषा

अन्य संस्थाओं से सहयोग

1. एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली द्वारा दिनांक 30 मई से 3 जून, 1994 तक आयोजित कार्यशाला में श्रीमती सुषमा सिंह ने प्रतिभागिता की। कार्यशाला में किट का चुनाव तथा संदर्शिका तैयार की गई।
2. सेन्टर फार वोमेन्स डेवलपमेन्ट स्टडीज, नई दिल्ली, द्वारा दिनांक 10.11.94 से 11.11.94 तक आयोजित कार्यशाल में श्रीमती सुषमा सिंह ने प्रतिभागिता की।

क्षेत्र सघन शिक्षा परियोजना

क्षेत्र सघन शिक्षा परियोजना यूनीसेफ की वित्तीय सहायता से, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद के निर्देशन में, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उ.प्र. के संरक्षण में प्राथमिक शिक्षा विभाग (राज्य शिक्षा संस्थान), उ.प्र., इलाहाबाद द्वारा मीरजापुर जनपद के सिटी और छानबे विकास खण्डों के क्रमशः 103 व 114 गांवों में माह अप्रैल वर्ष 1992 से संचालित की जा रही है। यह परियोजना प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रभावी उपायों को ढूंढ़ने का एक प्रयास है। इसमें शिक्षा को समुदाय के सामाजिक–आर्थिक विकास से जोड़ने, समुदाय के सभी वय वर्गो की न्यूनतम आवश्यकताओं की पूरा करने और विकासात्मक कार्यक्रमों में समुदाय को अधिक से अधिक सहभागी बनाकर सबके लिए शिक्षा के संकल्प को पूरा करने के उपायों का परीक्षण किया जायेगा। चयनित क्षेत्रों में विकासात्मक कार्यक्रमों के मानवीय और भौतिक संसाधनों को धनीभूत करना भी इस परियोजना की एक प्रमुख विशेषता है।

उद्देश्य

सबके लिये शिक्षा के व्यापक लक्ष्य की प्राप्ति हेतु परियोजना के प्रमुख उद्देश्य निम्नवत् हैं :-

- ❑ समुदाय के जीवन और विकास से सम्बंधित उपायों द्वारा प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के लक्ष्य को प्राप्त करना।
- ❑ पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक और प्रौढ़ शिक्षा की व्यवस्था करना।
- ❑ समुदाय की सहभागिता को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न उपायों का विकास और परीक्षण करना।
- ❑ केन्द्र सरकार, राज्य सरकार, यूनीसेफ के विकासात्मक संसाधनों का सम्मिलन करना।

कार्यनीति

परियोजना के प्रभावी क्रियान्वयन की दृष्टि से पूर्व तैयारी के रूप में विभिन्न स्तरों पर प्रकोष्ठों का गठन किया गया है।

राज्य स्तरीय प्रकोष्ठ

प्रारम्भिक शिक्षा विभाग (राज्य शिक्षा संस्थान) उ.प्र., इलाहाबाद में राज्य स्तरीय प्रकोष्ठ का गठन किया गया है। प्रकोष्ठ में राज्य शिक्षा संस्थान, इलाहाबाद की वर्तमान व्यवस्था से ही दो अकादमिक सदस्य कार्यक्रमों का संचालन कर रहे हैं।

बहुउद्देश्यीय संसाधन केन्द्र

बहुउद्देश्यीय संसाधन केन्द्र का गठन जिला अनौपचारिक शिक्षा अधिकारी की अध्यक्षता में छानबे विकास खण्ड के प्राथमिक विद्यालय विजयपुर में किया गया है। सम्प्रति केन्द्र में निम्नलिखित सदस्य कार्यरत हैं :-

- ❑ अकादमिक सदस्य 4
- ❑ कार्यालय सहायक 1
- ❑ चालक 1
- ❑ परिचारक 1

बहुउद्देश्यीय संसाधन केन्द्र के सदस्यों के मुख्य दायित्व परियोजना स्तर पर योजना निर्माण करना, कार्यकलापों का कार्यान्वयन, अनुश्रवण तथा परियोजना का मूल्यांकन करना है।

यूनीसेफ द्वारा आपूर्ति जीप, मोटर साइकिल अन्य उपकरण एवं सामग्रियाँ बहुउद्देश्यीय संसाधन केन्द्र को उपलब्ध करा दी गई हैं।

ग्राम शिक्षा एवं विकास केन्द्र

परियोजना क्षेत्र के समस्त 217 ग्राम सभाओं में ग्राम शिक्षा एवं विकास केन्द्रों की स्थापना की गई है। ये केन्द्र ग्राम सभाओं में स्थित प्राथमिक विद्यालयों में ही केन्द्रित हैं। प्राथमिक विद्यालय के अध्यापक अथवा प्रधान अध्यापकों को इन केन्द्रों का समन्वयक बनाया गया है। इनका दायित्व ग्राम स्तर पर क्रियाकलापों का कार्यान्वयन करना है।

समन्वय समितियों का गठन

परियोजना के सफल संचालन, अनुश्रवण एवं मूल्यांकन हेतु राज्य, जनपद, विकास खण्ड एवं ग्राम स्तर पर समन्वय समितियों का गठन किया गया है। इन समितियों के क्रमशः प्रमुख सचिव (शिक्षा), जिला अधिकारी, ब्लाक प्रमुख एवं ग्राम प्रधान अध्यक्ष नामित किए गए हैं।

वर्ष 1994 में सम्पादित मुख्य कार्यक्रम निम्नवत् हैं :–

प्रशिक्षण

1. नियोजन एवं संगठन

परियोजना को गति प्रदान करने हेतु नियोजन एवं संगठन के अंतर्गत निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गए :–

(i) राजकीय महिला जूनयिर ट्रेनिंग कालेज मीरजापुर में दिनांक 21–23 फरवरी, 94 तक एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में बहुउद्देश्यीय संसाधन के सदस्य, प्रति उप विद्यालय निरीक्षक एवं विकास खण्ड कार्यालय के कुल 16 सदस्यों ने प्रतिभाग किया। प्रतिभागियों द्वारा मात्रिक लक्ष्य का निर्धारण किया गया।

(ii) परियोजना क्षेत्र के आठ केन्द्रों में दिनांक 9.5.94 से 13.5.94 तक 343 ग्राम स्तरीय समन्वयकों एवं ग्राम प्रधानों की बैठकों का आयोजन किया गया। बैठक में सूक्ष्म नियोजन में प्रस्तावित क्रियाकलापों के कार्यान्वयन की समीक्षा एवं उसमें संशोधन हेतु आवश्यक विचार विमर्श किया गया।

(iii) क्षेत्र के 100 विद्यालयों में संचालित विद्यालयोन्मुखी शिक्षण प्रशिक्षण के प्रभावात्मकता का अध्ययन हेतु 170 प्रधान अध्यापकों एवं कक्षा एक को पढ़ाने वाले शिक्षकों की बैठकों का आयोजन उच्च प्राथमिक विद्यालय एवं प्राथमिक विद्यालय विजयपुर में क्रमशः 31.1.94 व 4.2.94 तिथियों में किया गया। इनमें विद्यालयोन्मुखी शिक्षण कार्यक्रम की प्रभावात्मकता के संबंध में प्रतिक्रियाएं प्राप्त की गई।

2. वैयक्तिक विकास

परियोजना के अंतर्गत कार्यकलापों के सफल संचालन हेतु वैयक्तिक विकास के अंतर्गत निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये :–

(i) परियोजना क्षेत्रों की महिलाओं को स्वावलम्बी बनाने के लिए दिनांक 1 से 3 फरवरी, 94 को बहुउद्देश्यीय संसाधन केन्द्र में 35 महिलाओं एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय अमोई में 37 महिलाओं का हस्त शिल्प से सम्बन्धित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

(ii) शिक्षा में गुणात्मक उन्नयन हेतु 63 प्रतिभागियों का राजकीय महिला जूनियर ट्रेनिंग कालेज, मीरजापुर में दिनांक 13.6.94 से 15.6.94 तक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में 19 केन्द्रीय विद्यालय के 57 शिक्षक चयनित दोनों विकास खण्डों के प्रत्युपविद्यालय निरीक्षक एवं बहुउद्देश्यीय संसाधन केन्द्र के सदस्यों ने प्रतिभाग किया।

(iii) अभिलेखों एवं आंकड़ों को व्यवस्थित ढंग से रख–रखाव हेतु चार केन्द्रों पर 3 से 7 मई, 94 तक 101 प्रधान अध्यापकों को प्रशिक्षित किया गया।

(iv) प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों का आधारभूत प्रशिक्षण शिक्षा में गुणात्मक उन्नयन हेतु प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों का प्रस्ताव यूनीसेफ लखनऊ के परामर्श से विकसित किया गया। अध्यापकों का प्रशिक्षण कार्य संकुलों को सौपने को नीति के अनुसार कक्षा एक के अध्यापकों का प्रशिक्षण सितम्बर–अक्टूबर, 94 में सत्रह संकुल केन्द्रों पर किया गया। कुल 183 अध्यापकों को प्रशिक्षित किया गया।

कक्षा एक के अध्यापकों का प्रशिक्षण से पूर्व संकुल के केन्द्रीय विद्यालय के भाषा, गणित, सामाजिक विषय/सामाजिक विज्ञान के अध्यापकों का प्रशिक्षण आयोजित किया गया।

(v) अनौपचारिक शिक्षा के अनुदेशकों का प्रशिक्षण : परियोजना से आच्छादित दोनों विकास खण्डों में से एक–छानबे में अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र चल रहे हैं। अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के समन्वयकों का प्रशिक्षण प्रा.वि.नीवी में 22 से 24 सितम्बर, 94 और प्रा.पा. विहंसड़ा में 26 से 28 सितम्बर, 94 तक आयोजित किया गा। कुल 105 अनुदेशकों और पर्यवेक्षकों को प्रशिक्षित किया गया। प्रशिक्षण में शिक्षण अधिगम संबंधी कठिनाइयों पर चर्चा और शिक्षण अभ्यास कार्य पर विशेष बल दिया गया।

(vi) आनन्ददायी शिक्षण प्रशिक्षण : जनपद मीरजापुर यूनीसेफ द्वारा सबके लिए शिक्षा कार्यक्रम के लिए चुना गया है। इस कार्यक्रम को प्राथमिक शिक्षक संघ उ.प्र. द्वारा संचालित किया जा रहा है। कक्षा एक में शिक्षण अधिगम को बाल केन्द्रित व क्रिया आधारित बनाकर शिक्षण अधिगम को आनन्ददायी बनाने की योजना है। कक्षा एक के अध्यापकों के प्रशिक्षण हेतु जनपद स्तर पर मास्टर ट्रेनर्स का

प्रशिक्षण दिया गया। दोनों विकास खण्डों के चार–चार संकुल केन्द्रों पर प्राथमिक शिक्षक संघ उ. प्र. के तत्वाधान में आनन्दमयी शिक्षण हेतु अध्यापकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यशाला

सामग्री विकास

परियोजना अभिकर्मियों के उचित दिशा निर्देशन हेतु तथा ग्रामीण नागरिकों में चेतना जागृत करने तथा परिवेश सृजन हेतु सामग्रियों के विकास हेतु निम्नलिखित कार्यशालाओं का आयोजन किया गया :–

(i) शिक्षा में गुणात्मक उन्नयन हेतु अध्यापकों की आवश्यकतापरक बिन्दुओं पर आधारित प्रशिक्षण पैकेज का विकास करके अंतिम रूप दिया गया। कार्यक्रम दो चरणों 23 से 26 मई, 94 तथा 1 से 3 जून, 94 की तिथियों में आयोजित किया गया।

(ii) परियोजना क्षेत्र के प्राथमिक बच्चों को स्थानीय तथ्यों का बोध कराने हेतु दिनांक 26 से 29 अप्रैल, 94 तक राजकीय महिला जूनियर ट्रेनिंग कालेज मीरजापुर में स्थानीय विशिष्टता आधरित बिन्दुओं के विकास हेतु कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में 12 विशेषज्ञों ने लेखन कार्य किया।

(iii) सामाजिक चेतना और वातावरण सृजन हेतु रणनीति निर्धारण के लिए कार्यशाला–

शिक्षा विशेषकर बालिकाओं की शिक्षा की आवश्यकता के प्रति चेतना विकास और उपयुक्त वातावरण सृजन हेतु रणनीति निर्धारित करने के लिए अध्यापकों, निरीक्षकों, गैर सरकारी अभिकरणों के प्रतिनिधियों और ग्राम प्रधानों की दो दिवसीय बैठक का आयोजन किया गया और बैठक में 14 प्रतिभागियों ने भाग लिया। बैठक में समुदाय में शिक्षा विशेषकर बालिकाओं की शिक्षा के प्रति चेतना विकसित करने के लिए सुझाव दिये गये।

चेतना विकास

शिक्षा विशेषकर बालिकाओं की शिक्षा, नामांकन, नियमित उपस्थिति, प्राथमिक स्तरीय शिक्षा पूरी करने आदि के प्रति चेतना विकसित करने के लिए दोनों विकास खण्डों के 33 केन्द्रों पर चेतना अभियान कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें 6–11 वय वर्ग के बच्चों की खेल–कूद प्रतियोगिता, बैठक, सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। खेल–कूद प्रतियोगिता में सफल प्रतिभागियों को पुरस्कार भी दिये गये। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में विकास खण्ड जमालपुर से आये कलाकारों का प्रदर्शन विशेषरूप से सराहा गया।

बैठकें

परियोजना के अंतर्गत कार्यान्वित कार्यक्रमों का वीक्षण, अनुश्रवण एवं मूल्यांकन हेतु निम्नलिखित कार्यक्रमों का आयोजन किया गया :–

(i) परियोजना क्षेत्र के समस्त गांवों में प्रत्येक माह की 24,25,26 व 27 तारीखों में से एक दिन ग्राम स्तरीय समन्वय समिति की बैठकों का आयोजन किया गया।

(ii) विकास खण्ड स्तर पर परियोजना की क्रियाकलापों की समीक्षा एवं भावी रणनीति के निर्धारण हेतु दिनांक 27 व 28 मई, 94 तथा 29, 30 नवम्बर, 94 को नगर एवं छानबे विकास खण्डों की समन्वय समितियों की बैठकों का आयोजन किया गया।

(iii) समय–समय पर परियोजना की समीक्षा हेतु राज्य शिक्षा संस्थान, मीरजापुर, लखनऊ में आठ लघु बैठकों का आयोजन किया गया। 16 संकुल केन्द्रों पर भी संकुलों को गतिशील बनाने के लिए बैठकों का आयोजन किया गया।

प्रकाशन

(i) फोल्डर

- ❑ बालिकाओं की शिक्षा जरूरी क्यों ?
- ❑ सबके लिए शिक्षा एवं शिक्षा के लिए हम सब
- ❑ प्राचार्य की ओर से अभिकर्मियों से अपील
- ❑ जिलाधिकारी मीरजापुर की ओर से अपील

(ii) पोस्टर

- ❑ यही उमर से कौन कमाई, अबही लरिका करैं पढ़ाई।
- ❑ चिट्ठी कोई और लिखेगा, घर का सारा भेद खुलेगा।

(iii) पुस्तकें

- ❑ विभिन्न विषयों से संबंधित कठिन सम्बोधों पर आधारित शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण पैकेज
- ❑ प्रेरणा
- ❑ परियोजना अभिकर्मियों के लिए प्रशिक्षण पैकेज।

बाराबंकी बालिका शिक्षा योजना

यूनीसेफ सहायता प्राप्त बालिका शिक्षा योजना बाराबंकी जनपद में संचालित है। यह योजना पशु शवोच्छेदन औद्योगिक उत्पादन सहकारी समिति बाराबंकी की देख–रेख में 50 शिक्षा केन्द्रों में चलाई जा रही है। इसका उद्देश्य 6 से 14 वय वर्ग की बालिकाओं को 2 वर्ष में कक्षा 5 तक की सम्पूर्ण दक्षताओं को प्राप्त कराना है। इसके अंतर्गत शैक्षिक कार्यक्रम चार सत्रों में विभाजित है। चारों सत्रों का पाठ्यक्रम, पाठ्य सामग्री, प्रशिक्षण मंजूषा तथा शिक्षक दिग्दर्शिका प्रारम्भिक शिक्षा विभाग द्वारा निर्मित की गई है। शिक्षा केन्द्रों के अनुदेशकों को प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया है।

प्रकाशन

वर्ष 1994 में इस परियोजना के अंतर्गत निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित कर क्षेत्र में भेज दी गई हैं:–

1. ज्ञान ज्योति भाग–3
2. ज्ञान ज्योति भाग–4
3. ज्ञान विज्ञान भाग–3
4. ज्ञान विज्ञान भाग–4
5. शिक्षण दिग्दर्शिका
6. पाठ्यक्रम

जनसंख्या शिक्षा कार्यक्रम

राज्य जनसंख्या शिक्षा प्रकोष्ठ अपने जीवन का एक दशक पूरा कर चुका है। इसकी स्थापना जुलाई, 1981 में प्रारम्भिक शिक्षा विभाग (राज्य शिक्षा संस्थान), राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् उ.प्र., इलाहाबाद के अंतर्गत एक प्रकोष्ठ के रूप में की गई थी। प्रकोष्ठ द्वारा अब तक शिक्षा के औपचारिक तथा अनौपचारिक क्षेत्रों की पाठ्य पुस्तकों का संशोधन एवं संवर्धन, सभी स्तरों के लिये स्वाधिगम सामग्रियों का प्रणयन, सह पाठ्येतर क्रियाकलपों का आयोजन तथा कार्यक्रम की प्रभावकारिता की जांच हेतु शोध अध्ययनों का सम्पादन किया गया है। कृत कार्यो की संक्षिप्त आख्या निम्नवत है :–

कार्यशाला/विचार गोष्ठी

(i) अनौपचारिक शिक्षा क्षेत्र हेतु जनसंख्या शिक्षा के सम्बोधों पर आधारित चित्र कथाओं का विकास

इस पंचदिवसीय (22.6.94 से 26.6.94) कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य अनौपचारिक शिक्षा क्षेत्र के बालक–बालिकाओं के लिये जनसंख्या शिक्षा विषयक चित्र कथाओं का विकास करना था।

कार्यशाला में 5 लेखकों एवं 4 विशेषज्ञों ने प्रतिभाग कर रोचक तथा मर्मस्पर्शी चित्र कथाओं का विकास किया।

(ii) उक्त कार्यशाला में विकास चित्र कथाओं की पाण्डुलिपियों की समीक्षा हेतु एक चतुर्दिवसीय (27.7.94 से 30.7.94) कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में 04 समीक्षकों ने प्रतिभाग कर विकसित पाण्डुलिपियों को अंतिम रूप प्रदान किया।

(iii) **अनौपचारिक शिक्षा क्षेत्र हेतु उभरती चिंताओं पर एकांकी नाटकों का विकास**

इस पंचदिवसीय (27.10.94 से 31.10.94) कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य उभरती चिन्ताओं पर एकांकी नाटकों का विकास (अनौपचारिक शिक्षा क्षेत्र हेतु) करना था। कार्यशाला हृदयस्पर्शी और प्रभावकारी नाटकों का विकास करने में सफल रही। इसमें 04 संदर्भ व्यक्तियों तथा 05 लेखकों ने प्रतिभाग किया।

(iv) उक्त कार्यशाला में विकसित नाटकों की समीक्षा हेतु एक चतुर्दिवसीय (30.11.94 से 3.12.94) कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में 04 संदर्भ व्यक्तियों ने प्रतिभाग किया।

(v) राज्य जनसंख्या शिक्षा प्रकोष्ठ के अकादमिक सदस्यों द्वारा जनसंख्या शिक्षा के सम्बोधों पर लोगोज एवं कैलेण्डर के लिये पाण्डुलिपि (अप्रैल–मई, 1994 में) तैयार की गई।

(vi) सी.बी.एस.सी. जनसंख्या शिक्षा पैकेज के अनुवाद की चतुर्दिवसीय (5.12.94 से 8.12.94) कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें 06 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया।

(vii) उक्त कार्यशाला में अनूदित पैकेज की समीक्षा एक चतुर्दिवसीय (13.12.94 से 16.12.94) कार्यशाला में की गई। इस कार्यशाला में 03 समीक्षकों ने भाग लिया।

(viii) जनसंख्या शिक्षा परियोजनान्तर्गत निर्मित एवं वितरित अध्यापकों से सबन्धित सामग्री की प्रभावकारिता के अध्ययन हेतु उपकरण निर्माण हेतु एक कार्यशाला दिनांक 26.8.94 एवं 27.8.94 को आयोजित की गई।

(ix) जनसंख्या शिक्षा परियोजनान्तर्गत प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों तथा अनुदेशकों (अनौपचारिक शिक्षा) हेतु प्रशिक्षण पैकेज के निर्माण हेतु षट्दिवसीय (12.9.94 से 17.9.94) कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें 03 विशेषज्ञों ने प्रतिभाग किया।

(x) उक्त कार्यशाला में विकसित पैकेज की समीक्षा हेतु एक चतुर्दिवसीय (24.11.94 से 27.11.94) कार्यशाला का आयोजन किया गया।

(xi) जनसंख्या शिक्षा परियोजनान्तर्गत विकसित एवं वितरित सामग्री की प्रभावकारिता की शोध आख्या लेखन कार्यशाला दिनांक 20.11.94 से 23.12.94 (चतुर्दिवसीय) तक आयोजित की गई।

(xii) दिनांक 8.4.94 से 9.4.94 को हुयी बैठक में जनसंख्या शिक्षा कार्यक्रम के आयोजन के संबंध में उत्तर प्रदेश प्रभारी प्रो.ओ.पी. मलिक से विचार विमर्श हुआ।

प्रशिक्षण–सेवारत प्रशिक्षण कार्यक्रम का अनुश्रवण

(i) जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थानों के प्राचार्यों के साथ अध्यापकों के सेवारत प्रशिक्षण कार्यक्रम का अनुश्रवण दिनांक 25 अगस्त, 1994 को रा.शै.प. के सभागार (निशातगंज, लखनऊ) में हुआ।

(ii) 5000 प्राथमिक, उच्च प्राथमिक और अनौपचारिक शिक्षा क्षेत्र के अनुदेशकों का प्रशिक्षण

उक्त प्रशिक्षण हेतु प्रशिक्षण पैकेज का विकास करके मुद्रित करा दिया गया है। प्रशिक्षण कार्य आगामी सत्र में प्रारम्भ होगा।

मूल्यांकन / शोध

जनसंख्या शिक्षा की पुस्तकों की प्रभावकारिता का अध्ययन

इस वर्ष जनसंख्या शिक्षा परियोजनान्तर्गत अध्यापकों के लिए निर्मित एवं वितरित सामग्री की प्रभावकारिता के अध्ययन हेतु यह शोध किया गया। शोध का मुख्य उद्देश्य पुस्तकों की प्रभावकारिता का अध्ययन करना था। अध्ययन की फलश्रुति उत्साहवर्धक सिद्ध हुई तथा इससे यह स्पष्ट हो गया कि जनसंख्या शिक्षा प्रभावकारी हो रही है।

प्रकाशन

(i) अनौपचारिक शिक्षा क्षेत्र हेतु चित्र कथायें विकसित की गई।

(ii) उभरती चिन्ताओं पर एकांकी नाटकों का विकास अनौपचारिक शिक्षा क्षेत्र हेतु किया गया।

(iii) लोगोज एवं कैलेण्डर का निर्माण राज्य जनसंख्या शिक्षा प्रकोष्ठ ने किया।

(iv) सी.बी.एस.सी. जनसंख्या शिक्षा पैकेज का अनुवाद।

पाठ सहगामी क्रियाकलाप

(i) 11 जुलाई, 1994 को राज्य शिक्षा संस्थान, उ.प्र., इलाहाबाद में विश्व जनसंख्या दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर रैली और सभाओं में "बढ़ती हुई जनसंख्या और घटती सुविधायें" विषय पर प्रकाश डाला गया तथा जनसामान्य को जनसंख्या से होने वाले खतरों से परिचित कराया गया। आयोजन के मुख्य अतिथि परियोजना के मानद निदेशक डा. मत्स्येन्द्र नाथ शुक्ल थे।

(ii) प्रदेश के 13 क्षेत्रतीय मुख्यालयों पर जुलाई–अगस्त, 1994 में जनसंख्या शिक्षा सप्ताह आयोजित किया गया। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य जनसंख्या शिक्षा के सन्देशों को जनसाधारण तक संप्रेषित करना था।

LIBRARY & DOCUMENTATION CENTRE
National Institute of Educational
Planning and Administration.
17-B, Sri Aurobindo Marg,
New Delhi-110016
DOC, No .....
Date .....

(iii) माघ मेला के दौरान प्रयाग में प्रदर्शनी तथा कठपुतली का आयोजन किया गया ताकि अधिकाधिक लोगों तक जनसंख्या शिक्षा का संदेश पहुंच सके।

केन्द्र पुरोनिधारित योजना–

विद्यालयीय शिक्षा में पर्यावरणीय शिक्षा का समायोजन

योजना क्रियान्वयन का क्षेत्र–झाँसी मण्डल–झाँसी, बाँदा, हमीरपुर, ललितपुर तथा जालौन

मनुष्य के अस्तित्व और विकास की कहानी पर्यावरण के साथ उसके अन्तः क्रिया की कहानी है। मनुष्य ही नहीं वरन् समग्र जीव जगत और वनस्पति जगत अपने अस्तित्व के लिए आवश्यक वायु, जल, प्रकाश, भोजन अपने पर्यावरण से ही प्राप्त करता है। भौतिक सुख सुविधाएं और विलासिता के अन्य उपादान पर्यावरण के विविध घटकों की देन है। पर्यावरण, जो समस्त जीव जगत का मूलाधार है, उसका विनाश हो रहा है। वायु, जल, मृदा एवं ध्वनि प्रदूषण मुनष्य के लिए भयावह संकट बन चुके हैं।

पर्यावरण के विनाश से आज विश्व के सभी वैज्ञानिक एवं शिक्षाविद् चिन्तित हैं। यदि पर्यावरण के विनाश पर अंकुश न रखा गया तो पृथ्वी पर जीवन असम्भव हो जायगा। अतएव प्राकृतिक पर्यावरण के विकास, संरक्षण एवं अनुरक्षण के लिए बहुमुखी प्रयास अपेक्षित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में पर्यावरणीय शिक्षा को देखते हुए यह विचार व्यक्त किया गया कि–

पर्यावरण के प्रति चेतना विकसित करने की परम आवश्यकता है। यह बच्चों से प्रारम्भ होकर सभी वय वर्गो में होना चाहिए। पर्यावरणीय चेतना विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के शिक्षण का अंग बने इस पक्ष को समस्त शैक्षिक प्रक्रिया में एकीकृत किया जाय।

• पर्यावरणीय शिक्षा के महत्व एवं उपादेयता को देखते हुए प्रदेश के झाँसी मण्डल के पाँचों जनपदों में यह योजना माह जून, 1994 से प्रारम्भ की गई है। इस योजनान्तर्गत झाँसी मण्डल के पाँच जनपदों– झाँसी, बाँदा, हमीरपुर, ललितपुर तथा जालौन के प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों को सम्मिलित किया गया है। इस योजना के कार्यक्रम को तीन अभिकरणों द्वारा कराया जा रहा है। इसके अंतर्गत निम्नांकित कार्य किये गये हैं:–

(क) राज्य शिक्षा संस्थान, उ.प्र. इलाहाबाद द्वारा कृत कार्य–

1. **प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तरीय पर्यावरणीय शिक्षा पाठ्यक्रम के निर्माण से संबंधित कार्यशाला**–पर्यावरणीय शिक्षा पाठ्यक्रम निर्माण हेतु चार दिवसीय कार्यशाला जून, 94 में आयोजित की गई। इस कार्यशाला में 22 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। इसमें झाँसी मण्डल के डायट के शिक्षक प्रशिक्षकों को भी आमंत्रित किया गया था।

2. **प्राथमिक स्तर हेतु पाठ्य सामग्री लेखन कार्यशाला**– इस कार्यशाला में 15 प्रतिभागी सम्मिलित हुए जिसमें डायट चरखारी–हमीरपुर तथा डायट कर्वी–बाँदा के प्रतिभागी भी सम्मिलित हुए। इस

कार्यशाला में राज्य शिक्षा संस्थान, उ.प्र. इलाहाबाद के विशेषज्ञों के परामर्श एवं सहयोग से पाठ्य सामग्री निर्मित की गई। यह कार्यशाला जून, 94 में आयोजित की गई तथा 5 दिवसों तक संचालित हुई।

3. **प्राथमिक स्तरीय पाठ्य सामग्री के संशोधन हेतु कार्यशाला–** यह कार्यशाला पांच दिवस तक संचालित रही। इस कार्यशाला में 11 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया।

4. **उच्च प्राथमिक स्तरीय पाठ्य सामग्री लेखन कार्यशाला–** इस कार्यशाला में डायट बरुआसागर (झाँसी) तथा डायट (चरखारी) के शिक्षक प्रशिक्षक एवं राज्य शिक्षा संस्थान के विषय विशेषज्ञ, अवकाश प्राप्त अनुभवी शिक्षाविद् सम्मिलित हुए। इस कार्यशाला में कक्षा 6 से 8 तक पाठ्य सामग्री की संरचना की गई। जुलाई, 94 में आयोजित इस छः दिवसीय कार्यशाला में 14 प्रतिभागी सम्मिलित हुए।

5. अगस्त माह में प्राथमिक स्तरीय पर्यावरण की पुस्तकें (कक्षा1–5) तक की समीक्षा शिक्षा विभाग के सेवा निवृत उप निदेशक श्री के.एन. सिंह तथा श्री आदित्य नारायण तिवारी द्वारा कराई गई।

6. उच्च प्राथमिक स्तरीय पाठ्य सामग्री का वाचन एवं पुनरवलोकन सम्बंधी कार्यशाला अगस्त, 1994 में आयोजित की गई। इस कार्यशाला में 14 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया तथा यह कार्यशाला पाँच दिवस तक संचालित की गई।

7. उच्च प्राथमिक तथा प्राथमिक स्तरीय कार्य पुस्तिका निर्माण तथा पाठ्य पुस्तकों में चित्रांकन संबंधी कार्यशाला– यह छः दिवसीय कार्यशाला अगस्त माह में आयोजित हुई तथा इसमें 11 प्रतिभागी सम्मिलित हुए। इस कार्यशाला में कक्षा 1 से 5 तक तथा 6 से 8 तक की कार्य पुस्तिका का निर्माण किया गया। चित्रांकन हेतु 4 कला विशेषज्ञों ने प्रतिभाग किया तथा पाठ्य पुस्तकों हेतु चित्र निर्मित किये।

8. सितम्बर, 94 के प्रथम सप्ताह में कार्य पुस्तिका की समीक्षा कराई गई।

9. सितम्बर, 94 तक लघु पुस्तिका, सामान्य ज्ञान पुस्तिका तथा पोस्टर्स निर्मित किये गये।

यह समस्त सामग्री बच्चों के साथ–साथ जन समुदाय में पर्यावरण चेतना विकसित करने में उपयोगी सिद्ध होगी। पर्यावरणीय शिक्षा संबंधी समस्त पाठ्य सामग्री राज्य शिक्षा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा विकसित कर मुद्रण करायी गयी।

प्रशिक्षण

समस्त पाठ्य सामग्री एवं प्रशिक्षण सामग्री की झाँसी मण्डल के पाँचों जनपदों के जिला शिक्षा और प्राशिक्षण संस्थानों को उपलब्ध करायी गयी, जिससे झाँसी मण्डल के प्राथमिक एवं अपर प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जा सके और डायट के माध्यम से पर्यावरणीय शिक्षा कार्यक्रम को सफल बनाया जा

सके। इस हेतु झाँसी मण्डल के डायट के 4–4 शिक्षक–प्रशिक्षकों को की–पर्सन्स का प्रशिक्षण राज्य शिक्षा संस्थान, इलाहाबाद द्वारा दिया गया।

प्रकाशन

1. पर्यावरणीय शिक्षा पाठ्यक्रम (प्राथमिक तथा उच्च प्राथमिक)
2. पर्यावरण प्रभा भाग–1
3. पर्यावरण प्रभा भाग–2
4. पर्यावरण प्रभा भाग–3
5. पर्यावरण प्रभा भाग–4
6. पर्यावरण प्रभा भाग–5
7. पर्यावरण पराग भाग–1
8. पर्यावरण पराग भाग–2
9. पर्यावरण पराग भाग–3
10. कार्य पुस्तिका (प्राथमिक स्तर)
11. कार्य पुस्तिका (उच्च प्राथमिक स्तर)
12. शिक्षक मार्गदर्शिका
13. पर्यावरण प्रतिभा
14. पर्यावरण परिदृश्य

(ख) जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थानों के पर्यावरणीय शिक्षा कार्यक्रम संचालन में दायित्व–

(1) प्रत्येक जनपद के प्राथमिक विद्यालयों के 100 तथा अपर प्राथमिक विद्यालयों के 100 शिक्षकों को पाँच दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया।

(2) समस्त साहित्य को शिक्षकों को वितरित किया गया।

(ग) जिला बेसिक शिक्षा अधिकारियों द्वारा कृत कार्य–

(1) इसी परिप्रेक्ष्य में झाँसी मण्डल के जिला बेसिक शिक्षा अधिकारियों (झाँसी, बाँदा, हमीरपुर, ललितपुर तथा जालौन) को अपने–अपने जनपदों में पौधशाला निर्माण का दायित्व सौंपा गया। उन्हें उन विद्यालयों में पौधशाला बनाने को कहा गया जिनमें कम से कम 0.05 एकड़ भूमि उपलब्ध हो तथा सिंचाई का कोई भी साधन विद्यालय में उपलब्ध हो। यह कार्य प्रत्येक जनपद के प्राथमिक तथा अपर प्राथमिक विद्यालयों में जिला बेसिक शिक्षा अधिकारियों की देख–रेख में सम्पन्न किया गया।

(2) झाँसी मण्डल के प्रत्येक जनपद के जिला बेसिक शिक्षा अधिकारियों को अपने जनपद में पर्यावरणीय जन चेतना अभियान का दायित्व सौंपा गया। प्रत्येक जनपद में दो जन चेतना अभियान आयोजित किये गये। इस कार्यक्रम में शिक्षक, अभिभावक, विद्यालय के छात्र/छात्राएं तथा स्वैच्छिक संस्थाओं के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य समुदाय में पर्यावरण के प्रति चेतना विकसित करना है।

विश्व बैंक वित्त पोषित "उ.प्र. सभी के लिए शिक्षा परियोजना"

विश्व बैंक पोषित "सभी के लिए शिक्षा" परियोजना का मुख्य लक्ष्य वर्ष 2000 तक प्रदेश में प्राथमिक स्तर पर शत–प्रतिशत नामांकन, धारण शैक्षिक उपलब्धि को सुनिश्चित करना है। प्रदेश के 10 जनपदों–इलाहाबाद, वाराणसी, गोरखपुर, सहारनपुर, अलीगढ़, इटावा, पौड़ी, नैनीताल, बाँदा, सीतापुर को सर्वप्रथम इस परियोजना के अंतर्गत आच्छादित किया गया है। लक्ष्य की प्राप्ति में अध्यापकों, शैक्षिक प्रशासकों, ग्राम शिक्षा समितियों, स्वैच्छिक संस्थाओं, संचार माध्यमों तथा विकास और स्वास्थ्य से जुड़े हुए अभिकर्मियों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

शिक्षा व्यवस्था के संचालन में शिक्षक का स्थान निर्विवाद रूप से सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, अतः सर्वप्रथम शिक्षक–शिक्षा हेतु प्रशिक्षण पैकेज विकसित किया गया।.प्रशिक्षण पैकेज को सुविधा हेतु चार खण्डों में विभक्त किया जा सकता है–

(1) सबके लिए शिक्षा–संकल्पना एवं आवश्यकता

(2) शिक्षण अधिगम– उपागम एवं प्रविधि

(3) मूल्यांकन

(4) अग्रणी विद्यालय तथा ग्राम शिक्षा समिति

पैकेज में उपर्युक्त चारों घटकों की विषय वस्तु को समाहित किया गया है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद के शिक्षक–शिक्षा विभाग के प्रोफेसर एम.के.जांगीरा एवं श्रीमती अनुपम अहूजा के निर्देशन में राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद उ.प्र. के विशेषज्ञों द्वारा उक्त प्रशिक्षण पैकेज का निर्माण किया गया।

मास्टर ट्रेनर तथा ब्लाक संसाधन केन्द्रों के संदर्भदाताओं के प्रशिक्षण के समय अनुभव किया गया कि पैकेज में बोधगम्यता, स्पष्टता, लैंगिक समानता आदि की दृष्टि से संशोधन अपेक्षित है।

पैकेज के द्वितीय संस्करण में सम्प्रत्यात्मक तथा कठिन शब्दों का स्पष्टीकरण और माड्यूल्स की अनुक्रमणिका अंत में जोड़ दी गई। उक्त पैकेज में लैंगिक समानता के सम्बन्ध में एक टिप्पणी दे दी गई है कि जहां कहीं भी शिक्षक, छात्र आदि लिंगबोधक सम्बोधन आये हैं उन्हें शिक्षिका और छात्रा भी मानकर पढ़ा जाये। पैकेज में दिए गए चित्रों में इस बात का ध्यान पहले ही रखा गया था। ऐसा करना इसलिए आवश्यक था क्योंकि पैकेज में व्यापक संशोधन करने से मुद्रण हेतु पूर्व विकसित निगेटिव प्लेट को बदलना पड़ता जिससे संसाधन केन्द्रों प्रशिक्षण में पैकेज को समय से उपलब्ध करा पाना सम्भव न हो पाता।

पैकेज के अंत में उन मूल्यांकन प्रपत्रों को जिनकी आवश्यकता प्रशिक्षण अवधि में बार–बार पड़ती है, को परफोरेटेड शीट के रूप में लगा दिया गया।

मार्च, 95 में प्रथम चक्र के 6 जनपदों के ब्लाक संसाधन केन्द्रों पर आयोजित होने वाले प्रशिक्षण समाप्त हो चुके हैं। उनमें यह अनुभव किया गया कि प्रशिक्षण पैकेज की भाषा को और सरल तथा सुबोध बनाना आवश्यक है। अतः प्रशिक्षण पैकेज की भाषा को और सरल तथा सुबोध बनाने की दृष्टि से उसे पुनः संशोधित किया गया है। वस्तुतः पैकेज के बहुत से माड्यूल्स अंग्रेजी से हिन्दी में अनूदित किए गए हैं, जिसके कारण भाषा में सहज प्रवाह का अभाव था। पैकेज के संशोधन के समय उक्त पैकेज की समस्त न्यूनताओं को ध्यान में रखा गया।

समान शैक्षिक उपलब्धि को सुनिश्चित करने के लिए प्राइमरी स्तर पर न्यूनतम अधिगम स्तरों की संकल्पना की गई है। न्यूनतम अधिगम स्तर की संकल्पना में उपलब्धि के संदर्भ में दक्षताओं का प्रमुख स्थान है। दक्षताओं की प्राप्ति को सुनिश्चित करने के लिए यह आवश्यक है कि पाठ्यक्रम को दक्षता आधारित बनाया जाय। यहाँ यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि कक्षा 1 से 5 तक का हमारे प्रदेश में प्रचलित पाठ्यक्रम न्यूनतम अधिगम स्तर की संकल्पना के अनुरूप है। अतः पाठ्यक्रम के आलोक में दक्षताओं की समीक्षा के लिए विशेषज्ञों की कार्यशाला आयोजित करने का प्रस्ताव विचाराधीन है जिसमें कठिन और दुरूह दक्षताओं की कम करने की भी आवश्यकता पड़ सकती है।

उत्तर प्रदेश में प्रचलित प्राइमरी स्तर की पाठ्य पुस्तकें सामान्यतया न्यूनतम अधिगम स्तर के अनुरूप हैं। पाठ्य पुस्तकों में दक्षताओं के विकास के लिए सामान्यतया विषय–वस्तु भी उपलब्ध है, परन्तु विषय–वस्तु का शिक्षण और अधिगम प्रतिफल के मूल्यांकन के संबंध में शिक्षक संदर्शिकाओं एवं कार्य पुस्तिकाओं को विकसित करना आवश्यक है।

हमारे प्रदेश में भौगोलिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से एकरूपता नहीं है। अतः पाठ्यक्रम पाठ्य पुस्तकों, शिक्षक संदर्शिकाओं तथा कार्य–पुस्तिकाओं के विकास में, जिनके निर्माण का प्रस्ताव भी अनुमोदनार्थ उच्च अधिकारियों को प्रेषित किया गया है, स्थानीय विशेषताओं को विशेष रूप से ध्यान में रखने की आवश्यकता है जिससे भाषा और सांस्कृतिक कारणों से छात्रों की दक्षताओं के विकास में किसी प्रकार का अवरोध न हो।

सहकार और सहयोग

माह	कार्यक्रम	कार्यक्रमों के आयोजन का स्थान	आयोजन की तिथि	प्रतिभाग करने वाले अधिकारी का नाम
1	2	3	4	5
मई, 94/जून, 94	आई.सी.डी., के लिए सप्लाई आइटम का चुनाव	एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली	30.5.94 से 3.6.94 तक	1. श्रीमती सुषमा सिंह
जून, 94	अंतराष्ट्रीय सम्मेलन (विशेष शिक्षा) विकलांग बच्चों के लिए शिक्षा	एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली	29.6.94 से 1.7.94 तक	1. श्रीमती निर्मला अग्रवाल 2. श्री रघुराज सिंह
जुलाई, 94	विश्व बैंक "सबके लिए शिक्षा" परियोजनान्तर्गत प्रशिक्षण पैकेज का लेखन	एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली	18 से 22 जुलाई, 94 तक	1. डॉ. मत्स्येन्द्र नाथ शुक्ल 2. श्री गुरु प्रसाद त्रिपाठी 3. श्री मुकुटधारी शुक्ल 4. श्री मोती लाल पाण्डेय
अगस्त, 94	क्षेत्र सघन शिक्षा परियोजनान्तर्गत बालक से बालक तक का प्रशिक्षण कार्यक्रम	एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली	23.8.94 से 26.8.94 तक	1. श्री राज सिंह 2. श्री जवाहर लाल यादव
	पूर्व प्राथमिक शिक्षा परियोजना की अर्द्धवार्षिक समीक्षा	एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली	2.8.94 से 3.8.94 तक	1. श्रीमती सुषमा सिंह
सितम्बर, 94	अर्धवार्षिक समीक्षा बैठक (शै.स.शि.प.)	एन.सी.ई.आर.टी., भुवनेश्वर	6.9.94 से 7.9.94 तक	1. श्री राज सिंह
	क्रिया मंजूषा पर विचार विमर्श (पू.प्रा.शि.परि.)	एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली	21.9.94 से 27.9.94 तक	1. श्रीमती सुषमा सिंह

माह	कार्यक्रम	कार्यक्रमों के आयोजन का स्थान	आयोजन की तिथि	प्रतिभाग करने वाले अधिकारी का नाम
1	2	3	4	5
	मास्टर ट्रेनर्स का प्रशिक्षण	एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली	6 से 30 सितम्बर, 94 तक	1. श्री गुरु प्रसाद त्रिपाठी 2. श्री मुकुटधारी शुक्ल 3. श्री मो. हसीद 4. श्रीमती रजनी वर्मा 5. श्रीमती रिजिस जैदी 6. श्री रघुराज सिंह 7. श्री स्वामी नाथ यादव
नवम्बर, 94	पी.पी.आर.मीटिंग (जनसंख्या शिक्षा परियोजना)	एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली	13.11.94 से 17.11.94 तक	1. श्री गुरु प्रसाद त्रिपाठी 2. श्री नाथू लाल
नवम्बर, 94	वर्ष 1994 के कार्यो की समीक्षा तथा 1995 के लिए कार्य योजना निर्धारण सम्बन्धी बैठक (पू.प्रा.शि.परि.)	एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली	21,22,23 नवम्बर, 94	1. श्रीमती सुषमा सिंह 2. श्रीमती गीता यादव
जनवरी, 95	वार्षिक समीक्षा तथा कार्ययोजना बैठक 1995 (क्षे.स.शि.परि.)	आईजल मिजोरम	10.1.95 से 12.1.95 तक	1. श्री राज सिंह
फरवरी, 95	प्रशिक्षण प्रोग्राम फार स्पेशल एजूकेशन इन डायट विशेष शिक्षा (विकलांग बच्चों के लिए समेकित शिक्षा योजना)	एन.सी.ई.आर.टी.,	13.2.95 से 24.2.95 तक	1. श्रीमती निर्मला अग्रवाल 2. श्री रघुराज सिंह

मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग

संक्षिप्त परिचय :

राजकीय सी.पी.आई. इलाहाबाद, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उ.प्र. ईकाई (विभाग) के रूप में शिक्षा विभाग की एक विशिष्ट संस्था है जो माध्यमिक स्तरीय शिक्षक प्रशिक्षण कार्यों में संलग्न है। इसकी स्थापना मूलतः सन् 1896 में राजकीय प्रशिक्षण महाविद्यालय के रूप में हुई थी। विश्वविद्यालय आयोग 1902 की संस्तुति और 1904 के प्रस्ताव के अनुशीलन में इसका उन्नयन एक उच्चस्तरीय प्रशिक्षण महाविद्यालय के रूप में हुआ। आचार्य नरेन्द्रदेव समिति सन् 1939 की संस्तुति के क्रियान्वयन के परिप्रेक्ष्य में इसे सन् 1948 में राजकीय केन्द्रीय अध्यापन विज्ञान संस्थान का रूप प्रदान किया गया और सन् 1981 में राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उ.प्र. की स्थापना के पश्चात यह संस्थान उसी की एक इकाई के रूप में कार्यरत है। यह शिक्षक–शिक्षा का देश स्तर पर एक ऐतिहासिक केन्द्र है। इसने अनेक ख्यातिलब्ध शिक्षाविदों एवं शिक्षकों को आविर्भूत किया।

परिषद् की इस इकाई में सम्प्रति प्रशिक्षण एवं शैक्षिक शोध के अर्न्तगत निम्नलिखित कार्य सम्पन्न होते हैं:–

1. एल.टी. प्रशिक्षण (सेवापूर्व)
2. पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण
3. सीधी भर्ती द्वारा चयनित (द्वितीय श्रेणी राजपत्रित) शिक्षाधिकारियों के लिए प्रशिक्षण का आयोजन
4. समय–समय पर शासन एवं परिषद् द्वारा अनुमोदित शैक्षिक शोध, शैक्षिक विचार गोष्ठियों, कार्यशाला एवं कार्यगोष्ठियों का आयोजन किया जाता है।
5. अन्य कार्य

1. एल.टी. प्रशिक्षण (सेवापूर्व)

यह एक वर्ष का प्रशिक्षण कार्यक्रम है जो 15 जुलाई से 30 अप्रैल तक संचालित होता है। इसमें प्रवेश की अर्हता स्नातक उपाधि है। लिखित एवं मौखिक परीक्षा के आधार पर वरीयता क्रम से चयनित 80 प्रशिक्षणार्थी राजकीय सी.पी.आई. इलाहाबाद में प्रविष्ट होते हैं।

इस वर्ष (1994-95) के शिक्षा सत्र हेतु चयनित छात्राध्यापकों की मुख्य सूची अक्टूबर, 1994 के प्रथम सप्ताह में प्राप्त हुई दिनांक 10.10.94 से प्रवेश प्रारम्भ हो गया। प्रतीक्षा सूची के आने पर दिनांक 22.12.94 तक

कुल 79 छात्राध्यापकों को प्रविष्ट किया गया। कतिपय कारणों से 07 छात्राध्यापक प्रशिक्षण छोड़कर चले गये। क्रियात्मक कक्षा शिक्षण की अवधि तक (दिनांक 12.03.95 से 14.03.95 तक) कुल 72 छात्राध्यापकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

उपर्युक्त योजनानुसार दिनांक 10.10.94 से छात्राध्यापकों का नियमित प्रशिक्षण प्रारम्भ हुआ। नवम्बर, 94 के प्रथम सप्ताह से सूक्ष्म शिक्षण के दस कौशलों पर आधारित 20 सूक्ष्म पाठों को पूर्ण कराया गया। दिसम्बर, 94 से 28 फरवरी तक मुख्य शिक्षण के दो फेरों में 40 पाठों का शिक्षण कार्य सम्पन्न हुआ। साथ ही योजनानुसार सैद्धान्तिक प्रश्न पत्रों का अध्यापन किया गया। इसके अन्तर्गत सम्पन्न अन्य कार्यों का विवरण निम्नवत् है:-

(क) सामुदायिक शिविर :-

प्रशिक्षण के क्रम में दिनांक 17.02.1995 से 21.02.95 तक श्री लालबहादुर शास्त्री इण्टर कालेज धरवारा इलाहाबाद में एक सामुदायिक शिविर आयोजित हुआ। इस शिविर में श्रमदान कार्य के अन्तर्गत सड़क निर्माण, विद्यालय प्रांगण परिसर की सफाई के अतिरिक्त नित्य प्रभात फेरी, स्काउटिंग कार्य का प्रशिक्षण, खेल, कूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन, कैम्पफायर तथा प्रौढ़ शिक्षा हेतु प्रचार कार्यान्तर्गत नारे लिखवाये और लगवाये गये।

(ख) शैक्षिक भ्रमण :-

शैक्षिक भ्रमण हेतु संस्थान के सात अध्यापकों की देखरेख में 66 छात्राध्यापकों को दिनांक 30.03.95 को वाराणसी भ्रमण हेतु ले जाया गया। वहां उन्हें काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के विश्वनाथ मंदिर, संकट मोचन, मानस मंदिर, दुर्गा मंदिर, डी.एल.डब्लू कारखाना वाराणसी तथा सारनाथ जैसे दर्शनीय स्थल दिखाये गये।

(ग) शिक्षा संसद :-

इस वर्ष शिक्षा संसद में समस्त राष्ट्रीय पर्व, महापुरूषों के जन्मदिवस, संयुक्त राष्ट्र एवं मानवाधिकार दिवस, हिन्दी दिवस आदि का आयोजन किया गया।

14 मार्च, 1995 को शिक्षा संसद का वार्षिक सत्र समापन समारोह सम्पन्न हुआ। इसमें विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री नर्वदा प्रसाद श्रीवास्तव अवकाश प्राप्त प्राचार्य, के. पी.एल.टी. ट्रेनिंग कालेज इलाहाबाद तथा श्रीमती संगीता चक्रवर्ती प्राचार्या, एल.टी.महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय इलाहाबाद उपस्थित रहीं। इस अवसर पर एल.टी. छात्राध्यापकों द्वारा सरस्वती वन्दना के उपरान्त शैक्षिक सामग्रियों की प्रदर्शनी तथा अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न किये गये।

(घ) प्रायोगिक एवं कक्षा शिक्षण :-

एल.टी. की क्रियात्मक कक्षा शिक्षण परीक्षा दिनांक 12.03.95 से दिनांक 14.03.95 तक सम्पन्न हुई। इसमें कुल 72 छात्राध्यापक थे।

मुख्य कक्षा शिक्षण परीक्षा दिनांक 18.04.95 से दिनांक 26.04.95 तक सम्पन्न हुई। इसमें राजकीय सी. पी.आई. इलाहाबाद के 69 छात्राध्यापक सम्मिलित हुए।

2. सीधी भर्ती के अधिकारियों का प्रशिक्षण

वर्ष 1994-95 में शासन द्वारा सीधी भर्ती के अधिकारियों के प्रशिक्षण हेतु कोई सूची प्राप्त नहीं हुई। अतः उक्त प्रशिक्षण नहीं आयोजित हुआ।

3. विकासात्मक अभिनवीकरण प्रशिक्षण

लोक सेवा आयोग से सीधी भर्ती द्वारा चयनित एवं विभागीय पदोन्नति प्राप्त प्रधानाध्यापकों के अपने नूतान दायित्व की दक्षता व कौशल के साथ निर्वाह करने के लिए यह प्रशिक्षण आयोजित किया जाता है। जिसमें विद्यालय प्रशासन के तीन प्रमुख अंगों, अकादमिक, प्रबन्धकीय व वित्तीय पक्षों की सर्वांगीण जानकारी दी जाती है।

यह प्रशिक्षण सत्र 94-95 में दिनांक 06.03.95 से 12.03.95 तक सात दिन में आयोजित कर सम्पन्न किया गया। इसमें विभिन्न मण्डलों से कुल 25 प्रशिक्षणार्थी सम्मिलित हुये।

उक्त प्रशिक्षण में विषय विशेषज्ञ के रूप में शिक्षा विभाग के विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया गया। प्रशिक्षण के अन्तर्गत कुल 21 विषयों पर विशेषज्ञों द्वारा वार्ताएं प्रस्तुत की गयी तथा विचार विमर्श के माध्यम से उनकी समस्याओं का समाधान भी किया गया। प्रशिक्षणार्थियों को उपयोगी साहित्य भी प्रदान किया गया।

4. शैक्षिक शोध/कार्यशालाएं

सत्र 94-95 में निम्नांकित शैक्षिक शोध एवं कार्यशालाएं सम्पन्न हुई :–

(क) शैक्षिक शोध ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के विद्यालयों की शैक्षिक सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययनः–

इस शोध अध्ययन के निम्मलिखित उद्देश्य हैं :–

(1) शहरी तथा ग्रामीण अंचलों में स्थित विद्यालयों में मानवीय संसाधनों की स्थिति का पता लगाना।

(2) शहरी तथा ग्रामीण अंचलों में स्थित विद्यालयों में भौतिक संसाधनों का पता लगाना।

(3) शहरी एवं ग्रामीण अंचलों में स्थित माध्यमिक विद्यालयों में प्राप्त मानवीय, भौतिकीय एवं वित्तीय संसाधनों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

प्रदत्त विश्लेषण के आधार पर यह पाया गया कि शहरी और ग्रामीण दोनों ही अंचलों में स्थित विद्यालयों में मानवीय संसाधन के अन्तर्गत अध्यापकों की संख्या छात्र अनुपात में अपर्याप्त है। दोनों ही अंचलों में स्थित

विद्यालयों में भौतिकी संसाधनों की उपलब्धताओं में पर्याप्त असमानता है इतना ही नहीं शासन द्वारा शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों की वित्तीय सहायता की उपलब्धता में भी असमानता तथा अपर्याप्तता पायी गयी।

सुझाव

छात्रों की बढ़ती हुई संख्या तथा शैक्षिक गुणवत्ता हेतु विविध वर्गों के अध्यापकों के पद पर्याप्त मात्रा में सृजित किये जायं। छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु भौतिकी सुविधाओं से विद्यालयों को सुसज्जित किया जाय। इसके साथ ही वित्तीय सहायता प्रदान करने में भेद–भाव न रखा जाय।

(2) माध्यमिक स्तर पर छात्र/छात्राओं के नैतिक मूल्यों के विकास के परिप्रेक्ष्य में अध्यापकों के योगदान का अध्ययन :–

उद्देश्य : (1) माध्यमिक विद्यालयों में नैतिक क्रियाकलापों की जानकारी प्राप्त करना।

(2) छात्र/छात्राओं के नैतिक विकास में अध्यापकों की भूमिका का पता लगाना।

(3) छात्र/छात्राओं के नैतिक विकास हेतु रचनात्मक सुझाव प्रस्तुत करना।

निष्कर्ष : (1) विद्यालयों में प्रातःकालीन प्रार्थना, छात्र/छात्राओं को पंक्तिबद्ध खड़ा करना, नैतिक उपदेश दिया जाना, कक्षाओं में अध्यापकों का समय से पहुंचना, दायित्वपूर्ण कार्य, पाठ सहगामी क्रियाकलापों का आयोजन, राष्ट्रीय मूल्यों की स्थापना, सदाचार और सद्व्यवहार की प्रेरणा आदि कार्यों की व्यवस्था।

(2) अध्यापक द्वारा समस्त विद्यालयी क्रियाकलापों का सफल संचालन एवं सम्पादन, अध्यापकों का आदर्श आचरण एवं व्यवहार का प्रदर्शन, छात्रों के क्रियाकलापों पर निगरानी रखना, सदाचार की प्रेरणा देना।

(3) अध्यापकों द्वारा मानवीय मूल्यों की शिक्षा पूरी शिक्षा, एवं स्कूल माहौल का अभिन्न अंग बनाना।

सुझाव

(1) भारत की महान परम्पराओं एवं गौरवशाली सांस्कृतिक विरासत की जानकारी कराना।

(2) अध्यापकों द्वारा आदर्श व्यवहार एवं आचरण का छात्र/छात्राओं के समक्ष प्रस्तुत किया जाना।

(3) देश की एकता और अखण्डता को बनाये रखने तथा लोकतांत्रिक मूल्यों में विश्वास उत्पन्न करने का प्रयत्न।

(3) माध्यमिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों का विवेचनात्मक अध्ययन (हाईस्कूल विषय हिन्दी) :–

उद्देश्य : (1) पाठ्यपुस्तकों की गुणवत्ता की जांच करना।

(2) पाठ्यपुस्तकों में आवश्यक विषय सामग्री जोड़ने और अनावश्यक विषय सामग्रियों को विद्यालयों से सम्बन्धित बातों को इंगित करना।

(3) पाठ्यपुस्तकों को छात्रोपयोगी बनाने हेतु सुझाव देना।

निष्कर्ष : (1) विषयाध्यापकों तथा सम्बद्ध छात्र/छात्राओं द्वारा "गद्य संकलन एवं रंग भारती" नामक पाठ्यपुस्तकों के रोचक प्रभावपूर्ण एवं उपयोगी बताया गया है।

(2) उक्त पुस्तकों की विषयवस्तु देश कला तथा परिस्थितियों के अनुकूल प्रेरणादायक एवं व्यवहारिकतापूर्ण निरूपित है।

(3) इन पुस्तकों को छात्र/छात्राओं की आयु योग्यता अभिरूचि आदि के स्तरानुकूल होने तथा अन्य भाषाओं के शब्दों का प्रचुर मात्रा में समावेश होने का अधिसंख्या उल्लेख प्राप्त है।

सुझाव

(1) उक्त पुस्तकों को और अधिक बोधगम्य, सरल, प्रभावपूर्ण, रोचक गुणवत्तापूर्ण और उपयोगी बनाने के लिए मानवीय मूल्यों पर आधारित विभिन्न काव्य रूपों के पाठों को सम्मिलित किया जाना अभीष्ठ होगा।

(2) भाषायी व व्याकरणिक ज्ञान सम्बर्द्धन हेतु विषय वस्तु का संशोधित और विभिक्तपूर्ण होना चाहिये।

(3) समय के परिप्रेक्ष्य में उक्त पुस्तकों के स्थान पर अन्य नवीन पाठ्यपुस्तकों को पाठ्यक्रमानुसार प्रचलन में लाना अभीष्ट होगा।

(ख) कार्यशालाएं

(1.) एल.टी. परीक्षा के अन्तर्गत सत्रीय कार्य के मानकों का निर्धारण

उक्त विषयक त्रिदिवसीय कार्यशाल 4,5,6 अक्टूबर, 1994 को सम्पन्न हुई। इसमें तेरह प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्रतिनिधियों ने सहभाग किय। प्रतिभागियों की संख्या 28 थी। तीन विषय विशेषज्ञों के निर्देशन में कार्य किया गया। इस कार्यशाला का उद्देश्य आन्तरिक मूल्यांकन को अधिक वस्तुनिष्ठ बनाना तथा एकरूपता लाने के साथ–साथ विषयों के अनुरूप स्तरीय बनाना भी था। वर्तमान स्वरूप की समसीक्षा करते हुए प्रतिभागियों ने विचार विमर्श के पश्चात मान्क निर्धारित कर निम्नलिखित संस्तुतियों को प्रस्तुत किया।

1. सत्रीय कार्य को लिखित और क्रियात्मक दो पक्षों में प्रस्तुत किया जाय।
2. सत्रीय कार्य वर्ष भर कराया जाय संभव हो तो 2–2 या 3–3 महीने के पश्चात कृत कार्य में श्रेणी (ग्रेडिंग) प्रदान की जाय और अन्त में अंक प्रदान किये जायं।

(2) कक्षा 9 व 10 के बालकों के सामाजिक विज्ञान विषय के परीक्षाफल में गुणात्मक सुधार लाने के उपायों पर विचार

उद्देश्य : (1) परीक्षाफल को प्रभावित करने वाले कारकों पर विचार।

(2) सामाजिक विज्ञान विषय में छात्रों की न्यून उपलब्धियों के कारणों का पता लगाना।

(3) सामाजिक विज्ञान विषय के परीक्षाफल में गुणात्मक सुधार लाने हेतु उपाय प्रस्तु करना।

निष्कर्ष : (1) पाठ्यक्रम बोझिल है। समय–समय पर पाठ्यक्रम को संशोधित नहीं किया गया।

(2) सभी विषयों में सम्बन्धित योग्य अध्यापकों का अभाव एवं नवीन शिक्षण विधाओं से अध्यापकों का अपरिचित होना।

(3) सहायक सामग्रियों का अभाव एवं समुचित प्रयोग की कमी।

सुझाव

(1) पाठ्यक्रम में अद्यतन संशोधन अपेक्षित है।

(2) अध्यापकों का पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण अनिवार्य रूप से कराया जाय।

(3) विज्ञान की भांति 20 अंक प्रयोगात्मक का रखा जाय।

(3) एल.टी. पाठ्यक्रम का पुनरीक्षण

उक्त विषयक त्रिदिवसीय कार्यशाला दिनांक 23,24,25 फरवरी, 1995 को सम्पन्न हुई। इसमें आठ प्रशिक्षण महाविद्यालयों के प्रतिभागियों और आमंत्रित शिक्षण संस्थाओं के कुल 33 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद उ.प्र. द्वारा एल.टी. प्रशिक्षण का एक समन्वित पाठ्यक्रम का निर्माण 1992 में किया गया था। इस समन्वित पाठ्यक्रम को लागू हुए लगभग तीन वर्ष पूरे हो रहे हैं। प्रयोग के परिणाम भी परिलक्षित हो चुके हैं। अतः वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उक्त पाठ्यक्रम के पुनरीक्षण एवम् पुरावलोकन की आवश्यकता की अनुभूति हुई।

उद्देश्य : (1) वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रचलित एल.टी. पाठ्यक्रम की समीक्षा करना तथा सुधार हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

(2) एल.टी. पाठ्यक्रम के समन्वित रूप की व्यावहारिकता पर विचार करना।

(3) पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन में आने वाली कठिनाईयों का निराकरण करना।

संस्तुतियाँ

1. प्रथम चार प्रश्न पत्र अनिवार्य रूप से सभी एल.टी. प्रशिक्षण संस्थाओं में लागू किये जायँ।
2. पंचम और षष्ट प्रश्न पत्रों के विशिष्टीकरण में विभिन्नता होगी।

3. सामान्य एल.टी. प्रशिक्षण विषय विशिष्टीकरण में प्रशिक्षण दें।

4. बेसिक, रचनात्मक और गृहविज्ञान एल.टी. प्रशिक्षण शिल्प में विशिष्टीकरण प्रदान करेंगे। प्रमाण पत्र में एल.टी. प्रशिक्षण का नाम के साथ ही विशिष्टीकरण को भी अंकित किया जाय।

5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के तहत व्यावसायिक शिक्षा के ट्रेडों से सम्बन्धित प्रशिक्षित अध्यापकों की आवश्यकता होगी, उन अध्यापकों की प्रतिपूर्ति एल.टी. प्रशिक्षण की विशिष्ट संस्थायें करेंगी।

अतः जनहित में एल.टी. प्रशिक्षण की संस्थाओं का अस्तित्व बनाये रखना नितान्त आवश्यक है।

(5) अन्य कार्य

1. व्यावसायिक शिक्षा सर्वेक्षण कार्य :—

इस संस्थान की देख–रेख में द्वितीय चरण के 20 जनपदों का जनपदीय व्यावसायिक शिक्षा सर्वेक्षण कार्य चल रहा है जिसमें 1994–95 तक 12 जनपदों–टिहरी गढ़वाल, कानपुर देहात, देहरादून, बाँदा, रामपुर, मथुरा, इटावा, चमोली, हरिद्वार का सर्वेक्षण कार्य पूरा हो गया है। प्रतापगढ़ तथा उत्तरकाशी की आख्या संशोधन में है। मैनपुरी की आख्या पुनरीक्षित की जा रही है। शेष 08 जनपदों की आख्या पूरी कराने हेतु अनुस्मारक भेजा जा रहा है।

प्रथम चरण की राजकीय रचनात्मक प्रशिक्षण महाविद्यालय लखनऊ की देख–रेख में सर्वेक्षित 20 जनपदों की आख्याओं की मुद्रण का कार्य भी इस संस्थान की देख–रेख में किया जाना था जिसमें 12 जनपदों–इलाहाबाद, मेरठ, आगरा, कानपुर नगर, मुरादाबाद, पीलीभीत, पौड़ी, मुजफ्फरनगर, बाराबंकी, गोरखपुर, लखनऊ व नैनीताल की आख्याएं मुद्रित हो चुकी हैं और अपेक्षित संस्थानों के लिए उनका वितरण भी किया जा चुका है।

शेष 08 जनपदों–बरेली, बुलन्दशहर, अलीगढ़, सहारनपुर, बिजनौर, झाँसी, फैजाबाद और शाहजहाँपुर की आख्याओं को मुद्रण कराने पर अग्रिम आदेश तक रोक लगा दिया गया है।

2. अन्तर प्रशिक्षण महाविद्यालय वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन :—

राजकीय सी.पी.आई., इलाहाबाद के नवीन सभागार में दिनांक 28.03.95 को श्री राम किशोर शुक्ल, निदेशक, राजकीय मनोविज्ञानशाला, उ.प्र. इलाहाबाद की अध्यक्षता में अन्तर प्रशिक्षण महाविद्यालय, वाद–विवाद प्रतियोगिता 1995 सम्पन्न हुई। उक्त प्रतियोगिता में लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, टी.डी. कालेज, जौनपुर राजकीय बेसिक ट्रेनिंग कालेज, वाराणसी, एल.टी. ट्रेनिंग कालेज, सकलडीहा, वाराणसी, राजकीय सी.पी.आई., इलाहाबाद, राजकीय महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय, इलाहाबाद, संकीर्तन ब्रह्माचार्याश्रम संस्कृत महाविद्यालय झूसी, इलाहाबाद, हडिया पी.जी. कालेज, हडिया, इलाहाबाद, के.पी. ट्रेनिंग कालेज, इलाहाबाद समेत नौ संस्थानों के सोलह प्रतिभागियों ने भाग लिया।

वाद–विवाद प्रतियोगिता का शीर्शक "देश की वर्तमान परिस्थितियों में शिक्षा का निजीकरण होना चाहिए" था। इसके पक्ष और विपक्ष में छात्राध्यापक/छात्राध्यापिकाओं ने सारगर्भित विचार व्यक्त किये। निर्णायक का गुरूतर कार्य डा. रुद्रकान्त मिश्र, प्राध्यापक संस्कृत विभाग प्रयाग विश्वविद्यालय, डॉ. अनुपम आनन्द प्राध्यापक, हिन्दी, सी.एम.पी. डिग्री कालेज, इलाहाबाद तथा डॉ. अमिता श्रीवास्तव प्राध्यापक (रसा.) कुल भाष्कर डिग्री कालेज, इलाहाबाद ने सम्पन्न किया। उक्त प्रतियोगिता में रु. 500/– का प्रथम पुरस्कार, रु. 300/– का द्वितीय पुरस्कार रु. 200/– का तृतीय पुरस्कार तथा रु. 100/– का एक सान्त्वना पुरस्कार प्रदान किये गये। प्रतियोगिता में कु. रंजना बाजपेयी के.पी. ट्रेनिंग कालेज इलाहाबाद ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, कु. समुन सिंह, पी.जी. कालेज हडिया तथा श्रीमती सुषमा पाण्डेय राजकीय महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय, इलाहाबाद ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कु. शिवानी कपूर, राजकीय महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय, इलाहाबाद ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

श्री अरविन्द कुमार, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ को सान्त्वना पुरस्कार प्रदान किया गया। पुरस्कार वितरण श्री राजपति तिवारी संयुक्त शिक्षा निदेशक (प्रशि.) शिक्षा निदेशालय, उ.प्र. इलाहाबाद ने किया।

3. विभिन्न संस्थाओं को सहयोग :–

संस्थान के विशेषज्ञों ने प्रदेश एवं देश स्तरीय संस्थाओं से विशेषज्ञता का आदान–प्रदान किया तथा उन्हें सहयोग प्रदान किया। इसके अन्तर्गत माध्यमिक शिक्षा परिषद, राज्य शिक्षा संस्थान, विज्ञान शिक्षा संस्थान, शिक्षा प्रसार विभाग, के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय अजमेर एवं राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद नयी दिल्ली द्वारा आयोजित विभिन्न गोष्ठियों एवं कार्यशालाओं में प्रतिभाग किया। अनौपचारिक शिक्षा, एस.ओ. पी.टी. प्रशिक्षण तथा विश्व बैंक परियोजना में संस्थान के विशेषज्ञों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान किया।

विज्ञान और गणित विभाग

यह वैज्ञानिक प्रतिस्पर्धात्मक युग है। प्रतिदिन नवीनतम वैज्ञानिक शोध एवं अन्वेषण हो रहे हैं। विज्ञान एवं गणित में नित–नवीन सम्बोधों एवं आयामों का समावेश हो रहा है। अतः अपने छात्रों शिक्षकों एवं शिक्षा–जगत से जुड़े अधिकारियों को तदानुरूप होना आवश्यक है। विज्ञान और गणित विभाग शिक्षण, प्रशिक्षण, शोध, अध्ययन, सर्वेक्षण, कार्यशाला, गोष्ठी, लेखन–प्रकाशन व अन्य वैज्ञानिक क्रियाकलापों के माध्यम से इन्हें नवीन सम्बोधों को सरल, रोचक, बोधगम्य व प्रभावी बनाने की तकनीक एवं युक्तियाँ प्रदान करता है।

प्रशिक्षण

(1) इण्टरमीडियट भौतिकी, रसायन, जीवविज्ञान और गणित प्रवक्ताओं को संदर्भदाताओं के रूप में प्रशिक्षित करने हेतु संस्थान में राजकीय इण्टर कालेज इटावा, नैनीताल, गोपेश्वर व पिथौरागढ़ के 16 प्रवक्ताओं को दिनांक 12.7.94 से 15.7.94 तक प्रशिक्षित किया गया।

(2) इण्टरमीडियट गणित, जीवविज्ञान और गणित के 120 प्रवक्ताओं के दस दिवसीय प्रशिक्षण क्रमशः राजकीय इंटर कालेज इटावा में दिनांक 21.9.94 से 30.9.94 तक तथा पिथौरागढ़ व गोपेश्वर में 2.3.95 से 11.3.95 तक आयोजित किए गए।

(3) हाई स्कूल स्तरीय विज्ञान, जीवविज्ञान और गणित के 378 अध्यापकों के प्रशिक्षण तीन फेरों में डायट भीमताल, देहरादून, मंझनपुर, बरूआ सागर व राजकीय इण्टर कालेज झांसी तथा इलाहाबाद केन्द्रों पर आयोजित हुए।

(4) पर्यावरण के माध्यम से प्राथमिक स्तरीय विज्ञान शिक्षण सम्बन्धी साहित्य में 21 जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थानों के 35 प्राचार्यों, विज्ञान अध्यापकों के त्रिदिवसीय प्रशिक्षण 5.7.94 से 7.7.94 तक सम्पन्न कराये गए।

(5) चयनित आठ जनपदों के जू.हा. स्कूल स्तरीय 400 गणित अध्यापकों का डायट गोरखपुर व फतेहपुर में दिनांक 11.9.94 से 15.9.94 तक, अजीतमल (इटावा) में 6.10.94 से 9.10.94 तक शिवरामपुर (बांदा) में 24.10.94 से 28.10.94 तक, बाद (मथुरा) में 15.11.94 से 19.11.94 तथा 22.2.95 से 26.2.95 में डीडीहाट (पिथौरागढ़) में 19.2.95 से 23.2.95 तक बुलन्दशहर 20.2.95 से 24.2.95 तक तथा भीमताल (नैनीताल) में 18.3.95 से 22.3.95 तक आयोजित कराये गए।

(6) प्राथमिक स्तरीय विद्यालयों के 200 अध्यापकों के प्राथमिक विज्ञान किट सम्बन्धी चार दिवसीय प्रशिक्षण दिनांक 18.7.94 से 21.7.94 तक डायट उन्नाव, निशातगंज (लखनऊ), फरीदपुर (बरेली) व सारनाथ (वाराणसी) में आयोजित हुए।

कार्यशाला / गोष्ठी

(1) जूनियर हाई स्कूल स्तरीय अध्यापकों हेतु विज्ञान प्रशिक्षण साहित्य के विकास हेतु संस्थान में चार दिवसीय दो कायशालाओं का आयोजन क्रमशः दिनांक 16.8.94 से 19.8.94 तथा 22.8.94 से 25.8.94 तक सम्पन्न हुआ। यह कार्य 14 विशेषज्ञों, संदर्भ व्यक्तियों व समीक्षकों की सहायता से सम्पन्न हुआ। सम्बन्धित प्रणीत–साहित्य का मुद्रण हो चुका है।

(2) प्राथमिक स्तरीय अध्यापकों के लिए गणित के प्रशिक्षण साहित्य के विकास हेतु संस्थान में चार दिवसीय दो कार्यशालाओं का आयोजन क्रमशः 25.7.94 से 28.7.94 तथा 3.10.94 से 6.10.94 तक किया गया। यह कार्य 12 विषय विशेषज्ञों, संदर्भ व्यक्तियों द्वारा सम्पन्न हुआ। प्रणीत–साहित्य का मुद्रण हो चुका है।

(3) पर्यावरण के माध्यम से जू.हा. स्कूल स्तर पर विज्ञान शिक्षण साहित्य के विकास हेतु चार दिवसीय दो कार्यशालाओं का आयोजन क्रमशः 7.2.95 से 10.2.95 एवं 22.3.95 से 25.3.95 तक सम्पन्न हुआ। इस कार्य को 13 विषय विशेषज्ञों / परामर्शी / समीक्षकों के सहयोग से पूर्ण कर पाण्डुलिपि तैयार कर ली गई है।

(4) राष्ट्रीकृत पुस्तकों – बाल अंकगणित भाग–5 (कक्षा–5) प्रारम्भिक विज्ञान भाग–2 (कक्षा–7) अंकगणित भाग–2 (कक्षा–7) व बीजगणित और रेखागणित भाग–3 (कक्षा–8) के लेखन सम्बन्धी चार–चार दिवसीय कार्यशालाओं का आयोजन क्रमशः 5.9.94 से 8.9.94 तक 26.9.94 से 29.9.94 तक 7.11.94 से 10.11.94 तक तथा 5.12.94 से 8.12.94 तक कराया गया। चारों पाण्डुलिपियां तैयार कर समीक्षा हेतु समीक्षकों के पास राष्ट्रीय अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद नई दिल्ली प्रेषित की जा चुकी हैं।

शोध / अध्ययन / सर्वेक्षण

(1) विज्ञान पुस्तकों का राष्ट्रीयकरण "ज्ञान–संस्कृति, की दृष्टि से सम्बन्धित शोध के अन्तर्गत इलाहाबाद, कानपुर, मुरादाबाद, मेरठ, बरेली, फैजाबाद, वाराणसी, गोरखपुर, आगरा, कुमायूँ मण्डल के 147 विभिन्न विद्यालयों को चयनित कर शोध कार्य पूर्ण किया गया है। पृच्छा प्रपत्रों के विश्लेषण से निष्कर्ष प्राप्त हुए :–

.....65 प्रतिशत विद्यालयों में छात्र, शिक्षक अनुपात 100:1 से 350:1 तक है। अतः शिक्षकों का छात्रों पर व्यक्तिगत ध्यान देना सम्भव नहीं है।

.....राष्ट्रीयकृत पुस्तकों के सस्ते होने के कारण 95 प्रतिशत छात्र इन्हें अवश्य क्रय कर लेते हैं।

.....50 प्रतिशत विद्यालयों के प्रधानाचार्यों, विज्ञान अध्यापकों के अनुसार राष्ट्रीयकृत पुस्तकें उत्कृष्ट स्तर की है।

.....90 प्रतिशत विद्यालयों के प्रधानाचार्यों, विज्ञान अध्यापकों के अनुसार राष्ट्रीय पुस्तकें प्रस्तावित परिषदीय पाठ्यक्रम को आच्छादित करती हैं।

.....40 प्रतिशत विद्यालयों के प्रधानाचार्य, विज्ञान अध्यापकों के अनुसार यह समकक्ष प्रतियोगी–परीक्षाओं के लिए स्तरीय नहीं है।

.....90 प्रतिशत विद्यालयों के प्रधानाचार्य, विज्ञान अध्यापकों के अनुसार राष्ट्रीय पुस्तकों की भाषा शैली उपयुक्त है।

.....50 प्रतिशत विद्यालयों के प्रधानाचार्य, विज्ञान अध्यापकों के अनुसार इन पुस्तकों में छात्रोंपयोगी अभ्यासार्थ प्रश्नों की कमी है।

.....50 प्रतिशत विद्यालयों के प्रधानाचार्य, विज्ञान अध्यापकों के अनुसार यह राष्ट्रीय पुस्तकें छात्र केन्द्रित व क्रियाकलाप आधारित न होकर शिक्षक प्रधान, व्याख्यान शैली पर आधारित है।

.....60 प्रतिशत विद्यालयों के प्रधानाचार्य, विज्ञान अध्यापकों ने विज्ञान पुस्तकों के राष्ट्रीयकरण के पक्ष को छात्रोपयोगी बताया है।

(ii) जूनियर हाई स्कूलों को उपलब्ध करायी गई विज्ञान किट का विज्ञान शिक्षण अधिगम की गुणवत्ता पर प्रभाव–एक अध्ययन के अन्तर्गत २५ विद्यालयों का सर्वेक्षण कराया गया। जिनके विश्लेषण पर निष्कर्ष प्राप्त हुए :–

.....छात्र/शिक्षक अनुपात मानकानुसार नहीं है।

.....30 प्रतिशत अध्यापक ही विज्ञान किट में प्रशिक्षित है।

.....77 प्रतिशत विद्यालयों में ही किटें उपलब्ध हैं।

.....70 प्रतिशत विद्यालयों के विज्ञान अध्यापकों ने किटों को उपयोगी बताया है।

.....60 प्रतिशत विद्यालयों के विज्ञान अध्यापकों ने अधिकांश पाठ्यक्रम किट की ही सहायता से पूर्ण करते हैं।

.....60 प्रतिशत विद्यालयों में छात्रों के द्वारा भी प्रयोग प्रदर्शन कराये गए।

परियोजना

पर्यवरण के माध्यम से जू.हा. स्कूल स्तर पर विज्ञान शिक्षण साहित्य के विकास सम्बन्धी परियोजना हेतु विभिन्न जनपदों के 40 जू.हा. स्कूलों का सर्वेक्षण कराकर संकलित बिन्दुओं के आधार पर चार दिवसीय दो कार्यशालाओं का आयोजन क्रमशः 7.2.95 से 10.2.95 एवं 22.3.95 से 25.3.95 तक कराया गया। निर्मित पाण्डुलिपि मुद्रण हेतु तैयार है।

प्रकाशन

वर्ष 1994–95 में निम्नलिखित चार प्रकाशन किये गये–

(1) जूनियर हाई स्कूल स्तरीय विज्ञान प्रशिक्षण साहित्य का विकास।

(2) प्राथमिक स्तरीय गणित प्रशिक्षण साहित्य का विकास।

(3) राज्य विज्ञान संगोष्ठी सम्बन्धी पत्रिका का प्रकाशन।

(4) राज्य विज्ञान प्रदर्शनी सम्बन्धी फोल्डर का प्रकाशन।

अन्य विशिष्ट कार्यक्रम

(1) राज्य विज्ञान संगोष्ठी का आयोजन

राज्य विज्ञान संगोष्ठी का आयोजन राजकीय सी.पी.आई. इलाहाबाद के सभागार में 2.9.94 को सम्पन्न हुआ। संगोष्ठी में कुल 20 प्रतिभागी सम्मिलित हुए। संगोष्ठी का विषय "जनसंख्या एक साधन या एक बोझ" निर्धारित था इस प्रतियोगिता में कु. वैशाली श्रीवास्तव राजकीय बालिका इण्टर कालेज वाराणसी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

(2) राज्य विज्ञान प्रदर्शनी 1994 का आयोजन

राज्य विज्ञान प्रदर्शनी 1994 का आयोजन दिनांक 29.11.94 से 03.12.94 तक आदर्श बजरंग इण्टर कालेज बांदा में कराया गया। प्रदर्शनी में 12 मण्डलों के 390 छात्र/छात्राओं ने प्रतिभाग किया। प्रदर्शनी का विषय "सबके लिए विज्ञान और स्वास्थ्य" निर्धारित था। प्रदर्शनी का उद्घाटन डा. कृष्णावतार पाण्डेय, निदेशक राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद उ.प्र., लखनऊ द्वारा तथा पुरस्कार वितरण श्री विनोद कुमार अपर शिक्षा निदेशक उ.प्र. इलाहाबाद द्वारा किया गया। माध्यमिक स्तर पर आगरा मण्डल तथा दीक्षा विद्यालय स्तर पर लखनऊ मण्डल प्रथम स्थान प्राप्त किया।

मनोविज्ञान और निर्देशन विभाग

आचार्य नरेन्द्र देव समिति की संस्तृति के आधार पर स्थापित मनोविज्ञानशाला सम्प्रति मनोविज्ञान और निर्देशन विभाग के नाम से राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, लखनऊ की एक इकाई है। मन्नोविज्ञान और निर्देशन विभाग (मनोविज्ञानशाला), इलाहाबाद के अधीनस्थ मेरठ, आगरा, बरेली, लखनऊ, कानपुर, वाराणसी, गोरखपुर, फैजाबाद, झांसी, नैनीताल, पौड़ी तथा मुरादाबाद मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्र स्थापित हैं।

मनोविज्ञान और निर्देशन विभाग (मनोविज्ञानशाला) तथा उसके अधीनस्थ मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्रों द्वारा कृत क्रियाकलापों का विवरण निम्नवत हैः–

1. निर्देशन कार्य :–

(1.) शैक्षिक निर्देशन

(क) वैयक्तिक निर्देशन :–

मनोविज्ञानशाला तथा इसके अधीनस्थ मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्रों द्वारा वर्ष 1994–95 में वैयक्तिक आधार पर, बाल निर्देशन सहित, 2096 अभ्यर्थियों को व्यक्तिगत निर्देशन (208 अल्प संख्यक समुदाय के व्यक्तियों सहित) प्रदान किया गया।

(ख) सामूहिक निर्देशन :–

1764 छात्र–छात्राओं पर सामूहिक परीक्षण प्रशासित किये गये। शैक्षिक निर्देशन हेतु उनके पार्श्वचित्र तैयार किये गये और आख्या लिखकर दो–दो प्रतियों में उनके विद्यालयों को प्रेषित करने की कार्यवाही की गयी।

(2.) व्यावसायिक निर्देशनः–

आख्यागत वर्ष 94–95 में 17832 व्यक्तियों को विभिन्न व्यवसायों, छात्रवृत्तियों तथा प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं से सम्बंधित सूचनाओं से अवगत कराया गया।

व्यावसायिक सूचनाओं की दिन प्रतिदिन बढ़ती हुई मांगों को ध्यान में रखते हुए सामान्य सूचना प्रसारण के अतिरिक्त मनोविज्ञानशाला में एक व्यावसायिक सूचना कक्ष एवं वाचनालय बना है, जहां जिज्ञासु पाठक

आकर संबंधित साहित्य से लाभान्वित होते हैं इस कार्य को समृद्ध बनाने के लिए संस्था "व्यावसायिक सूचना" त्रैमासिक प्रकाशन की व्यवस्था करती है। तथा संबंधित व्यावसायिक सूचना श्रोतों से साहित्य एवं सामग्री मंगाकर इच्छुक अभ्यर्थियों को लाभान्वित करती है।

2. प्रशिक्षण :—

(क) डिप्लोमा इन गाइडेन्स साइकोलाजी—

यह प्रशिक्षण निर्देशन सेवाओं के लिए उपयुक्त मनोवैज्ञानिकों की तैयार करने के लिए मनोविज्ञानशाला उ.प्र. इलाहाबाद द्वारा दिया जाता है। यह प्रशिक्षण प्रतिवर्ष अगस्त से मई तक प्रदान किया जाता है।

शिक्षा सत्र 1994–95 के लिए अगस्त 94 में 15 अभ्यर्थियों का साक्षात्कार के पश्चात चयन किया गया बाद में विभिन्न कारणों से 4 प्रशिक्षार्थियों ने छोड़ दिया। सम्प्रति 11 प्रशिक्षार्थी प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। इन प्रशिक्षणार्थियों को निर्देशन एवं परामर्श सेवाओं से सम्बन्धित समस्त पाठ्यक्रम जो 5 प्रश्नपत्रों में विभाजित है का सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण मनोविज्ञानशाला के मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रदान किया जाता है। परीक्षा रजिस्ट्रार विभागीय परीक्षाएं, उ.प्र. द्वारा मई 95 में निर्धारित है।

(ख) मनोविज्ञान और शिक्षा शास्त्र के प्रवक्ताओं की पुनर्बोध प्रशिक्षण —

यह प्रशिक्षण प्रति वर्ष राज्य के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत मनोविज्ञान और शिक्षा शास्त्र के प्रवक्ताओं को सितम्बर मास में प्रदान किया जाता है। यह प्रशिक्षण दो सप्ताह का होता है। प्रशिक्षार्थियों को मनोविज्ञान और शिक्षाशास्त्र की नवीनतम विषय वस्तु और शिक्षण विधियों से परिचित कराते हुए उन्हें विद्यालय स्तर पर मनोवैज्ञानिक सेवाओं को ठीक से चलाने के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है। इस प्रशिक्षण से उन्हें विभिन्न मनोवैज्ञानिक परीक्षणों को प्रशासित करने और निष्कर्ष निकालने तथा उसके आधार पर शैक्षिक व्यावसायिक और व्यक्तिगत निर्देशन प्रदान करने के लिए सक्षम जानकारी और प्रशिक्षण दिया जाता है।

वर्ष 1994–95 में यह प्रशिक्षण मनोविज्ञानशाला में 14.9.94 से 25.9.94 तक आयोजित किया गया जिसमें लखनऊ, कानपुर, वाराणसी और फैजाबाद मण्डलों के कुल 14 प्रवक्ताओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

3. राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा सम्बन्धी कार्यः—

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा के कार्यो को सम्पादित करने के लिए शासन की ओर से मनोविज्ञानशाला उत्तर प्रदेश को नोडल एजेन्सी का दायित्व सौंपा गया है। इस परीक्षा के आयोजन में इस संस्थान की भूमिका अति महत्वपूर्ण है। मनोविज्ञानशाला उत्तर प्रदेश इलाहाबाद तथा उसके मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्रों द्वारा इस योजना का प्रचार प्रसार तथा प्रश्न पत्रों का निर्माण छात्रों का प्रशिक्षण राज्य स्तर पर प्रथम परीक्षा का आयोजन तथा भारत सरकार द्वारा आयोजित की जाने वाली अन्तिम परीक्षा हेतु तैयारी और साक्षात्कार पूर्व प्रशिक्षण के कार्य प्रतिवर्ष योजनाबद्ध तरीके से इस संस्थान द्वारा सम्पादित किये जाते हैं। प्रतिवर्ष 'उत्कर्ष' नामक एक पत्रिका भी प्रकाशित की जाती है जिसमें प्रतिभा परिचय के रूप में सफल छात्रों की पारिवारिक पृष्ठभूमि के

साथ–साथ उनकी अध्ययन रुचियों, आदतों आदि की झलक प्रस्तुत की जाती है।

वर्ष 1994 में सर्व प्रथम राष्ट्रीय प्रतिभा खोज की मुख्य परीक्षा के लिए अर्ह छात्रों के लिए प्रदेश के दस केन्द्रों पर दो फेरों में 24.4.94 से 29.4.94 तक (प्रथम फेरा) और 2.5.94 से 5.5.94 तक (द्वितीय फेरा) में प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया इसके अतिरिक्त दिनांक 5.5.94 से 7.5.94 तक मनोविज्ञानशाला उत्तर प्रदेश में पूरे प्रदेश के छात्रों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।

भारत सरकार द्वारा आयोजित राष्ट्रीय प्रतिभा खोज की अन्तिम परीक्षा मई मास के द्वितीय रविवार 8.5.94 को राजकीय इण्टर कालेज, इलाहाबाद में सम्पन्न हुई।

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज की मुख्य परीक्षा में प्रदेश के कुल 183 छात्र–छात्राएं सफल हुए। इन छात्र, छात्राओं के लिए साक्षात्कार पूर्व प्रशिक्षण का आयोजन 2 फेरों में मनोविज्ञानशाला में 15–16 अगस्त तथा 20–21 अगस्त को सफलता पूर्वक आयोजित किया गया।

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में साक्षात्कार के उपरान्त उत्तर प्रदेश के 69 छात्र–छात्राएं मेरिट सूची में आये और पूरे देश में उत्तर प्रदेश का दूसरा स्थान रहा।

वर्ष 1995 की राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा की तैयारी मास अगस्त से प्रारम्भ कर दी गयी थी इस क्रम में मास अगस्त में प्रदेश स्तरीय समिति की बैठक दिनांक 16.8.94 को सम्पादित हुई जिसमें पूर्व वर्ष के कार्यक्रमों को निर्धारित कर अन्तिम रूप प्रदान किया गया।

अगस्त से अक्टूबर 94 तक में इस परीक्षा के सम्बन्ध में प्रचार–प्रसार तथा संस्थाओं से कार्य कराने का कार्यक्रम सफलता पूर्वक चलाया गया। प्रश्न पत्रों का निर्माण कराया गया और राज्य स्तर की परीक्षा दिसम्बर, 94 के द्वितीय रविवार दिनांक 11.12.94 को राज्य के सभी 63 जनपदों के 65 केन्द्रों पर आयोजित की गयी। वर्ष 1995 की इस परीक्षा में कुल 8942 पंजीकृत हुए जिसमें 6853 छात्र–छात्राएं परीक्षा में सम्मिलित हुए।

रजिस्ट्रार से 22 मार्च 1995 में परीक्षाफल प्राप्त हुआ जिसका परीक्षण करा कर विभिन्न प्रपत्रों को मनोविज्ञानशाला द्वारा पूरित करा कर वांछित प्रपत्रों सहित एन0सी0ई0आर0टी0 नई दिल्ली को प्रेषित किया गया। इस वर्ष राज्य स्तरीय परीक्षा में 430 छात्र–छात्राएं सफल घोषित हुए हैं।

(4.) चयन कार्य में सहयोग प्रदान करना :–

मनोविज्ञानशाला उत्तर प्रदेश और इसके अधिनस्थ 12 मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्र भारत सरकार तथा प्रदेश सरकार से सम्बन्धित विभिन्न विभागों को उनकी आवश्यकतानुसार चयन कार्य में समय–समय पर सहयोग देने का कार्य सम्पादित करते हैं। 1994–95 में इस सम्बन्ध में कृत कार्यों का विवरण निम्नवत् है :–

(क) सैनिक स्कूल सरोजनी नगर, लखनऊ में छात्रों के चयन में सहयोग :–

उत्तर प्रदेश सैनिक स्कूल सरोजनी नगर, लखनऊ में गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी मनोवैज्ञानिक भेज कर प्रवेश चयन में सहयोग प्रदान किया गया यह कार्य 16 से 17 अप्रैल 94 में लखनऊ में सम्पादित किया गया।

(ख) एल.टी.और सी.टी. प्रवेश के लिए चयन में सहयोग :—

एल.टी. और सी.टी. प्रवेश परीक्षा 1994–95 के लिए प्रदेश के विभिन्न मण्डलों पर साक्षात्कार हेतु गठित बोर्डों में मनोविज्ञानशाला और मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्रों के मनोवैज्ञानिकों ने सहयोग प्रदान किया। इसके अतिरिक्त एल.टी. और बी.टी. के वर्ष 1995–96 के प्रवेश के लिए शिक्षण अभिरुचि सम्बन्धी प्रश्नपत्रों को तैयार कराकर समय से रजिस्ट्रार विभागीय परीक्षाओं को भेजा गया।

(ग) सी.पी.एड. और डी.पी.एड. के चयन में सहयोगः—

सी.पी.एड./डी.पी.एड. चयन साक्षात्कार हेतु गठित बोर्डों में मनोविज्ञानशाला के मनोवैज्ञानिकों ने सहयोग प्रदान किया। यह साक्षात्कार अगस्त 94 में राज्य क्रीड़ा संस्थान डामासेपर फैजाबाद में आयोजित किया गया था।

(घ) पुलिस विभाग के चयन कार्य में सहयोग :—

वर्ष 1994–95 में पूरे वर्ष समय–समय पर जो भर्ती पुलिस विभाग में की गयी उसमें मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्र तथा मनोविज्ञानशाला उत्तर प्रदेश के मनोवैज्ञानिकों ने विशेषज्ञ के रूप में प्रतिभाग करके चयन कार्य में सहयोग किया। कृत कार्यो का विवरण निम्नवत है।

1. पी.ए.सी. कान्स्टेबुल पदों पर भर्ती :—

मास अगस्त 1994 में पुलिस विभाग द्वारा प्रदेश के 13 भर्ती केन्द्रों पर साक्षात्कार आयोजित किया गया और मनोवैज्ञानिकों की सेवाएं इसके लिए मांगी गयी। सभी 13 केन्द्रों पर 1–1 मनोवैज्ञानिक को नामित किया गया जिन्होंने समय पर पहुंच कर आयोजित इन साक्षात्कारों में प्रतिभाग किया और विशेषज्ञ के रूप में पुलिस विभाग को अपना योगदान दिया।

2. पुलिस कान्स्टेबुल की भर्ती में सहयोग :—

पुलिस विभाग द्वारा वर्ष 1994–95 में दो फेरों में भर्ती हेतु साक्षात्कार का आयोजन प्रथम फेरे में प्रदेश के 13 जनपद मुख्यालयों पर तथा द्वितीय फेरे में प्रदेश के 14 जनपद मुख्यालयों पर क्रमशः जून और जुलाई 94 तथा फरवरी और मार्च 1995 में आयोजित किया गया। इस सभी के लिए मं0 मनोविज्ञान केन्द्र तथा मनोविज्ञानशाला उ.प्र. के मनोवैज्ञानिकों को विशेषज्ञ के रूप में भाग लेने हेतु निदेशक मनोविज्ञानशाला द्वारा नामित किया गया और मनोवैज्ञानिकों ने केन्द्रों पर पहुँच कर योगदान प्रदान किया।

3. पुलिस ड्राइवरों की भर्ती में सहयोग :—

पुलिस विभाग के इलाहाबाद मुख्यालय पर दिनांक 3,4,5 जनवरी 95 को ड्राइवरों की भर्ती हेतु साक्षात्कार हुआ जिसमें मनोविज्ञानशाला के मनोवैज्ञानिक द्वारा जाकर सहयोग प्रदान किया गया।

4. सुरक्षा बल कांस्टेबुल भर्ती में सहयोग :–

मास अक्टूबर–नवम्बर 94 में पुलिस विभाग द्वारा शान्ति सुरक्षा बल कांस्टेबुल की भर्ती की गयी इसके लिए प्रदेश के 22 जनपद मुख्यालयों पर साक्षात्कार बोर्ड बनाये गये। इनमें सहयोग प्रदान करने के लिए मनोविज्ञानशाला और मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्र के मनोवैज्ञानिकों ने विशेषज्ञ के रूप में प्रतिभाग कर पुलिस विभाग को अपना सहयोग प्रदान किया।

5. माध्यमिक विद्यालयों के प्रवेश कार्य में सहयोग :–

प्रदेश के विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों की कक्षा 6, 9 एवं 11 में प्रवेश हेतु छात्रों को चयनित करने हेतु संस्थाओं द्वारा मांगे जाने पर मनोविज्ञानशाला तथा म. मनोविज्ञान केन्द्र के मनोवैज्ञानिकों द्वारा सहयोग प्रदान किया गया।

5. शोध और परियोजनाएं

(क) राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा वर्ष 1993 में अन्तिम रूप से चयनित छात्रों की व्यक्तित्व सम्बन्धी विशेषताओं का अध्ययन :–

प्रतिभावान छात्र छात्राओं का योगदान किसी राष्ट्र की उन्नति और समृद्धि हेतु विशिष्ट व महत्वपूर्ण होता है। अतः उपयुक्त समय पर इन प्रतिभाओं की पहचान तथा उन्हें प्रोत्साहन प्रदान कर साधन सुलभ कराने का महत्वपूर्ण दायित्व राष्ट्र के कर्णधारों का होता है।

इन प्रतिभाओं को प्रोत्साहन प्रदान करने का प्रयास विभिन्न छात्रोपयोगी शैक्षिक योजनाओं के माध्यम से देश और प्रान्त के विद्यालयों में किया जा रहा है। "राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा" का आयोजन उल्लेखनीय प्रयासों में से एक है। वर्ष 1963 में इस योजना का सूत्रपात एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा "राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज योजना के रूप में हुआ था परन्तु वर्ष 1974 में गठित समिति के सुझावों के फलस्वरूप वर्ष 1977 से यह योजना "राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा" के नाम से प्रतिवर्ष संदर्भित परीक्षा का आयोजन करती आ रही है।

परीक्षा के सुचारू संचालन के लिये वर्ष 1984 में प्रसंगाधीन परीक्षा का विकेन्द्रीकरण हुआ और तब से अब तक यह परीक्षा दो स्तरों–राज्य स्तर तथा राष्ट्र स्तरीय मुख्य परीक्षा के रूप में सम्पन्न की जाने लगी है। वर्ष 1988 से लेकर अब तक (1993) राष्ट्रीय स्तर पर उत्तर प्रदेश के छात्र छात्रायें अपने प्रदेश के गौरव में वृद्धि कर रहे हैं। निश्चय ही यह प्रतिभा सम्पन्न छात्र, छात्रायें व्यक्तित्व सम्बन्धी विशिष्ट गुणों के धनी होते हैं। इसी प्रयोजन से प्रस्तुत सर्वेक्षणात्मक शोध अध्ययन किया गया है कि प्रदेश के अन्यान्य छात्र, छात्रायें इस अध्ययन के माध्यम से परीक्षा में सम्मिलित होने हेतु प्रोत्साहन व अभिप्रेरण प्राप्त कर सकें। प्रस्तुत शोध में वर्ष 1993 में राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में अन्तिम रूप से चयनित 68 छात्र–छात्राओं की व्यक्तित्व सम्बन्धी विशेषताओं को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है। सफल छात्रों की अभिरुचि, अध्ययन विधि आदि की जानकारी दी गयी है, इससे छात्र–छात्राएं लाभान्वित हो सकते हैं।

(ख) माध्यमिक स्तर पर सार्वजनिक परीक्षाओं में नकल की प्रवृत्ति

इस शोध का उद्देश्य माध्यमिक स्तर पर सार्वजनिक परीक्षाओं में अनुचित साधनों का प्रयोग करते हुए नकल की प्रवृत्ति का अध्ययन करना है तथा उनके कारणों का पता लगाना है जो इस प्रवृत्ति को जन्म देते हैं तथा पनपने का अवसर प्रदान करते हैं। परीक्षा में नकल की बढ़ती हुई प्रवृति एक अन्यायपूर्ण कार्य है जिससे परीक्षा की विश्वसनीयता एवं वैधता नष्ट हो जाती है। अतः इसे दूर करने का प्रयास किया जाना चाहिए।

जन सामान्य का विचार जानने के लिए मतावली का निर्माण किया गया तथा उन पर प्रतिक्रियाएं जानने हेतु निर्मित कथनों पर प्रधानाचार्य, अध्यापक, अभिभावक तथा छात्रों से प्रतिक्रियाएं ली गयीं। सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व हो सके इसके लिए प्रत्येक वर्ग में पुरुष एवं महिला सम्मिलित किये गये।

इस प्रकार मतावली में 24 कथन सम्मिलित कर प्रपत्र को भरवाया गया। यह पूरा प्रयास किया गया कि प्रश्नावली से नकल की प्रवृत्ति के बढ़ने के कारक एवं रोकने के उपाय उभर कर आ जायें।

इस अध्ययन के लिए प्रतिदर्श के रूप में उत्तर प्रदेश के सभी मण्डलों से प्रदत्त संग्रह कराया गया जिसे पूरा करने में प्रदेश के सभी मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्रों का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

प्रतिदर्शों में व्यक्त की गयी अनुक्रियाओं का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करने पर तालिकानुसार जो तथ्य उभर कर आये हैं वे निम्नवत हैं :–

क्र0 सं0	नकल प्रवृत्ति बढ़ाने के कारक	प्रतिशत	
		हाँ	नहीं
1.	नैतिक मूल्यों में गिरावट	54%	—
2.	अभिभावकों का नकल में सहयोग	20%	—
3.	परीक्षा केन्द्र का स्वकेन्द्र होना	26%	—
4.	अध्यापकों का व्यक्तिगत ट्यूशन पर अधिक बल	82%	18%
5.	परीक्षाओं में गेस पेपर्स, गाइड, माडल पेपर्स का प्रचलन	74%	26%
6.	छात्र–छात्राओं से नैतिक मूल्यों के विकास पर ध्यान न देना	94%	6%
7.	शिक्षा का रोजगार परक न होना	78%	22%
8.	अध्यापकों/प्रधानाचार्यो के पदों का रिक्त पड़े रहना	92%	8%
9.	प्रशासन की ओर से पूरी व्यवस्था एवं सुरक्षा का अभाव	96%	4%
10.	विद्यालयों तथा कक्षाओं में बढ़ती हुई छात्र संख्या	46%	—
11.	बिना परिश्रम ही सफलता प्राप्त करने की चाह	46%	—

इस प्रकार "अब परीक्षाओं में नकल की प्रवृत्ति बहुत बढ़ गयी है" इस कथन से 96% सहमत हैं। अधिकतर लोग नकल की प्रवृत्ति को बढ़ाने वाले कारकों में मुख्य रूप से अध्यापकों एवं छात्रों में नैतिक मूल्यों में गिरावट, अध्यापकों का व्यक्तिगत ट्यूशन पर अधिक बल, गेस पेपर्स, गाइड एवं माडल पेपर्स का प्रचलन, शिक्षा का रोजगार परक न होना विद्यालयों में अध्यापकों एवं प्रधानाचार्यो के पदों का रिक्त पड़े रहना, प्रशासन की ओर से परीक्षा की पूरी व्यवस्था एवं अध्यापकों की सुरक्षा का न होना, विद्यालयों तथा कक्षाओं में बढ़ती हुई छात्र संख्या एवं बिना परिश्रम सफलता की चाह उभर कर सामने आये हैं।

सार्वजनिक परीक्षाओं में नकल की प्रवृत्ति को रोकने के लिए आमंत्रित सुझावों में तालिकानुसार जो तथ्य उभर कर आये हैं वे निम्नवत है :–

तालिका – 2

क्र0सं0	नकल प्रवृत्ति को रोकने के उपाय	प्रतिशत
1.	विद्यालयों में पठन पाठन को समुचित ढंग से सम्पन्न किया जाय जिससे छात्रों में अध्ययन के प्रति रुचि उत्पन्न हो।	19%
2.	नियम बनाकर नकलची छात्रों को दण्ड दिया जाना	18%
3.	नकल रोकने में प्रशासन का सहयोग	15%
4.	अध्यापकों एवं छात्रों में नैतिक मूल्यों का विकास	11%
5.	परीक्षा नियमों का उचित पालन कराना	12%

परीक्षाओं में नकल की प्रवृत्ति को रोकने में आवश्यक यही है कि इस प्रवृत्ति को बढ़ाने वाले कारकों पर नियंत्रण रखा जाय। फिर रोकने के लिए आमंत्रित तीन सुझावों में जो मुख्य सुझाव आये वे हैं, नियम बनाकर नकलची छात्रों को दण्ड दिया जाय, प्रशासन का सहयोग मिले, छात्रों को अध्ययन की ओर प्रेरित कर उसमें रुचि पैदा की जाय, अध्यापकों एवं छात्रों में नैतिक मूल्यों का विकास किया जाय तथा परीक्षा नियमों का पालन सुनिश्चित किया जाय।

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर विभाग, शासन एवं समाज के विचारार्थ निम्नलिखित बिन्दु शोध आख्या में प्रस्तावित किये गये।

1. सबसे अधिक महत्वपूर्ण है कि विद्यालयों में पठन–पाठन समुचित ढंग से सम्पन्न हो।
2. नकल रोकने में प्रधानाचार्यो एवं अध्यापकों की अहम् भूमिका है। इसलिए उन्हें इस पर सक्रिय सहयोग देना चाहिए।
3. नकल की प्रवृत्ति बढ़ाने के मुख्य कारकों पर नियन्त्रण हेतु शासन, विभाग, अभिभावक एवं छात्रों को प्रयास करना चाहिए।

4. छात्रों में प्रारम्भ से ही नैतिक मूल्यों के विकास पर ध्यान दिया जाना चाहिए। इसके लिए विद्यालय, परिवार, समाज का विशेष उत्तरदायित्व है।

(ग) शून्य परीक्षाफल वाले हाईस्कूलों का अध्ययन

उद्देश्य :–

माध्यमिक शिक्षा परिषद उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद की 1993 के हाईस्कूल परीक्षाफल के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि इस वर्ष प्रदेश के 84 विद्यालयों के हाईस्कूल का परीक्षाफल शून्य रहा। यह शिक्षाविदों, प्रधानाचार्यों, अध्यापकों, अभिभावकों और समाज सेवियों के लिए एक बड़ी चुनौती है। शून्य परीक्षाफल के कारणों की जानकारी करना और उनके निवारण के लिए प्रयास करना अत्यन्त आवश्यक है। इस बात को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत शोध, सर्वेक्षण के माध्यम से प्रधानाचार्यों, अध्यापकों, अभिभावकों और विद्यार्थियों से अलग–अलग प्रपत्र भेजकर प्रपत्रों के माध्यम से शून्य परीक्षाफल के कारणों की जानकारी की गयी।

शून्य परीक्षाफल वाले सर्वेक्षण, अध्ययन के लिए 20 विद्यालयों को ही लिया गया और उनसे प्रदत्त संग्रह किया गया। जो निम्नवत् हैं :–

प्रधानाचार्य	अध्यापक	अभिभावक	छात्र
20	120	140	150

उपर्युक्त प्रतिदर्शों से प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण के आधार पर प्रत्येक दृष्टि से शून्य परीक्षाफल होने के प्रमुख उत्तरदायी कारकों को ज्ञात किया गया।

निष्कर्ष :–

प्रपत्रों के माध्यम से प्राप्त प्रधानाचार्यों, अध्यापकों, अभिभावकों और छात्रों की अनुक्रियाओं के विश्लेषण से निष्कर्षतः प्रमुख कारक इस प्रकार है :–

1. विद्यालयों में पठन–पाठन हेतु शैक्षिक वातावरण का उपयुक्त न होना।
2. अध्यापकों के पद मुख्यतः गणित तथा अंग्रेजी रिक्त रहना, अध्यापकों, प्रधानाचार्यों का प्रायः विद्यालय, कक्षा में अनुपस्थित रहना।
3. अध्यापकों द्वारा समुचित रूप से विद्यार्थियों को कक्षा कार्य, गृह कार्य न देना, उनकी जाँच न करना।
4. अध्यापकों का विद्यार्थियों के प्रति रूखा व्यवहार, पाठ्यक्रम पूरा न पढ़ा पाना।
5. छात्रों का दुर्बल पारिवारिक आर्थिक पृष्ठभूमि का होना तथा पढ़ने में अपेक्षित रुचि न लेना, छात्रों का कक्षा में नियमित रूप से उपस्थित न होना।

6. अभिभावकों का अशिक्षित, गरीब होना तथा उनमें पर्याप्त जाकरूकता की कमी।

7. छात्रों का अध्ययन के बजाय घरेलू कार्य में अधिक व्यस्त होना।

8. अध्यापक, अभिभावक सम्पर्क न हो पाने के कारण विद्यार्थियों की कमजोरियों के बारे में अभिभावकों को जानकारी न हो पाना।

9. नियमित रूप से विद्यालयों का पैनल निरीक्षण न होना। अध्यापकों के समुचित प्रोत्साहन की व्यवस्था न होना।

10. विद्यालय में भौतिक साधनों जैसे भवन, काष्ठोपकरण, बिजली, पंखा, पुस्तकालय, वाचनालय आदि की समुचित व्यवस्था न होना।

सुझाव :–

1. अध्यापक, प्रधानाचार्य, छात्र और अभिभावक सभी मिलकर विद्यालय के शैक्षिक वातावरण के निर्माण के सहयोग करें। जिससे विद्यालय में ठीक से पढ़ाई हो सके।

2. अध्यापकों के रिक्त पदों, विशेषकर गणित, विज्ञान और अंग्रेजी विषयों से सम्बन्धित पदों को भरने की व्यवस्था सुनिश्चत की जानी चाहिए।

3. अध्यापक, प्रधानाचार्य और विद्यार्थियों की विद्यालय में नियमित रूप से उपस्थिति के लिए विशेष प्रयास किया जाना चाहिए, इससे छात्रों की पठन–पाठन में रुचि बढ़ेगी, अध्यापकों को पाठ्यक्रम पूरा करने का अवसर मिलेगा तथा शैक्षिक वातावरण सुधरेगा।

4. विद्यालय में आवश्यक साज सज्जा प्रयोगशाला पुस्तकालय, वाचनालय आदि की व्यवस्था की जाय।

5. प्रभावी रूप से अध्यापक अभिभावक संघ की व्यवस्था की जाय।

6. शैक्षिक क्रिया कलापों में सुधार और अध्यापकों के समुचित प्रोत्साहन हेतु नियमित रूप से पैनल निरीक्षण की व्यवस्था होनी चाहिए।

परियोजना–वर्ष 1994–95

निष्पादन परीक्षण माला (बच्चों के लिए) की विश्वसनीयता और वैधता –

परीक्षण माला सम्बन्धी उत्तर पत्रों की प्रतियां तैयार करने के उपरान्त सभी मंडलों के मनोवैज्ञानिकों को 5+ की आयु से 10 + की आयु के बालक बालिकाओं पर नई निष्पादन परीक्षण माला तथा विस्क संपादित करने को कहा गया।

विभिन्न मंडलों द्वारा निम्न संख्या में परीक्षण प्रतिदर्श प्राप्त हुआ। लखनऊ–30, कानपुर–18, आगरा–24, वाराणसी–12, मेरठ–30, गोरखपुर–26, मुरादाबाद–21, झाँसी–15, बरेली–18। इस प्रकार कुल 194 बच्चों के उत्तरपत्रों को व्यवस्थित कर वयानुसार विभाजित किया गया तथा सांख्यिकीय विश्लेषण कर विश्वसनीयता और वैधता प्राप्त करने हेतु टेबुलेशन कार्य किया गया। इस परीक्षण का विस्क के साथ सहसम्बन्ध ज्ञात करने के लिये प्राप्तांकों को प्रमाणिक अंकों में बदला जा रहा है। यह परियोजना सत्र 95–96 तक चलेगी।

6. विचार गोष्ठियों तथा कार्यशालाओं का आयोजन :–

सत्र 1994–95 में निम्नलिखित विचार गोष्ठियों तथा कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

(क) "राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में राजकीय विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के प्रतिभाग में वृद्धि"

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश के तत्वाधान में मनोविज्ञान और निर्देशन विभाग (मनोविज्ञानशाला) उ.प्र. इलाहाबाद द्वारा दिनांक 10 व 11 नवम्बर, 1994 की तिथियों में राज्य हिन्दी संस्थान वाराणसी के सभागार में "राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में राजकीय विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के प्रतिभाग में वृद्धि" विषयक संगोष्ठी सम्पन्न हुई। संगोष्ठी का उद्घाटन दिनांक 10 नवम्बर 1994 को पूर्वान्ह में मुख्य अतिथि प्रो. एस. के. गुप्त क्षेत्रीय सलाहकार एन.सी.ई.आर.टी. इलाहाबाद के उद्बोधन से हुआ। इस अवसर पर प्रो. गुप्त ने अपने सम्बोधन में कहा कि कक्षा 6 स्तर से ही राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा के प्रश्नपत्रों का ज्ञान कराया जाने तथा इससे सम्बन्धित पुस्तकें और सामग्री विद्यालय में विद्यार्थियों को उपलब्ध करायी जायें। दो दिनों तक चली इस गोष्ठी में वाराणसी, फैजाबाद और गोरखपुर मण्डलों के राजकीय बालक, बालिका विद्यालयों के 36 प्रधानाचार्य, प्रधानाचार्याओं सहित कुल 59 प्रतिभागियों ने सहभाग किया।

गोष्ठी का समापन दिनांक 11 नवम्बर 1994 को अपराह्न मुख्य अतिथि निदेशक मनोविज्ञानशाला उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद श्री राम किशोर शुक्ल जी के उद्बोधन से हुआ। इस अवसर पर प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए श्री शुक्ल जी ने कहा कि आज के इस प्रतियोगी युग में हम सबका यह दायित्व है कि देश के प्रतिभाशाली छात्र–छात्राओं को उचित समय से पहचान कर उनके विकास के लिए उचित मार्गदर्शन दिया जाये। तथा उनके लिए आने वाली बाधाओं को दूर किया जाये।

गोष्ठी की प्रमुख संस्तुतियाँ निम्नवत है :–

(1) छात्र–छात्राओं के कक्षा 9 के प्रगति पत्र इस परीक्षा में प्रवेश की अर्हता का उल्लेख किया जाये।

(2) विद्यालय की पत्रिका में इस परीक्षा से सम्बन्धित व्यापक सूचना प्रकाशित की जाये।

(3) अध्यापक अभिभावक संघ की बैठकों में इस परीक्षा की विस्तृत जानकारी देकर छात्र–छात्राओं को प्रेरित किया जाये।

(4) विद्यालय, जिलास्तर पर विषय विशेषज्ञों का चयन कर मनोविज्ञान शाला के सहयोग से प्रशिक्षण की व्यवस्था किया जाये।

(5) मनोविज्ञानशाला, मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्रों द्वारा जिज्ञासा समाधान तथा पुराने वर्षो के प्रश्नपत्रों की उपलब्धता सुनिश्चित कराया जाये।

(6) परीक्षा के सभी विषयों हेतु विशेषज्ञ समिति का गठन किया जाये, जो सम्बन्धित छात्र–छात्राओं को समय–समय पर प्रत्येक स्तर पर प्रशिक्षण दें।

(7) अन्तिम रूप से चयनित छात्र–छात्राओं के अलंकरण की व्यवस्था की जाये जिससे उनके अभिभावकों को भी बुलाया जाये। साथ ही उन छात्र–छात्राओं का व्यक्तिगत साक्षात्कार रेडियो तथा दूरदर्शन पर कराया जाय।

(ख) वृत्ति नियोजन के संदर्भ में माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक सूचना की उपलब्धता के स्रोत और उनका संवर्द्धन

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में मनोविज्ञान और निर्देशन विभाग (मनोविज्ञनशाला) द्वारा दिनांक 24 व 25 नवम्बर, 94 की तिथियों में "जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान (डायट) आगरा के सभाकक्ष में वृत्ति नियोजन के संदर्भ में माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक सूचना की उपलब्धता के स्रोत और उनका संवर्द्धन विषय पर द्विदिवसीय विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी में कुल (49) प्रतिभागी उपस्थित हुए जिनमें आगरा मण्डल के प्रधानाचार्यो, शिक्षकों के साथ प्रदेश के मण्डलीय मनोवैज्ञानिक तथा शिक्षा विभग के अधिकारी उपस्थित थे। गोष्ठी का उद्घाटन दिनांक 24–11–94 को पूर्वाह्न में सेंट जोन्स कालेज, आगरा के मनोविज्ञान विभागाध्यक्ष डा. यशवीर सिंह ने किया तथा अध्यक्षता निदेशक मनोविज्ञानशाला श्री राम किशोर शुक्ल ने किया।

अपने उद्घाटन भाषण में डा. यशवीर सिंह ने कहा कि अपने कैरियर का सही चुनाव करने से ही विद्यार्थियों का भावी जीवन सुखी हो सकता है। और वे राष्ट्र के विकास में अपना योगदान दे सकते हैं। इस अवसर पर निदेशक मनोविज्ञानशाला ने विकास के भौतिक और मानवीय दो संसाधनों में मानवीय संसाधन के समुचित उपयोग के लिये माध्यमिक स्तर पर वृत्ति नियोजन की आवश्यकता पर बल दिया गया।

विद्यालयं में व्यावसायिक शिक्षा और रोजगार के अवसरों की जानकारी देने जैसे विन्दुओं पर प्रतिभागियों को समूहीकृत करके संस्तुतियाँ प्रस्तुत की दो दिनों में गहन विचार विमर्श के बाद गोष्ठी द्वारा प्रस्तुत प्रमुख संस्तुतियाँ निम्नवत् है :–

(1) विद्यालयों में "व्यावसायिक सूचना कार्नर" स्थापित किये जायें। व्यावसायिक सूचना से सम्बन्धित पत्र–पत्रिकाएं मंगाकर विद्यालयों में रखी जाये। विद्यालय में प्रार्थनास्थल पर प्रतिदिन, साप्ताहिक रूप से प्राचार्य, अध्यापक द्वारा व्यावसायिक सूचनाएँ सामूहिक रूप से प्रदान की जायँ। विद्यालय में इसके लिये एक प्रकोष्ठ स्थापित किया जाय और उसका इंचार्ज अध्यापक परामर्शदाता,

मनोवैज्ञानिक व्यवसाय विशेषज्ञों को बुलाकर व्यावसायिक वार्ताएँ प्रसारित करा सकें। इसके साथ ही कैरियर कान्फ्रेन्स गोष्ठियों आदि का आयोजन कर छात्रों को वृत्ति नियोजन में सहयोग किया जाय।

(2) व्यावसायिक सूचना के सभी उपलब्ध स्रोतों में पारस्परिक सामंजस्य और सूचनाओं के आदान प्रदान की व्यवस्था की जाय। इसके लिये भी कैरियर कान्फ्रेन्स सायकालजी डे आदि का आयोजन किया जाय।

(3) व्यावसायिक शिक्षा से सम्बन्धित छात्र–छात्राओं हेतु परामर्शदाता की व्यवस्था पृथक से की जाय जो विभिन्न ट्रेड्स से सम्बन्धित आवश्यक सूचनाओं का संग्रह व वितरण कर सकें।

(4) व्यावसायिक शिक्षा के विद्यार्थियों को स्वरोजगार के लिये वित्तीय साधन उपलब्ध कराये जायं। ट्रेड शिक्षा के अन्तर्गत विद्यार्थियों द्वारा उत्पादित सामग्री के विक्रय हेतु उपभोक्ता भण्डार की दुकानों की तरह दुकाने खोली जायं।

(ग) मन्द बुद्धि बालकों की समस्याएँ निदान एवं उपचार

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद के तत्वावधान में मनोविज्ञानशाला, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद में "मन्द बुद्धि बालकों की समस्याएं, निदान और उपचार विषय पर, दो दिवसीय गोष्ठी दिनांक 17–18 फरवरी, 1995 को सम्पन्न हुयी। गोष्ठी स्थल–मनोविज्ञानशाला, उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद का उद्घाटन मानसिक रोग विशेषज्ञ, डा. विष्णु जाडिया ने किया। गोष्ठी में 53 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

श्रीमती ममता मित्तल, सहायक मनोवैज्ञानिक ने उक्त विषय पर आधार पत्रक प्रस्तुत किया।

"पद्म श्री" स्त्री रोग विशेषज्ञ डा. राज बावेजा ने बौद्धिक मन्दता के वह कारण बताये, जो गर्भावस्था में ही शिशु को बौद्धिक मन्दता की ओर अग्रसर करते हैं।

डा. मंजू वर्मा स्त्री रोग विशेषज्ञ तथा बाल रोग विशेषज्ञ और विभागाध्यक्ष, डा0 राजीव शरण ने इस क्षेत्र में नवीनतम विचारों से अवगत कराते हुये मन्द बुद्धि बालकों की पहचान के लक्षणों पर विस्तार से प्रकाश डाला।

गोष्ठी की प्रमुख संस्तुतियां निम्नवत हैं :–

(1) सर्वप्रथम मन्द बुद्धि बालकों की पहचान के लिए शारीरिक लक्षण मानसिक लक्षण तथा सामाजिक विशेषताओं के बारे में जानकारियां दी जायं जिससे इन्हें शुरू में ही पहचान कर विशेष शिक्षा का प्रबंध किया जा सके। इन बालकों से सामान्य बालकों के समान शैक्षिक प्रगति की आशा करना निरर्थक है इसलिए यह इनको विशेष बालक समझ कर बदनुरूप प्रशिक्षण की व्यवस्था करने का प्रयास किया जाये।

(2) इनके लिए पौष्टिक भोजन की व्यवस्था की जाये तथा ऐसा सुरक्षात्मक वातावरण प्रदान किया जाये, कि ये अपने को उपेक्षित न समझें और यह हीनभावना से ग्रस्त न हो सकें।

(3) इनके पालन पोषण हेतु अभिभावकों को सघन प्रशिक्षण दिया जाये जिसमें इस बिंदु पर बल हो, कि ऐसा बालकों को विशेष स्नेह व सुरक्षा प्रदान की जानी चाहिए। इन्हें हस्त कार्यों में निपुण करने का प्रयास करना चाहिए। इन्हें सामूहिक कार्यक्रमों में सहभागिता तथा समायोजन के अवसर दिये जाने चाहिए।

(4) सरकार एवं स्वैच्छिक संगठनों को इन बच्चों के लिए अर्द्धकुशल, पदों की व्यवस्था करनी चाहिए। टी.वी., समाचार पत्र एवं विज्ञापनों द्वारा इन बालकों से संबंधित शिक्षा दीक्षा का प्रसार किया जाना चाहिए। ऐसे केन्द्र खोले जाने चाहिए, जहाँ गाँव व शहर के लोग संपर्क कर अपने बालकों का बौद्धिक स्तर ज्ञात कर आगे के जीवन शैली का निर्धारण कर सकें।

(5) मन्द बुद्धि बालकों का शिक्षण पाठ्यक्रम पृथक किया जाना चाहिए, जिसमें उनकी क्षमता को ध्यान में रखते हुए ही प्रत्येक कक्षा का पाठ्यक्रम बनाया गया हो। यदि यह भार मनोवैज्ञानिकों को दिया जाए तो इसकी विश्वसनीयता अधिक बढ़ सकती है।

(6) लायन्स क्लब, रोटरी क्लब तथा अन्य स्वयं सेवी संस्थाएँ ऐसे बालकों को तथा उनके अभिभावकों को सहायता पहुँचाने के लिए आगे बढ़ सकती हैं।

(7) शासन द्वारा प्रत्येक जनपद में कम से कम एक मन्द बुद्धि बालकों का विद्यालय मनोविज्ञान केन्द्र परिसर में या उसके समीप खोला जाए। जिससे केन्द्र के मनोवैज्ञानिक अपनी सेवाएँ उपलब्ध करा सकें।

(8) गरीब मंद बुद्धि बालकों के लिए विशेष अनुदान की व्यवस्था होने पर इन बालकों का सरलता से आत्म निर्भर बनाया जा सकता है। यह कार्य शासन एवं बड़ी–बड़ी संस्थाओं द्वारा ऐच्छिक स्तर पर भी किया जा सकता है।

(9) शनैः–शनैः प्रयास कर, मन्द बुद्धि बालकों के अधिकारों को ध्यान में रखते हुये पूरी व्यवस्था में एक परिवर्तन करने की आवश्यकता है जिससे यह भी सुरक्षित हो अपना जीवन यापन कर सकें।

गोष्ठी का समापन अपर शिक्षा निदेशक (माध्यमिक) श्री विनोद कुमार ने किया। सत्र की अध्यक्षता एन.सी.ई.आर.टी. के फील्ड एडवाइजर प्रो. एस.के. गुप्त ने किया।

(घ) उत्तर प्रदेश में माध्यमिक स्तर पर निर्देशन का स्वरूप, समस्याएँ और समाधान

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्र मुरादाबाद के सहयोग से मनोविज्ञान और निर्देशन विभाग (मनोविज्ञानशाला) इलाहाबाद द्वारा दिनांक 22 व 23 मार्च 95 की तिथियों में "उत्तर प्रदेश में माध्यमिक स्तर पर निर्देशन का स्वरूप, समस्याएं और समाधान विषय पर मनोविज्ञानशाला में विचार गोष्ठी आयोजित की गयी। गोष्ठी का उद्घाटन मुख्य अतिथि प्रो. राम शकल

पाण्डेय, शिक्षा विभागाध्यक्ष इलाहाबाद विश्वविद्यालय ने किया उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता श्री राम सूरत लाल अवकाश प्राप्त सहायक शिक्षा निदेशक ने की। दिनांक 23 मार्च को अपराह्न में गोष्ठी का समापन मुख्य अतिथि डा. सैयद फजले इमाम रिजवी, अध्यक्ष, माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन आयोग उत्तर प्रदेश इलाहाबाद के उद्बोधन से हुआ। समापन सत्र की अध्यक्षता श्री सालिगराम यादव सदस्य माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन आयोग उत्तर प्रदेश इलाहाबाद ने की।

विचार गोष्ठी में इलाहाबाद, वाराणसी, लखनऊ व कानपुर मण्डलों के 26 प्रधानाचार्य, प्रधानाचार्या अथवा उनके प्रतिनिधि प्रवक्ता मण्डलीय मनोवैज्ञानिक परामर्शदाता या सहायक मनोवैज्ञानिक मनोविज्ञानशाला के विशेषज्ञ तथा डी.जी.पी. प्रशिक्षणार्थी कुल 59 प्रतिभागियों ने अपना योगदान किया।

उद्घाटन भाषण में प्रो. रामशकल पाण्डेय ने कहा कि चयन की समस्या प्रतिपल हर व्यक्ति के समक्ष रहती है जिसमें उसे उचित निर्णय लेना पड़ता है। इस कार्य में यदि मनोवैज्ञानिक की सहायता मिल जाय तो यह और अच्छी बात होगी।

समापन भाषण में मुख्य अतिथि प्रो. सैयद फजले इमाम रिजवी ने कहा कि शिक्षक मूल रूप में एक मनोवैज्ञानिक होता है उसका पढ़ाने का अपना मनोविज्ञान होता है। उन्होंने कहा कि मनोविज्ञान जिस मानवीय चेतना को विकसित करता है, उसे गहराई से समझने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि शिक्षा तभी फलवती हो सकती है जब उसके साथ दीक्षा का समावेश हो। इस अवसर पर श्री सालिगराम यादव ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि अध्यापकों, विद्यार्थियों में जाति धर्म और सम्प्रदाय के आधार पर विभाजन नहीं किया जाना चाहिए।

गोष्ठी की प्रमुख संस्तुतियाँ निम्नवत हैं:–

(1) निर्देशन का शिक्षा से घनिष्ठ सम्बन्ध होने के कारण इसकी जानकारी प्रारंभिक स्तर की अनिवार्य पुस्तकों में प्रमुख रूप से उल्लिखित की जाय। निर्देशन कार्यक्रम कक्षा 9 से आरंभ किया जाय।

(2) इसे आवश्यकता आधारित (Need based) बनाया जाय तथा संचार और सम्प्रेषण के विभिन्न माध्यमों द्वारा इसको व्यापक प्रचार–प्रसार किया जाय। इससे सम्बन्धित पोस्टर, चार्ट आदि विद्यालयों में प्रस्तुत किये जायं।

(3) निदेशन सम्बन्धी साहित्य, उपकरण का पर्याप्त मात्रा में सृजन और उपयोग किया जाय तथा विद्यालयों में निर्देशन कक्ष की व्यवस्था की जाय। जहाँ निर्देशन से सम्बन्धित साहित्य प्रदर्शित किया जाय।

(4) प्रत्येक माध्यमिक विद्यालय में एक प्रशिक्षित मनोवैज्ञानिक, परामर्शकी नियुक्ति की जाय। पार्ट टाइम या विजिटिंग कांउसेलर्स की व्यवस्था की जा सकती है।

(5) निर्देशन और परामर्श सेवा के प्रति विद्यालयीय परिवेश में उदासीनता को कम किया जाय तथा जनसामान्य में इसके प्रति जागरूकता बढ़ायी जाय। बढ़ती हुई छात्र संख्या को देखते हुए निर्देशन कर्ताओं की वृद्धि की जाय।

(6) समय–समय पर निर्देशन सम्बन्धी गोष्ठियों का आयोजन करके इसके प्रति लोगों को अधिक जागरूक किया जा सकता है।

7. प्रकाशन कार्य :–

मनोविज्ञान शाला उत्तर प्रदेश इलाहाबाद तथा इसके अधीनस्थ मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्रों के द्वारा किये गये कर्यो एवं निर्देशन, परामर्श से छात्र–छात्राओं, अभिभावकों तथा समाज के अन्य व्यक्तियों को परिचित तथा लाभान्वित करने की दृष्टि से मनोविज्ञानशाला द्वारा दो त्रैमासिक पत्र नियमित रूप से प्रकाशित किये जाते हैं।

(क) आप का बालक (त्रैमासिक)

(ख) व्यावसायिक सूचना (त्रैमासिक)

(क) "आपका बालक" (वर्ष 1994–95)

बालक–बालिकाओं की विभिन्न मनोवैज्ञानिक समस्याओं, लक्षणों एवं उपचार हेतु परामर्श को दृष्टि में रख कर संस्था 'आपका बालक' त्रैमासिक अंकों में प्रकाशित करती है। प्रारम्भ में इसमें किसी एक मनोवैज्ञानिक प्रकरण का वेवेचन प्रस्तुत किया जाता रहा है। किन्तु इसके महत्व को देखते हुए इस सत्र के द्वितीय अंक से मनोवैज्ञानिक प्रकरण के साथ उपयोगी मनोवैज्ञानिक लेख का भी समावेश करके पृष्ठों की संख्या बढ़ा दी गयी है। वर्ष 1994–95 में संस्था ने जो अंक प्रकाशित किये, उनका विवरण निम्नवत है:–

"आप का बालक" प्रकाशन के प्रथम अंक 'आत्मविमोह की ओर उन्मुख बालक' समाजोयन की समस्या से सम्बन्धित प्रकरण का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इसके द्वितीय अंक में किशोरावस्था को ओर उन्मुख बालक की समस्याएँ विषय पर लेख तथा मानसिक दौर्बल्य से पीड़ित बालिका "विषय पर निर्देशन प्रकरण प्रकाशित कर लाभार्थियों के लिए उपयोगी मनोवैज्ञानिक जानकारियाँ दी गयी हैं। तृतीय अंक में "अति क्रियाशील बलक" विषयक लेख में ऐसे बच्चों के विषय में जानकारियाँ प्रस्तुत की गयी हैं जिसमें यह स्पष्ट किया गया है कि निरुद्देश्य अति क्रियाशीलता जैसे तोड़–फोड़ करना, निरर्थक बातें करना, अनावश्यक दौड़ भाग करना, घर के लोगों को अपनी चंचलता से थका देना, बोल चाल में क्रम का अभाव आदि व्यवहार अभिभावकों के लिए गम्भीर समस्याएं उत्पन्न करती है। जिन पर समय से ध्यान देना आवश्यक होता है। इसी अंक में सुरक्षात्मक प्यार और भाव अभिव्यक्ति के अवसर की तलाश–बालक की एक समस्या "नामक निर्देशन प्रकरण भी प्रकाशित किया गया। इसमें यह बताने का प्रयास किया गया है कि पारिवारिक उपेक्षा की अनुभूति से उत्पन्न क्रोध, हीनता एवं हताशा व्यक्तित्व के विकास में किस प्रकार से बाधक हो जाते हैं और बालक विरोधी, हठी, अवज्ञाकारी और एकान्त प्रिय हो जाता है।

इस प्रकाशन के चौथे अंक में "बच्चों में हठ करने की आदत" विषयक लेख में बच्चों में पायी जाने वाली इस प्रवृत्ति के मनोवैज्ञानिक पक्षों पर प्रकाश डाला गया है। दूसरा लेख निर्देशन प्रकरण के अंन्तर्गत स्नेह के अभाव में बच्चों का घर से पलायन–एक गम्भीर समस्या का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

(ख) "व्यवसायिक सूचना" (1994–95)

प्रथम अंक (अप्रैल–जून, 94) "अपने नियोजक स्वयं बने" शीर्षक के अन्तर्गत यह सूचना देने का प्रयास किया गया है, कि सरकार की व्यावसायिक उदारीकरण एवं पंचवर्षीय योजनाओं का किस प्रकार से लाभ लेकर अपना स्वयं का व्यवसाय प्रारम्भ किया जा सकता है। प्रधानमन्त्री नरसिम्हाराव ने स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर 15 अगस्त 1993 को लाल किले के प्राचीर से राष्ट्र को सम्बोधित करते हुये स्वरोजगार योजना के महत्व को रेखांकित किया। जिस पर 2 अक्टूबर, 1993 से कार्यान्वयन प्रारंभ हो चुका है।

द्वितीय अंक (जुलाई–सितम्बर, 94) में "महिलाओं के लिये उपलब्ध व्यावसायिक अवसर विमान परिचारिका (एयर होस्टेस)" आज के युग में पुरुषों की तरह स्त्रियों को भी अपनी अभिवृत्ति, मनोवृत्ति, रुचि एवं प्रेरणा के आधार पर किसी भी व्यवसाय को अपनाने का अवसर मिलता है। महिलाओं के लिये यों तो अनेकों व्यवसाय हो गये हैं परन्तु मानव सेवा का व्यवसाय सबसे पुराना है। मानव सेवा के व्यवसाय एयर होस्टेस, हेयर ट्रेसर तथा ब्यूटीशियन आदि हैं इस अंक के माध्यम विमान परिचारिका के रूप में व्यवसाय कैसे प्राप्त किया जा सकता है। इस विषय में विस्तृत जानकारी दी गयी है।

इसी अंक में "उत्तर प्रदेश" में व्यावसायिक शिक्षा–प्रश्न उत्तर के माध्यम से डा. उदय नारायण मिश्र अवकाश प्राप्त, उपशिक्षा निदेशक द्वारा प्राप्त मार्गदर्शन के आधार पर उत्तर प्रदेश में व्यावसायिक शिक्षा के स्वरूप का वर्णन प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अंक (अक्टूबर–दिसम्बर, 94) में "मास्टर आफ बिजनेस मैनेजमेन्ट" तथा रोजगार के उपलब्ध अवसरों की जानकारी इस अंक के माध्यम से दी गयी है। इसी अंक में अध्यापन क्षेत्र में कार्य करने हेतु उपलब्ध विभिन्न अध्यापन प्रशिक्षणों तथा उनसे सम्बन्धित विद्यालयों में नियोजन के अवसरों की जानकारी प्रश्न–उत्तर के रूप में प्रस्तुत की गयी है।

चतुर्थ अंक (जनवरी –मार्च, 95) में "सेवा व्यवसाय–रोजगार के अवसर" शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। पिछले कुछ दशकों से ग्रामीण क्षेत्र से शहरों में बसने की प्रक्रिया में बड़ी तीव्रता से वृद्धि हुई है। इसके फलस्वरूप जहां अनेक समस्याओं का जन्म हुआ है वहीं अनेक क्षेत्रों में वैयक्तिक सेवाओं में रोजगार के अनेक अवसर भी उपलब्ध हुए हैं। इस प्रकाशन में युवक युवतियों के लिये वैयक्तिक सेवा व्यवसायों के क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के व्यवसायों की जानकारी देने का प्रयास किया गया है। इसी अंक में विद्यालयों में व्यावसायिक सूचना का महत्व "शीर्षक से विद्यालयों में व्यावसायिक सूचनायें प्रदान करने की सुनियोजित व्यवस्था करने हेतु सुझाव प्रस्तुत किये गये हैं।

(ग) उत्कर्ष–पंचम पुष्प 1993 :–

इस प्रकाशन में राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में अन्तिम रूप से चयनित प्रतिभाशली छात्र–छात्राओं पर आधारित एक सर्वेक्षणात्मक अध्ययन किया जाता है। वर्ष 1993 में 68 छात्र–छात्राओं ने अन्तिम रूप से सफलता प्राप्त की है। "उत्कर्ष" प्रथम पुष्प में इन्हीं छात्र–छात्राओं के विवरणों को पृच्छा पत्रों के माध्यम से संकलित कर प्राप्त आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया है। इस प्रकाशन के प्रथम भाग में आंकड़ों का विश्लेषण कर छात्र–छात्राओं की अध्ययन आदतों शैक्षिक व पारिवारिक परिवेश तथा विशेष रुचियों का वर्णन उल्लिखित है द्वितीय भाग में प्रतिभा–परिचय के अन्तर्गत छात्र–छात्राओं का छायाचित्र तथा उनका संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया गया है। यह प्रकाशन प्रबुद्ध चिन्तकों, शिक्षा आयोजकों, शिक्षकों तथा शिक्षार्थियों के लिये दिशा निर्देश प्रदान करने के सहायक हो सके इस उद्देश्य से प्रभावशाली घटकों के आधार पर गतवर्ष के सफल अभ्यर्थियों का तुलनात्मक विवेचन भी प्रस्तुत किय गया है।

हमारे देश का सर्वाधिक जनसंख्या वाला प्रदेश उत्तर प्रदेश है जिसमें प्रतिवर्ष 20 लाख से भी अधिक छात्र–छात्रायें विभिन्न परीक्षा संस्थाओं से हाईस्कूल अथवा समकक्ष परीक्षाओं में सम्मिलित होते हैं परन्तु प्रस्तुत सर्वेक्षणात्मक अध्ययन के माध्यम से प्राप्त आंकड़े दर्शा रहे हैं कि शहरी क्षेत्रों की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व आदि नई प्रतिभा पहचान और सम्बर्धन से सम्बन्धित कई विचारणीय प्रश्न इस प्रकाशन के माध्यम से सामने आये हैं।

इस प्रकाशन का एक प्रयोजन यह भी है कि उत्तर प्रदेश के प्रतिनिधित्व में वृद्धि हो तथा प्रदेश के अधिकाधिक छात्र छात्रायें इन सफल छात्र छात्राओं की अध्ययन आदतों, अध्ययन विधियों, रुचियों आदि से अवगत होकर मार्गदर्शन प्राप्त कर सकें। इस योजना के प्रचार प्रसार हेतु सुनियोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों हेतु सुझाव व सम्मतियां भी प्रस्तुत की गयी हैं।

(घ) मनोविज्ञानशाला–एक परिचय का प्रकाशन :–

मनोविज्ञान शाला एवं मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्रो द्वारा किये जाने वाले विभिन्न मनोवैज्ञानिक सेवाओं से जन सामान्य को परिचित कराने के उद्देश्य से "मनोविज्ञानशाला–एक परिचय" नामक ब्रोशर का प्रकाशन 1994–95 में कराया गया है। इसकी 5000 प्रतियाँ प्रकाशित कर प्रदेश के माध्यमिक विद्यालयों, मनोविज्ञान केन्द्रों, विभागीय अधिकारियों तथा जन सामान्य में प्रचार प्रसार हेतु वितरित किया गया। इसमें मनोविज्ञानशाला तथा केन्द्रों द्वारा किये जाने वाले कार्यो जैसे निर्देशन कार्य प्रशिक्षण कार्य, राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा सम्बन्धी कार्य, शोध तथा परियोजना सम्बन्धी कार्यो के सम्बन्ध में जानकारी दी गयी है।

(ङ) राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा–राज्य स्तरीय परीक्षाफल का प्रकाशन :–

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा – राज्य स्तरीय का परीक्षाफल जिसमें 435 छात्र–छात्राएं सफल हुए, का प्रकाशन कर 250 प्रतियाँ तैयार करायी गयी और उन्हें सफल छात्र–छात्राओं, सम्बन्धित विद्यालयों मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्रों तथा विभाग के अधिकारियों को वितरित की गयी।

8. अध्ययन वृत्त

वर्ष 1994–95 से एक नवीन कार्यक्रम आरम्भ किया गया है। इससे इस संस्था के तकनीकी अधिकारी तथा डी.जी.पी. प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए तथा पठन–पाठन में प्रेरणा प्राप्त हुई। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत निम्नलिखित वार्ताएं आयोजित की जा चुकी हैं :–

(क) दिनांक 8–9–1994 को "डिप्रेशन–ए फीचर आफ माडर्न लिविंग" डा. आर.पी. सिंह, भूतपूर्व निदेशक, मनोविज्ञान शाला द्वारा प्रस्तुत की गयी।

(ख) दिनांक 24–10–94 को "अनुसंधान–संकल्पना और प्रक्रिया" यह वार्ता संस्थान के सहायक मनोवैज्ञानिक डा0 कमलेश तिवारी द्वारा प्रस्तुत की गयी।

(घ) दिनांक 28–1–1995 को संस्था के वरिष्ठ शोध मनोवैज्ञानिक श्री के.पी. सिंह द्वारा "चिन्ता – स्वरूप और परामर्श" विषय पर वार्ता प्रस्तुत की गयी।

(ङ) दिनांक 8–3–1995 को प्रयाग विश्वविद्यालय के प्रोफेसर श्री राम सकल पाण्डेय द्वारा "मनोविज्ञान में विज्ञानवाद" विषय पर वार्ता प्रस्तुत की गयी।

9. अन्य कार्य

मनोविज्ञानशाला तथा इसके अधीनस्थ केन्द्रों द्वारा सत्र 1994–95 में शैक्षिक संस्थाओं, अभिकरणों से सहयोग, सहकार सम्बन्धी जो कार्य किया वे निम्नवत हैं:–

(1) आकाशवाणी द्वारा आयोजित "नन्हें मुन्ने बालक और बस्ते का बोझ" नामक परिचर्या में मण्डलीय मनोवैज्ञानिक आगरा ने भाग लिया।

(2) लखनऊ केन्द्र के व्यावसायिक परामर्शदाता द्वारा लिखित लेख "व्यावसायिक प्रबन्धन और रोजगार के अवसर" स्वतन्त्र भारत हिन्दी दैनिक समाचार पत्र में प्रकाशित हुआ।

(3) मण्डलीय मनोवैाानिक लखनऊ ने सी.एम.एस. लखनऊ द्वारा रवीन्द्रालय में आयोजित एन.टी.एस. क्विज् प्रतियोगिता के आयोजन में सहयोग प्रदान किया।

(4) विशेष शिविर :–

(क) झांसी केन्द्र के सहायक मनोवैज्ञानिक द्वारा मानस मानसिक विकलांग विद्यालय सीपरी – झांसी में दिनांक 9–12–1994 को विशेष शिविर लगाकर मन्द बुद्धि बालकों का परीक्षण किया गया व उनके अभिभावकों को आवश्यक मनोवैज्ञानिक निर्देशन दिया गया।

(ख) चार द्विवसीय विशेष शिविर लगाकर सेंट प्लावर स्कूल झांसी के 3+ से 10+ आयु वर्ग के 29 सामान्य बच्चों का विस्तृत मनोवैज्ञानिक परीक्षण किया गया व उनके अभिभावकों को आख्या सहित आवश्यक सुझाव दिये गये।

(5) झको टार .शिप, फूलपुर, इलाहाबाद में संस्था के मनोवैज्ञानिकों ने 16 से 22 वर्ष के विद्यार्थियों वो निर्देशनार्थ मनोवैज्ञानिक अध्ययन किया।

(6) ग्रमोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट के शिक्षा विभाग (बी.एड./एम.एड.) के विद्यार्थियों ने संस्था में अकर निर्देशन की नवीन विधाओं की जानकारी प्राप्त की।

(7) निदेशक राशैप, संयुक्त शिक्षा निदेशक के आदेश अविहित पत्रांक दिनांक 10 नवम्बर, 1994 के अनुपालन में संस्था के तकनीकी कर्मचारियों द्वारा प्रदेश के जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों एवं रजकीय दीक्षा विद्यालयों से सम्बन्धित सूचनाओं के संकलन में सहयोग प्रदान किया गया।

(8) निदेशक, मनोविज्ञानशाला द्वारा माध्यमिक शिक्षा परिषद की बैठक, मान्यता समिति की बैठक एवं परीक्षा समिति की बैठक में समय-समय पर प्रतिभाग किया।

(9) म्मोदौर्बल्य व्यक्तियों की मनोचिकित्सा समय-समय पर मनोवैज्ञानिकों द्वारा प्रदान की जाती है।

हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषा विभाग
(राज्य हिन्दी संस्थान) वाराणसी

उत्तर प्रदेश शासन की विशिष्ट संस्था राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद के अन्तर्गत शिक्षा के उन्नयन हेतु अनेक संस्थाएं कार्यरत हैं। हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषा विभाग भी उनमें से एक है। यह विभाग हिन्दी शिक्षण के नवीनतम तकनीकों से शिक्षकों को परिचित कराते हुए राष्ट्रभाषा हिन्दी के स्तरोन्नयन हेतु प्रयत्नशील है। विभाग द्वारा शिक्षकों तथा छात्रोपयोगी शैक्षणिक साहित्य का सृजन भी किया जाता है। प्राथमिक स्तर से लेकर माध्यमिक स्तर तक भाषा शिक्षण की विविध समस्याओं के निराकरण हेतु कार्यरत इस संस्था का अपना विशिष्ट स्थान है।

यह संस्थान अपने समस्त कार्यो का सम्पादन प्रशिक्षण, शोध और प्रकाशन के रूप में करता है।

1. प्रशिक्षण –

1.1 प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के लिए :–

प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के भाषा – शिक्षण के क्षेत्र में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। बहुत से ऐसे अध्यापक भी हैं जिन्होंने बी.टी.सी. प्रशिक्षण के बाद भाषा शिक्षण विषयक व्यावहारिक निर्देशन नहीं प्राप्त किया है। शिक्षकों में प्रायः हिन्दी वर्तनी के प्रयोग उच्चारण, सुलेख एवं गद्य–पद्य शिक्षण के क्षेत्र पर अनेक शंकाएं हैं। इन सभी के समाधान हेतु संस्थान द्वारा त्रिदिवसीय हिन्दी–शिक्षण स्तरोन्नयन पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन जिले के विकास क्षेत्र पर किया जाता है। वर्ष 1994–95 में इलाहाबाद के 28 विकास खंडों में इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इलाहाबाद जिले के समस्त विकास क्षेत्रों में माह जुलाई 94 से फरवरी 95 तक विविध तिथियों में आयोजित इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में कुल 1675 शिक्षक, शिक्षिकाओं को प्रशिक्षित किया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम संस्थान के प्रवक्ताओं एवं अधिकारियों के तीन प्रशिक्षण दलों द्वारा 10 चक्रों में सम्पन्न किया गया।

1.2 पूर्व माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों/प्रधानाध्यापिकाओं के लिए :–

पूर्व माध्यमिक विद्यालय प्राथमिक विद्यालय तथा माध्यमिक विद्यालय के बीच की कड़ी हैं। इन्हें दोनों स्तरों से सम्बन्धित समस्याओं का ध्यान रखना पड़ता है। अतः इस स्तर पर आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मानक हिन्दी वर्तनी, हिन्दी उच्चारण, श्रुतलेख, सुलेख, रचना अभ्यास के साथ–साथ व्याकरण–शिक्षण पर

विशेष बल दिया जाता है। इस स्तर प्रर प्रशिक्षण के दौरान विविध विधाओं पर आदर्श पाठ योजना भी संस्थान के विशेषज्ञों द्वारा प्रस्तुत की जाती है। हिन्दी शिक्षण के उन विन्दुओं पर सामूहिक चर्चा भी होती है। जिनपर शिक्षकगण विशेष कठिनाई अनुभव करते हैं।

सत्र 1994–95 में बरेली जिला के जू.हा. स्कूलों के प्रधानाध्यापकों, प्रधानाध्यांपिकाओं की त्रिदिवसीय हिन्दी शिक्षण संबोध संगोष्ठी दो चक्रों में 23 से 25 नवम्बर 94 तक आयोजित की गई। कार्यक्रमों का आयोजन जिला प्रशिक्षण संस्थान, फरीदपुर, बरेली तथा राजकीय कन्या दीक्षा विद्यालय बरेली में किया गया प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 113 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

1.3 उच्च प्राथमिक विद्यालय के सहायक अध्यापक/अध्यापिकाओं के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम :–

पूर्व माध्यमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापक, प्रधानाध्यापिकाओं के प्रशिक्षण कार्यक्रम के साथ–साथ सहायक अध्यापकों के लिए भी त्रिदिवसीय हिन्दी प्रशिक्षण संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में वाराणसी जिले के पूर्व माध्यमिक विद्यालयों के कुल 153 हिन्दी शिक्षक, शिक्षिकाओं ने भाग लिया।

यह पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण कार्यक्रम 6 से 8 फरवरी 95 तथा 16 से 18 फरवरी 1995 तक चलाया गया।

1.4 स्नातक वेतनक्रम के शिक्षकों के लिए :–

माध्यमिक विद्यालयों में हिन्दी के प्रभावी शिक्षण हेतु स्नातक वेतन क्रम के अध्यापकों के पुनर्बोधात्मक हिन्दी शिक्षण स्तरोन्नयन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन राज्य हिन्दी संस्थान में किया गया। इस प्रशिक्षण संगोष्ठी में मिर्जापुर जिले के शिक्षक/शिक्षिकाओं ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम दो चक्रों में दिनांक 26 से 28 सितम्बर 1994 तथा 19 से 21 जनवरी 1995 तक चलाया गया।

उपर्युक्त समस्त प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सम्बन्धित प्रकरणों पर चक्रमुद्रित सारांश तथा संस्थान की त्रैमासिक पत्रिका "वाणी" एक हिन्दी वर्तनी उच्चारण आदि विषयों से सम्बन्धित साहित्य वितरित किया गया।

प्राप्त सुझाव :–

1. प्रायः सभी प्रशिक्षण कार्यक्रमों में अवधि बढ़ाने का सुझाव प्राप्त हुआ परन्तु अवधि बढ़ा देने से प्रशिक्षण परिव्यय में वृद्धि तो होगी ही साथ ही संस्थान के अन्य कार्यक्रम भी बाधित होंगे।
2. संस्थान में कुछ प्रकाशनों की पूर्व मुद्रित प्रतियाँ समाप्त हो चुकी हैं। प्रशिक्षणार्थी उन प्रतियों की मांग भी करते हैं। इस दृष्टि से वर्तनी, व्याकरण, उच्चारण दोष–निवारण आदि साहित्य का पुनः मुद्रण आवश्यक प्रतीत होता है।
3. "वाणी" पत्रिका की नियमित उपलब्धि की शिक्षकों द्वारा मांग की गयी। जो उसकी कम प्रतियों (1000) को देखते हुए सम्भव नहीं प्रतीत होती है।

2. कार्यशाला/विचार गोष्ठी :–

2.1 संस्थान में हिन्दी भाषा शिक्षण स्तरोन्नयन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के साथ–साथ विविध विषयों पर विचार गोष्ठियों तथा कार्यशालाओं का आयोजन भी किया जाता है। सत्र 1994–95 में निम्नलिखित कार्यशालाओं का आयोजन किया गया है।

1. **विषय**– हिन्दी भाषा के पाठ्य पुस्तकों में न्यूनतम अधिगम (प्राइमरी स्तर) विषयक चार दिवसीय कार्यशाला।

उद्देश्य –

इस कार्यशाला का उद्देश्य प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों को हिन्दी भाषा शिक्षण सम्बन्धी न्यूनतम अधिगम स्तर से तथा तत्संबंधी दक्षताओं से अवगत कराना है। जिससे शिक्षक हिन्दी भाषा–शिक्षण के समय उन दक्षताओं का उचित विकास छात्रों में कर सकें।

कार्य एवं सुझाव –

इस कार्यशाला का आयोजन दिनांक 18–1–95 से 19–1–95 तक राज्य हिन्दी संस्थान में किया गया। इस चतुर्दिवसीय कार्यशाला में तीन परामर्शियों सहित 20 विद्वान प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतिभागियों के सहयोग से कक्षा 1 से 5 तक की हिन्दी पाठ्य पुस्तकों में न्यूनतम अधिगम स्तर पर आधारित दक्षताओं को समेकित करते हुए उसके विकास के उपाय भी सुझाये गये। कार्यशाला की आख्या का प्रकाशन भी कराया जा रहा है।

2. **विषय** – हिन्दी की प्रमुख बोलियों (अवधी, भोजपुरी तथा ब्रजभाषा) में प्रचलित राष्ट्रीय एकता विषयक लोकगीतों का चयन।

उद्देश्य–

छात्रों तथा शिक्षकों में हिन्दी की प्रमुख बोलियों के प्रति अभिरुचि जागरित करना तथा उन्हें राष्ट्रीय एकता, देश प्रेम, सांस्कृतिक सद्भाव विषयक लोकगीतों से अवगत कराते हुए उनमें एकता एवं देश प्रेम की भावना भरना।

कार्य एवं सुझाव –

चार दिवसीय कार्यशाला में अवधी, भोजपुरी तथा ब्रजभाषा के दस–दस लोकगीतों का चयन किया गया। कार्यशाला का आयोजन 6 से 9 मार्च 95 तक किया गया जिसमें कुल छः परामर्शी विद्वानों ने प्रतिभाग किया।

परामर्शी विद्वानों का सुझाव था कि इसी प्रकार हिन्दी की अन्य बोलियों में प्रचलित लोकगीतों का चयन कर उन्हें प्रकाशित कराया गया। इससे हिन्दी की गरिमा उद्घाटित होगी तथा उसके प्रति अन्य भाषा भाषी भी आकर्षित होंगे।

शोध कार्य –

संस्थान के अधिकारियों एवं प्रवक्ताओं द्वारा कुल 7 शोध कार्य पूरे किये गये। शोध कार्य का विवरण निम्नवत् है :-

1. **शीर्षक –** प्राथमिक स्तर (कक्षा 1 से 5) की हिन्दी पाठ्य पुस्तकों में प्रयुक्त शब्दावली का अध्ययन।

उद्देश्य– हिन्दी–प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य प्राथमिक स्तर की पाठ्य पुस्तक ज्ञान भारती भाग 1,2,3,4,5 की शब्दावली का परीक्षण करना तथा यह देखना कि न्यूनतम भाषा अधिगम की दृष्टि से ये पुस्तकें निर्धारित कक्षा स्तर के अनुकूल हैं अथवा नहीं।

निष्कर्ष एवं सुझाव– पाठ्य पुस्तकों की औसत शब्द संख्या 10101 है, जो छात्रों के स्तरानुकूल है।कक्षा 1 तथा 2 की अपेक्षा कक्षा 3,4,5 के छात्रों को शब्द ज्ञान के अधिक अवसर सुलभ होते हैं। मात्रिक शब्दों की संख्या अमात्रिक शब्दों की अपेक्षा छः गुनी है यह स्थिति इस स्तर पर अच्छी समझी जाती है। शब्द रचना विविध जीवन मूल्य, विज्ञान एवं सांस्कृतिक ऐतिहासिक सन्दर्भ पर्याप्त मात्रा में है।

अभ्यास में दिये गये उपसर्ग, प्रत्यय आदि के समुचित अभ्यास द्वारा शब्द ज्ञान की वृद्धि की जानी चाहिए। चित्र एवं आवरण और अच्छे होने चाहिए।

2. **शीर्षक–** विज्ञान वर्ग (इंटरमीडिएट) के छात्रों में हिन्दी अध्ययन के प्रति बढ़ती हुई उदासीनता के कारकों का अध्ययन।

उद्देश्य– हिन्दी–शिक्षण स्तर को समुन्नत करना, विज्ञान वर्ग के छात्रों में हिन्दी अध्ययन के प्रति बढ़ती हुई उदासीनता के कारणों को खोजना तथा तदनुसार उनके समाधान हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।

निष्कर्ष एवं सुझाव– बच्चे हिन्दी की अपनी मातृभाषा समझते हुए उसके अध्ययन में उतनी सजगता नहीं बरतते। विज्ञान के अध्ययन में बच्चे अधिक समय देने के कारण भी इसकी उपेक्षा करते हैं। जबकि हिन्दी अध्ययन कर वे अधिक अंक प्राप्त कर सकते हैं। शिक्षक की ओर से भी हिन्दी शिक्षण को अधिक रोचक बनाने का प्रयास नहीं किया जाता। सांस्कृतिक और साहित्यिक कार्यक्रमों को विद्यालय में नियमित स्थान न देने के कारण भी छात्रों में हिन्दी के प्रति उपेक्षा भाव दिखाई पड़ता है।

अधिकांश शिक्षकों द्वारा मौखिक परीक्षा का प्रावधान करने पर बल दिया गया। छात्रों की गृह कार्य और उसकी जाँच करने के प्रति भी शिक्षकों में उदासीनता है। इससे हिन्दी अध्ययन के प्रति छात्रों की अभिरुचि दुष्प्रभावित होती है। हाईस्कूल में मौखिक भाषा परीक्षण का प्राविधान किया जाना चाहिए। व्याकरण शिक्षण एवं साहित्यिक कार्यक्रमों के संचालन पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

3–शीर्षक– माध्यमिक स्तर की अनिवार्य संस्कृत पाठ्य पुस्तकों में प्रयुक्त प्रत्ययों का अध्ययन।

उद्देश्य – सांस्कृतिक परम्पराओं एवं प्राचीन शास्त्रों के अध्ययन के लिए संस्कृत का सामान्य ज्ञान रखना सभी छात्रों के लिए आवश्यक है। संस्कृत शब्दावली के रचना विधान की जानकारी हिन्दी–शिक्षण के गुणात्मक विकास के लिए भी आवश्यक है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य संस्कृत प्रत्ययों का सम्यक ज्ञान कराना तथा संस्कृत शिक्षण के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करना है।

निष्कर्ष एवं सुझाव– हाईस्कूल तथा इंटर की पाठ्य पुस्तक से 146 प्रत्ययान्त पदों का चयन किया गया है जिसमें ल्यप् प्रत्यय का प्रयोग दोनों पुस्तकों में क्रमशः 35 तथा 38 बार किया गया है। इसी प्रकार क्त्वा, क्त, तुमुन तथा तव्यत् प्रत्ययों का प्रयोग किया गया है।

शिक्षकों को चाहिए कि वे संस्कृत शिक्षण के आरंभ में ही छात्रों को प्रत्यय सम्बन्धी सम्यक जानकारी दे दें। शिक्षण के समय उनके अभ्यास पर बल दें। उन्हें गृह कार्य भी दें तथा उनकी जांच करें।

4. शीर्षक– माध्यमिक स्तर की गद्य पाठ्य पुस्तकों में प्रयुक्त सामासिक पदों का अध्ययन।

उददेश्य – हिन्दी शिक्षण को सरल सुगम तथा प्रभावी बनाने के लिए समस्त पदों के प्रयोग की सम्यक जानकारी देना आवश्यक है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य हिन्दी शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए हिन्दी पाठ्य पुस्तकों के पाठों में प्रयुक्त समस्त पदों की एक वृहत सूची तैयार करना तथा उन्हें छात्रों एवं शिक्षकों को उपलब्ध कराना है।

निष्कर्ष एवं सुझाव– हाई स्कूल की प्रमुख गद्य पाठ्य पुस्तकों में कुल 235 तथा इंटरमीडिएट स्तर की पाठ्य पुस्तकों में 287 समस्त पदों का प्रयोग हुआ है। दोनों पाठ्य पुस्तकों में तत्पुरुष समास का प्रयोग सबसे अधिक हुआ है जिसकी संख्या क्रमशः 112 तथा 193 है। सबसे कम द्विगुसमास का प्रयोग है जो क्रमशः तीन तथा एक है। सभी समस्त पदों के उदाहरण पुस्तक में है। समस्त पद स्तरीय तथा भाषा ज्ञान में सहायक हैं।

समस्त पदों के प्रयोग उनके विग्रह तथा नाम निर्देशन में छात्रों द्वारा प्रायः त्रुटियां होती हैं अतः उनके शिक्षण के लिए शिक्षक को कुछ कक्षाएं अलग से लेनी चाहिए। छात्रों के ज्ञान का परीक्षण सत्रारंभ में ही कर लेना चाहिए। गृह कार्य आदि के रूप में समास का सम्यक अभ्यास कराना चाहिए।

5–शीर्षक– भाषा अधिगम को प्रभावी बनाने वाले कारकों का अध्ययन।

उद्देश्य – हिन्दी शिक्षकों को छात्रों के भाषिक अधिगम के प्रति सजग करना तथा शिक्षण अधिगम को अधिक प्रभावी बनाने वाले कारकों का पता लगाना। छात्रों तथा शिक्षकों को भाषा अधिगम की समस्याओं से अवगत कराना तथा उनका समाधान प्रस्तुत करना।

निष्कर्ष एवं सुझाव– भाषा शिक्षण अधिगम पर बच्चों को आवासीय सुविधा का धनात्मक प्रभाव पड़ता है। एकल परिवार तथा मध्यम आय वर्ग के छात्रों का भाषा अधिगम अधिक प्रभावी रहा। कक्षा के शैक्षिक

वातावरण, पुस्तकालयी सुविधा, सहगामी पाठ्य क्रियाएं भी भाषा अधिगम को प्रभावित करती हैं।

छात्रों को पुस्तकालय की सुविधा दी जानी चाहिए। उन्हें घर पर सहायक पुस्तकों, बाल पत्रिकाओं आदि को पढ़ने की सुविधा दी जानी चाहिए। परिवार में बैठने हेतु कुर्सी, मेज आदि की सुविधा का भी छात्रों के अध्ययन पर प्रभाव पड़ता है। अभिभावकों का ध्यान इस तथ्य की ओर रहना आवश्यक है।

6. शीर्षक– नव सृजित हिन्दी पाठ्य पुस्तकों (कक्षा–3 से 8) में प्रयुक्त अन्तः कथाओं में निहित मानवीय मूल्यों का अध्ययन।

उद्देश्य : छात्रों एवं शिक्षकों को उनकी पाठ्य पुस्तकों में निहित अन्तः कथाओं से परिचित कराना तथा शिक्षण कार्य की सुगम बनाना। अन्तः कथाओं में निहित मूल्यों एवं नैतिक सन्दर्भों से उन्हें अवगत कराना।

निष्कर्ष एवं सुझाव– अध्ययन के अन्तर्गत पाठ्य पुस्तकों से 20 अन्तःकथाओं का चयन किया गया है। शिक्षण के सुविधा के लिए अन्तःकथा का संक्षिप्त विवरण भी दिया गया है। ये अन्तःकथाएँ पुराणों, महाभारत, रामायण तथा जनश्रुतियों पर आधारित है। इन अन्तःकथाओं का ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्व है।

शिक्षकों को इन अन्तःकथाओं में निहित मूल्यों से छात्रों एवं शिक्षकों को अवगत कराना चाहिए और उनमें निहित त्याग, बलिदान, देश प्रेम एवं समाज सेवा आदि की भावना छात्रों में जागरित करनी चाहिए। मौखिक भाव प्रकाशन की दृष्टि से भी छात्रों को इन अन्तःकथाओं को सुनाने के लिए प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाना चाहिए।

7. शीर्षक – राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत चलाये जा रहे सेवारत शिक्षक अभिनवीकरण प्रशिक्षणों का हिन्दी शिक्षण पर प्रभाव एक अध्ययन।

उद्देश्य– राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत राष्ट्रीय स्तर पर अनेक प्रशिक्षणों का आयोजन क्षेत्रीय महाविद्यालयों द्वारा किया गया। उसके बाद इस प्रदेश के अनेक केन्द्रों पर इसका आयोजन किया गया। इस अध्ययन का उद्देश्य प्रदेश में चलाये गये प्रशिक्षणों के प्रभाव का मूल्यांकन करना तथा उनके क्रियान्वयन में आने वाली कठिनाइयों का अध्ययन करना एवं उन्हें निराकरण हेतु सुझाव प्रस्तुत करना है।

निष्कर्ष एवं सुझाव– प्रस्तुत शोध वाराणसी जनपद पर आधारित है। शिक्षकों ने सन्दर्भदाता के रूप में प्रशिक्षण लेने के बाद अपने विद्यालय में इस प्रशिक्षण का आयोजन अनिवार्य रूप से किया। किन्तु 60 प्रतिशत सामान्य शिक्षक अपने शिक्षण के बीच इसका उपयोग नहीं कर रहे हैं। 40 प्रतिशत शिक्षकों ने अपने शिक्षा कार्यक्रमों में परिवेशीय शिक्षा, जनसंख्या शिक्षा, छात्र केन्द्रित शिक्षा तथा मूल्यांकन की नयी विधाओं पर विशेष बल दिया है। ब्लैक बोर्ड अभियान, सबके लिए शिक्षा आदि

के कार्यक्रमों में 30 प्रतिशत शिक्षकों का योगदान बराबर मिल रहा है। राष्ट्रीय एकता एवं देश प्रेम तथा मूल्य केन्द्रित शिक्षा पर 70 प्रतिशत शिक्षकों द्वारा सक्रिय योगदान दिया जा रहा है। 30 प्रतिशत का योगदान नकारात्मक मिला।

सतत् प्रशिक्षण कार्यक्रम चला कर समस्त शिक्षकों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत चलाये गये कार्यक्रमों के प्रति अधिक सक्रिय बनाया जाय। इन शिक्षकों के लिए "फीड बैक" अनुसरण कार्यक्रम चलाना आवश्यक प्रतीत हो रहा है।

प्रकाशन – संस्थान का प्रकाशन अनुभाग, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, लखनऊ द्वारा अनुमोदित पाण्डुलिपियों का प्रकाशन कर प्रशिक्षण के अवसर पर प्रतिभागियों को वितरण करते हैं। इनकी प्रतियाँ शिक्षाधिकारियों, जनप्रतिनिधियों एवं स्थानीय समाचार पत्रों तथा पुस्तकालय को भी उपलब्ध करायी जाती है।

संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष त्रैमासिक पत्रिका "वाणी" का प्रकाशन किया जाता है। इसके अलावा छात्रों एवं शिक्षकों के लिए कतिपय लघु पुस्तिकाओं का प्रकाशन कराया जाता है। इनके द्वारा हिन्दी भाषा एवं साहित्य शिक्षण विषयक समस्याओं के समाधान का प्रयास किया जाता है। इसके अन्तर्गत निम्नलिखित प्रकाशन किये गये।

1. "वाणी" पत्रिका (त्रैमासिक)

अंक 69 एक हजार प्रतियाँ

अंक 70 एक हजार प्रतियाँ

अंक 71 एक हजार प्रतियाँ

अंक 72 एक हजार प्रतियाँ

2. राष्ट्रीय एकता विषयक कविताएँ : नेपाली तथा डोंगरी

इस लघु पुस्तिका में नेपाली तथा डोंगरी की राष्ट्रीय एकता विषयक कविताओं को संकलित कर उन्हें नागरी लिपि में भावानुवाद के साथ प्रकाशित किया गया। पुस्तिका में देश प्रेम, राष्ट्रीय एकता, नैतिक आदर्श, साम्प्रदायिक सद्भाव एवं भाषायी सौहार्द विषयक कविताएँ हैं। इस पुस्तिका के प्रकाशन का उद्देश्य हिन्दी भाषा भाषी छात्रों में नेपाली तथा डोंगरी के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करना तथा हिन्दीतर भाषा भाषी छात्रों में भाषामयी सौहार्द जागरित करना है। पुस्तिका की एक हजार प्रतियाँ मुद्रित करायी गयी हैं।

3. लघु शब्दकोश

गत वर्षो में ली गयी परियोजनाओं के अन्तर्गत हिन्दीतर भाषाओं के लघु शब्दकोश तैयार किये गये हैं। इन शब्दकोशों के प्रकाशन का उद्देश्य हिन्दीतर भाषा–भाषी शिक्षकों को हिन्दीतर भारतीय भाषाओं की शब्दावलियों तथा उनकी अर्थ प्रकृति से परिचित कराना एवं उनके प्रति आकर्षण उत्पन्न करना है। प्रस्तावित हिन्दीतर भारतीय भाषाओं के शिक्षण प्रशिक्षण के समय इन लघु शब्दकोशों का शैक्षिक उपयोग भी सुगमतापूर्वक

हो सकेगा। वर्तमान सत्र में निम्नलिखित शब्दकोशों का प्रकाशन एवं मुद्रण कार्य किया गया :–

1.	तेलुगु हिन्दी शब्दकोश	मुद्रित संख्या एक हजार प्रतियाँ
2.	हिन्दी–तमिल शब्दकोश	मुद्रित संख्या एक हजार प्रतियाँ
3.	कन्नड़–हिन्दी शब्दकोश	मुद्रित संख्या एक हजार प्रतियाँ

4. राष्ट्रीय एकता विषयक लोकगीत, भोजपुरी, अवधी तथा ब्रजभाषा

प्रस्तुत लघु पुस्तिका की एक हजार प्रतियां छपाई गयी हैं। इनके माध्यम से शिक्षक तथा शिक्षार्थियों में लोक भाषाओं के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करके उन्हें अपनी सामाजिक परम्पराओं एवं लोकधुनों में रचित लोकगीतों से परिचित करने तथा हिन्दी की समस्त बोलियों में राष्ट्रीय एकता विषयक लोकगीतों से अवगत कराना है। हिन्दीतर प्रदेशों के लोग भी हिन्दी भाषा के आन्तरिक सौन्दर्य का अनुभव उसके लोकगीतों के माध्यम से कर सकेंगे।

5–अन्य प्रकाशन–

विभाग द्वारा सम्पादित प्रशिक्षण कार्यक्रमों, शोध कार्यों तथा महत्वपूर्ण प्रकाशनों से अवगत कराने के उद्देश्य से हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषा विभाग– विवरणिका भी प्रकाशित की गयी है।

संस्थान द्वारा किये गये अन्य कार्य–

1. नव भारती भाग–3 (कक्षा छ की हिन्दी पाठ्य पुस्तको) के पुर्नलेखन हेतु कार्यशालाओं का आयोजन कक्षा 1 से कक्षा 6 तक की हिन्दी पाठ्य पुस्तकों की रचना तथा उनका प्रकाशन हो चुका है। अप्रैल 94 से अगस्त 94 तक "नव भारती भाग–3" की रचना हेतु चार कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। प्रत्येक कार्यशाला चार–चार दिन की आयोजित की गयी। पाण्डुलिपि तैयार हो चुकी है।

2. **एस.ओ.पी.टी. कार्यक्रम के अन्तर्गत सन्दर्भदाता शिक्षकों एवं कोर्स डायरेक्टरों का प्रशिक्षण–** विभाग के निर्देशानुसार प्राथमिक शिक्षकों में शिक्षण के प्रति विशेष अभिरुचि उत्पन्न करने तथा उनके शिक्षण कार्यक्रम को अधिकाधिक प्रभावी बनाने के उद्देश्य से राष्ट्रीय स्तर पर चलाये गये विशेष अनुस्थापन प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत संस्थान में दिनांक 25–7–94 इसे 2–6–94 तक सात दिवसीय प्रशिक्षण संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसके अन्तर्गत कुल 53 सन्दर्भदाताओं एवं कोर्स डायरेक्टरों को प्रशिक्षित किया गया।

3. **प्रशासनिक प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभाग** – शासन द्वारा चलाये जा रहे नये विकास कार्यों तथा ग्राम पंचायत आदि के नये कार्यक्रमों से अवगत कराने तथा उसको जनसाधारण में सम्प्रसारित करने के उद्देश्य से 1 फरवरी से 8 फरवरी तक प्रस्तुत कार्यक्रम का आयोजन जवाहर भवन, लखनऊ में किया गया था, जिसमें विभाग के आदेशानुसार निदेशक, श्रीमती आशा कुमारी तथा प्रकाशन प्रशिक्षण एवं शोध अधिकारी श्रीमती सी.डी.सिंह ने प्रतिभाग कर कार्यक्रम को सफल बनाने में योगदान दिया।

अंग्रेजी तथा अन्य विदेशी भाषा विभाग

(आंग्ल भाषा शिक्षण संस्थान, उ.प्र.)
इलाहाबाद

आंग्ल भाषा शिक्षण संस्थान, उ.प्र., इलाहाबाद का मुख्य उद्देश्य प्रदेश में अंग्रेजी भाषा शिक्षण का स्तरोन्नयन रहा है। अपने उद्देश्यों के अनुरूप यह संस्थान सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण, कार्यशाला, गोष्ठी, क्रियात्मक शोध, अध्ययन परियोजना और शिक्षणोपयोगी साहित्य के निर्माण के द्वारा प्रदेश में अंग्रेजी शिक्षण का स्तर ऊँचा उठाने में सदैव संलग्न रहा है। पूर्व वर्षों की भांति 1994–95 का वर्ष संस्थान के लिए व्यस्तता का रहा और वर्ष पर्यन्त विविध शैक्षिक क्रिया कलाप चलते रहे। सम्पूर्ण वर्ष में सम्पादित किए गये कार्यों का संक्षिप्त विवरण निम्नवत् है।

1. सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण –

(1) चार मासीय अंग्रेजी भाषा डिप्लोमा कोर्स प्रशिक्षण –

चारमासीय डिप्लोमा कोर्स प्रशिक्षण का उद्देश्य सेवारत अंग्रेजी शिक्षकों, शिक्षिकाओं को अंग्रेजी शिक्षण की नवीनतम विधियों में पुर्नप्रशिक्षण प्रदान कर उनकी व्यावसायिक दक्षता में अभिवृद्धि करना और उनका संदर्भ व्यक्तियों के रूप में उपयोग करते हुए अंग्रेजी शिक्षण के स्तर को उन्नत करना है। इस प्रशिक्षण में उन्हें अंग्रेजी भाषा के ध्वनि विज्ञान तथा विभिन्न शिक्षण विधियों का गहन प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। अंग्रेजी शिक्षण के सैद्धान्तिक आधार के अतिरिक्त उन्हें क्रियात्मक कक्षा–शिक्षण में भी प्रशिक्षित किया जाता है ताकि उनके द्वारा किया जाने वाला कक्षा–शिक्षण प्रभावी बन सके।

आख्यागत वर्ष में दो डिप्लोमा कोर्स प्रशिक्षण (63वां एवं 64वां) आयोजित किये गये जिनमें राजकीय तथा अराजकीय दोनों प्रकार के संस्थाओं के शिक्षकों, शिक्षिकाओं को आमन्त्रित किया गया था। 63वां कोर्स दिनांक 8–8–94 को प्रारम्भ हुआ और दिनांक 6.12.94 को समाप्त हुआ। इस कोर्स में कुल 10 शिक्षकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। 64वें कोर्स की अवधि दिनांक 6.1.95 से 5.5.95 तक रही। इसमें कुल 20 अध्यापकों की प्रतिभागिता थी। दोनों की कोर्सों में सीधी भर्ती से चयनित प्रशिक्षणार्थी भी थे। डिप्लोमा कोर्स की लिखित क्रियात्मक तथा मौखिक परीक्षाएं रजिस्ट्रार, विभागीय परीक्षाऐं, उ.प्र., इलाहाबाद द्वारा संचालित की गई।

(2) अंग्रेजी वाचन प्रवीणता कोर्स –

अंग्रेजी वाचन प्रवीणता कोर्स का उद्देश्य ऐसे स्नातक तथा परास्नातक उपाधिधारी युवकों/युवतियों को जो विदेश जाने के इच्छुक हैं अथवा वांचित अंग्रेजी में प्रवीणता प्राप्त कर ऐसे व्यवसाय चुनना चाहते हैं जिनमें

वांचित अंग्रेजी के ज्ञान की आवश्यकता है, वांचित अंग्रेजी में प्रशिक्षण प्रदान करना है। इस प्रशिक्षण में लघु व्याख्यान, ग्रुप डिस्कशन, घटना–वर्णन, अंग्रेजी भाषा का ध्वनि शास्त्र तथा अन्य सम्प्रेषण परक क्रियाओं द्वारा प्रतिभागियों को अंग्रजी के वांचित पक्ष में कौशल प्रदान किया जाता है। यह कोर्स 50 दिवसीय है और प्रतिदिन दो घण्टे का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। इस कोर्स में ऐसे अभ्यर्थियों को प्रवेश दिया जाता है जो कम से कम स्नातक हों और इण्टर स्तर पर अंग्रेजी विषय उपहृत किए हों। आख्यागत वर्ष में दो कोर्स आयोजित किए गये। 36वें कोर्स में 30 अभ्यर्थियों का चयन किया गया जिनमें से 13 अभ्यर्थी अन्तिम परीक्षा में सम्मिलित हुए। इस कोर्स की अवधि 31.8.94 से 26.11.94 तक थी। 37वां कोर्स दिनांक – 17.1.95 को प्रारम्भ हुआ और दिनांक 22.4.95 को समाप्त हुआ। इस कोर्स हेतु चयनित 30 अभ्यर्थियों में से 18 अभ्यर्थी अन्तिम परीक्षा में सम्मिलित हुए और सफल घोषित किए।

(3) छः दिवसीय लघु प्रशिक्षण –

यह कोर्स माध्यमिक विद्यालयों की हाईस्कूल कक्षाओं तथा जूनियर हाईस्कूल की कक्षा 6,7,8 में अंग्रेजी पढ़ाने वाले शिक्षकों, शिक्षिकाओं के लाभार्थ आयोजित किया जाता है। इसका उद्देश्य दैनन्दिन कक्षा–शिक्षण में उत्पन्न समस्याओं के संदर्भ में शिक्षकों, शिक्षिकाओं से विचार विमर्श करना तथा शिक्षण अधिगम को अधिक प्रभावी बनाने के दिशा में व्यावहारिक सुझाव देना है। साथ ही उन्हें गद्य पद्य रचना, व्याकरण आदि के पढ़ाने की विधियाँ बतायी जाती हैं।

छात्रों में भाषा कौशलों का समन्वित विकास कैसे क्रिया जाय इस ओर भी शिक्षकों का ध्यान आकृष्ट किया जाता है। आख्यागत वर्ष में प्रदेश के चार जनपदों (देवरिया, मुरादाबाद, अल्मोड़ा, हरिद्वार) को लघु प्रशिक्षण के आयोजन हेतु चुना गया था।

उपर्युक्त प्रशिक्षण श्रृंखला का प्रथम शिविर देवरिया जनपद मुख्यालय पर राजकीय इण्टर कालेज देवरिया में आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण शिविर में कुल 18 शिक्षकों ने प्रतिभाग किया। प्रशिक्षण शिविर की अवधि 22.8.94 से 27.8.94 तक थी।

दूसरा प्रशिक्षण शिविर दिनांक–3.10.94 से 8.10.94 तक हरिद्वार जनपद मुख्यालय पर आयोजित किया गया था और प्रशिक्षण के संचालन के लिए संस्थान से 3 प्रशिक्षक भेजे गये थे। परन्तु उत्तराखण्ड राज्य के निर्माण हेतु संघर्षरत आन्दोलनकारियों तथा पुलिस के बीच मुजफ्फरनगर में हुई वारदात के फलस्वरूप हरिद्वार में भी शान्ति व्यवस्था भंग हो चुकी थी और जिलाधिकारी के आदेशानुसार दिनांक 3.10.94 से 8.10.94 तक सभी शिक्षण संस्थाऐं बन्द कर दी गई थीं। ऐसी स्थिति में लघु प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित न हो सका।

तीसरा प्रशिक्षण शिविर मुरादाबाद जनपद मुख्यालय पर दिनांक 12.12.94 से 17.12.94 तक आयोजित किए जाने हेतु पत्र जिला विद्यालय निरीक्षक, मुरादाबाद को प्रेषित किया गया था। जिला विद्यालय निरीक्षक मुरादाबाद ने उपरोक्त तिथियां संसोधित करते हुऐ दिनांक 26.12.94 से 31.12.94 तक प्रशिक्षण आयोजित किए जाने की सूचना दी। संशोधित तिथियों में प्रशिक्षण के आयोजन हेतु इस संस्थान के विशेषज्ञ जब मुरादाबाद पहुंचे तो ज्ञात हुआ कि आमन्त्रण पत्र शिक्षकों को ठीक ढंग से समय से प्रेषित नहीं किए गये थे। अतः अध्यापक

उपस्थित नहीं हो सके। जिला विद्यालय निरीक्षक की अनुपस्थिति में कोई भी उत्तरदायी अधिकारी के उपस्थित न रहने के कारण विशेषज्ञों को कोई मार्ग दर्शन न मिल सका। फलतः उन्हें वापस लौटना पड़ा।

चौथा प्रशिक्षण को अल्मोड़ा जनपद मुख्यालय पर आयोजित किया जाना था उत्तराखण्ड राज्य के निर्माण के समर्थन में दीर्घकाल तक जनान्दोलन जारी रहने तथा शिक्षण संस्थाओं के बन्द रहने के कारण आयोजित न किया जा सका।

2–कार्यशाला / गोष्ठी –

(1) कार्यशाला

इलाहाबाद नगर के क्षेत्र के इण्टर कालेजों में अंग्रेजी पढ़ाने वाले प्रवक्ताओं की एक कार्यशाला दिनांक – 7.3.95 से 9.3.95 तक आयोजित की गई। कार्यशाला में कुल 28 प्रतिभागी सम्मिलित हुए। कार्यशाला का विषय "माध्यमिक स्तर पर कविता शिक्षण", कार्यशाला के उद्घाटन के पश्चात् उसके उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कार्यशाला की संयोजिका कु. मुक्ता मणि ने अपने कार्य पत्रक द्वारा बताया कि कविता क्या है, उसका पाठ्यक्रम में समावेश किन उद्देश्यों से है? उन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु किन शिक्षण विधियों एवं रणनीतियों का प्रयोग कक्षा शिक्षण में किया जा सकता है। उन्होंने स्पष्ट किया कि गद्य एवं पद्य की प्रकृति में अन्तर है। अतः पाठन विधियों में भी अन्तर होना चाहिए। कविता का विशेष गुण गीतात्मकता होने के कारण कविता–वाचन के महत्व एवं उसकी उपयुक्त विधि पर भी प्रकाश डाला गया। कविता में आए नए एवं कठिन शब्दों को समझाना, विषय वस्तु एवं अन्तर्निहित अर्थों को किस प्रकार छात्र, छात्राओं के सहयोग से प्रश्नोत्तर विधि से कक्षा में स्पष्ट किया जाय, इन बातों पर विशेष प्रकाश डाला गया।

प्रतिभागियों को चार समूहों में विभाजित किया गया। "हाईस्कूल इंगलिश रीडर" की समस्त आठ कविताओं में से प्रत्येक समूह को दो–दो कविताओं पर बताई गई विधियों के अनुसार विचार विमर्श कर प्रदर्शन पाठ प्रस्तुत करने को कहा गया। प्रदर्शन पाठों पर विचार विमर्श एवं टिप्पणियां हुई। प्रदर्शन पाठों में विशेष ध्यान भूमिका, वातावरण निर्माण, नए शब्दों अथवा शब्द समूहों का शिक्षण एवं विषय वस्तु तथा अन्तर्निहित अर्थों को समझाने पर दिया गया। अन्त में कविताओं के पाठ–संकेतों का भी निर्माण किया गया।

(2) विचार गोष्ठी –

पूर्व वर्षों की भांति आख्यागत वर्ष में भी अनुमोदित कार्यक्रमानुसार संस्थान द्वारा दिनांक 9.2.95 से 11.2.95 तक अंग्रेजी शिक्षकों, प्रशिक्षकों तथा अंग्रेजी शिक्षण विशेषज्ञों की एक त्रिदिवसीय गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी का विषय था – "माध्यमिक स्तर पर मौखिक भाषा कौशलों का विकास"। इस गोष्ठी में विभिन्न जनपदों के इण्टर कालेजों तथा विशिष्ट संस्थानों के प्रतिभागियों को आमन्त्रित किया गया था। गोष्ठी में कुल 60 विद्वानों ने प्रतिभाग किया।

गोष्ठी का उद्घाटन डा. कृष्णावतार पाण्डेय, निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उ.प्र., लखनऊ के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। डा. राजनाथ प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय

ने, की नोट ऐडेस प्रस्तुत किया। गोष्ठी के समापन समारोह के मुख्य अतिथि थे डा. आर. के. नायडू, प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय। गोष्ठी में कुल 12 स्तरीय पत्रक प्रस्तुत किये गये।

गोष्ठी में तीन दिन तक विस्तृत एवं गहन विचार विमर्श हुआ जिसमें प्रतिभागी विद्वानों ने अपने बहुमूल्य सुझाव प्रस्तुत किये। प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुत संस्तुतियों का सार–संक्षेप निम्नवत् हैः–

(1) शब्दों तथा वाक्य संरचनाओं के शिक्षण में वाचन की ही आधार बनाया जाना चाहिए ताकि छात्र शुद्ध वाक्य संरचनाओं तथा शब्द समूहों के प्रयोग की आदत विकसित कर सकें।

(2) कक्षा में छात्रों के सम्मुख सरल निर्देशों के माध्यम से अधिकतम अंग्रेजी प्रस्तुत की जाय ताकि वे इस भाषा का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त कर सकें।

(3) कक्षा विशेष के पाठ्यक्रम का अनुसरण करने में पर्याप्त लचीलापन होना चाहिए। इससे कक्षा में ही मौखिक दक्षताओं के अभ्यास हेतु पर्याप्त समय उपलबध हो सकेगा।

(4) प्रत्येक स्तर पर शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए ताकि अध्यापक गण अपने भाषा ज्ञान को समृद्ध कर सकें तथा वाचन एवं लेखन दोनों में कुशलता अर्जित कर सके।

(5) भाषा प्रयोगशालाओं की स्थापना की जानी चाहिए ताकि छात्र अच्छी अंग्रेजी सुनने का अवसर प्राप्त कर सकें तथा विशेषज्ञों के प्रश्नों का उत्तर दे सकें।

(6) गृह परीक्षाओं में 20 अंक मौखिक परीक्षा हेतु आवण्टित किए जाने चाहिए ताकि छात्र मौखिक कौशलों को विकसित करने हेतु प्रोत्साहन पा सके।

(7) समूह में विचार विमर्श, समस्याओं का हल करना, भाषाई खेल आदि क्रियायें पाठ्य–क्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए ताकि छात्र शिक्षकों के निर्देशन में अंग्रेजी के प्रयोग का अधिकाधिक अवसर प्राप्त कर सकें।

(8) माध्यमिक स्तर पर प्रशिक्षित अध्यापकों को ही अंग्रेजी पढ़ाने का दायित्व सौंपा जाना चाहिए।

3. परियोजना / शोध / अध्ययन

आख्यागत वर्ष में सम्पादित शोध, परियोजनाओं का संक्षिप्त विवरण में निम्नवत् है :–

(1) शीर्षक– उच्च प्राथमिक स्तर पर अंग्रजी पढ़ाने वाले शिक्षकों की अंग्रेजी विषय में दक्षता का अध्ययन।

उद्देश्य – उच्च प्राथमिक स्तर पर अंग्रेजी पढ़ाने वाले शिक्षकों की अग्रेजी विषय में दक्षता का अध्ययन कर उनके अंग्रेजी भाषा ज्ञान स्तर में वृद्धि हेतु अपेक्षित सुझाव प्रस्तुत करना।

प्रायः यह देखा गया है कि उच्च प्राथमिक स्तर पर अंग्रेजी उन शिक्षकों द्वारा पढ़ाई जा रही है जो एक ओर तो अंग्रेजी विषय में विशिष्ट योग्यता नहीं रखते और दूसरी ओर उनकी स्वयं की

भाषा काफी दोषपूर्ण है। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक है कि अंग्रेजी विषय में उनकी दक्षता का सही ज्ञान प्राप्त किया जाय जिससे इससे पूर्व कि वे उच्च प्राथमिक स्तर पर अंग्रेजी शिक्षण के कार्य को उन्हें अंग्रेजी के क्षेत्र में प्रशिक्षित कर उचित मार्ग दर्शन प्रदान किया जा सके।

(2) **शीर्षक**– इण्टर स्तर पर छात्र, छात्राओं की अंग्रेजी भाषा सम्बन्धी दक्षता का अध्ययन।

उद्देश्य : इण्टर स्तर पर छात्रों की अंग्रेजी भाषा विषयक त्रुटियों का अध्ययन कर उन्हें दूर करने हेतु सुझाव देना ताकि उनकी भाषागत दक्षता को बढ़ाता जा सके।

इण्टरमीडियट परीक्षा में अंग्रेजी भाषा में उत्तीर्ण छात्रों का गिरता हुआ प्रतिशत इस बात का प्रमाण है कि हमारे विद्यार्थियों को न तेा इस भाषा के शब्दों के प्रयोग का समुचित ज्ञान है और न ही इस भाषा के व्याकरण का। अतः इस बात की आवश्यकता महसूस की गई कि उनके शब्द प्रयोग से सम्बन्धित त्रुटियों का पता लगाया जाय और उसके आधार पर उन्हें दूर करने के उपाय सुझाये जायें। यह अध्ययन इण्टर स्तर पर छात्रों की 500 लिखित उत्तर पुस्तिकाओं के आधार पर किया गया है।

(3) **शीर्षक** – जूनियर हाई स्कूल स्तर पर प्रियोजीशन्स का शिक्षण।

उद्देश्य – इस परियोजना के मुख्य उद्देश्य हैः–

(1) जूनियर हाईस्कूल के छात्रों को उनके पाठ्यक्रम में सम्मिलित "प्रियोजीशन्स" का सम्यक् ज्ञान कराना।

(2) इस स्तर पर शिक्षण करने वाले शिक्षकों के लिए अतिरिक्त सन्दर्भ सामग्री प्रस्तुत करना।

प्रायः देखा गया है कि छात्र, छात्रायें ऊँची कक्षाओं में पहुंच जाने पर भी प्रियोजीशन्स के प्रयोग में अशुद्धियां करते हैं। प्रियोजीशन्स का क्षेत्र व्यापक है। अतएव जब तक किसी प्रियोजीशन्स का सम्यक् ज्ञान विद्यार्थी को नहीं होगा तब तक वह उसके विविध अर्थो में प्रयोग को नहीं समझ सकेगा। किसी प्रियोजीशन्स का सम्बोध भलीभांति छात्र को स्पष्ट हो जाना इस बात पर निर्भर करता है कि उसका शिक्षण किस प्रकार किया जा रहा है। यदि विद्यार्थी जू.हा. स्कूल स्तर पर प्रियोजीशन्स के प्रयोग की सम्यक समझ लेगा तो वह उनके प्रयोग में त्रुटियां नहीं करेगा और इस स्तर पर प्राप्त यह ज्ञान आगे के लिए आधार बन जायेगा। अस्तु यह अनुभव किया गया कि एक ऐसी सामग्री प्रस्तुत की जाये जो जूनियर हाई स्कूल के छात्रों के लिए हितकर होने के साथ इस स्तर पर अंग्रेजी शिक्षण करने वाले अध्यापकों के लिए संदर्भ सामग्री के रूप में उपयोग की जा सके। इस परियोजना में प्रियोजीशन्स के शिक्षण के सम्बन्ध में अनेक महत्वपूर्ण सुझाव दिये गये हैं।

(4) शीर्षक– भाषायी खेलों द्वारा भाषा कौशलों का विकास–

शिक्षक संदर्शिका

उद्देश्य(1) माध्यमिक स्तर के शिक्षकों को भाषा शिक्षण में खेलों के महत्व का ज्ञान कराना।

(2) विभिन्न स्तरों पर विभिन्न कौशलों के विकास में खेलों के महत्व का ज्ञान कराना।

(3) इस बात का ज्ञान कराना कि भाषा की कक्षा में किस प्रकार 'भाषायी खेलों का' आयोजन किया जाय कि शिक्षण अधिक प्रभावी बन सके।

(4) खेलों का संकलन प्रस्तुत करना ताकि अध्यापक आवश्यकतानुसार खेलों का चयन कर सकें।

भाषा – अधिगम का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि छात्र भाषा का स्वयं प्रयोग करें। उनमें सीखने की बलवती इच्छा हो। अपने सहयोगियों के साथ स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना हो। साथ ही सीखने में एक दूसरे का सहयोग एवं सीखी जाने वाली भाषा में पारस्परिक क्रिया कलाप हो। ये सभी बातें अंग्रेजी भाषा शिक्षण में भाषायी खेलों के उपयुक्त समावेश से संभव है। खेल भाषा अधिगम प्रक्रिया को अत्यन्त प्रभावी बनाते हैं। अतः अंग्रेजी शिक्षकों को इन खेलों, उनके प्रकारों का ज्ञान, उनका स्तर आदि की आवश्यकतानुसार चयन, कक्षा में उनके सुचारू रूप से आयोजन का ज्ञान अति आवश्यक है। इसी आवश्यकता का अनुभव कर इस संदर्शिका का निर्माण किया गया है।

(5) शीर्षक– हाईस्कूल स्तर पर शब्द भण्डार का शिक्षण एवं विस्तार–

उद्देश्य – अंग्रेजी शिक्षक को शब्दों के विस्तारण एवं संदर्भ के साथ उनके प्रयोग की महत्ता का ज्ञान कराना ताकि वह छात्रों को मान शब्दार्थ बताकर ही संतुष्ट न हो जाय।

आम धारणा है कि अधिक से अधिक शब्दों एवं शब्दकोश में दिए गए उनके अर्थ की जानकारी द्वारा ही भाषा पर अच्छा अधिकार संभव है। किन्तु ऐसा नहीं है। एक समिति शब्द भण्डार द्वारा भी भाषा में अनन्त अभिव्यक्ति हो सकती है। आवश्यकता उस शब्द भण्डार के उचित प्रयोग की है। अधिकांश शिक्षक शब्दार्थ के आगे नहीं जाते जब कि शब्द भण्डार का विस्तार मुख्यतः पाठ्य पुस्तक पढ़ाते हुए साथ–साथ ही करना समीचीन है। अंग्रेजी भाषा में संदर्भ के अनुसार ही शब्दों का चयन भाषाभिव्यक्ति को सहज बनाता है। यह परियोजना हाई स्कूल पाठ्य पुस्तक के विभिन्न पाठों में समाहित शब्दों पर आधारित है।

4. प्रकाशन

लेशन्स इन स्पोकेन इंगलिश भाग – 1, 2

उपरोक्त पुस्तक की 5000 प्रतिया प्रकाशित कराई गई हैं ताकि सेवारत अंग्रेजी अध्यापकों को मार्गदर्शन हेतु उपलब्ध कराई जा सके।

श्रव्य–दृश्य और शिक्षा प्रसार विभाग

वर्ष 1994–95 में विभाग द्वारा सम्पादित कार्यक्रमों का विवरण

इस विभाग द्वारा वर्ष 1994–95 के लिये प्रस्तावित सभी कार्यक्रम लगभग पूर्ण किये जा चुके हैं। सम्पन्न किये गये कार्यो की आख्या भी समय–समय पर भेजी जाती रही है। वर्ष में पूर्ण किये गये कार्यो का शीर्षक वार विवरण निम्नवत् हैः–

1. प्रशिक्षण

1. डायट के तकनीकी विभाग के शिक्षकों का श्रव्य शिक्षा में प्रशिक्षणः–

जिला शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थानों को सभी प्रकार के शैक्षिक कार्यक्रमों के प्रशिक्षण के संसाधन केन्द्र के रूप में दायित्व निर्वहन करने का भार सौपा गया है। इन केन्द्रों के शिक्षकों एवं प्रवक्ताओं को श्रव्य दृश्य यंत्रों के संचालन, अनुरक्षण तथा शिक्षा में सहायक सामग्री के रूप में प्रयोग करने की विधि का 10 दिवसीय प्रशिक्षण देने का प्राविधान किया गया है। आख्यागत वर्ष में दिनांक 18.8.94 से 27.8.94 तक 10 दिन का प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण में कुल 10 अध्यापकों/प्राध्यापकों को आहूत किया गया परन्तु डायट केन्द्र–उन्नाव, ललितपुर, इटावा, फर्रुखाबाद और मैनपुरी से कुल 5 शिक्षकों ने भाग लिया।

1.2. उच्च प्राथमिक विद्यालयों के प्रधान अध्यापकों/अध्यापिकाओं का श्रव्य दृश्य तकनीकी में प्रशिक्षण :–

जनपद गोरखपुर, फैजाबाद और बांदा के उच्च प्राथमिक विद्यालयों के प्रधान अध्यापकों/अध्यापिकाओं को श्रव्य दृश्य तकनीकी में क्रमशः दिनांक 24.10.94 से 29.10.94 तक, 21.11.94 से 26.11.94 तथा 13.2.95 से 18.2.95 तक का 6–6 दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया। इस प्रशिक्षण में एक फेरे में एक जनपद के कुल 25 अध्यापकों को प्रशिक्षण करने का लक्ष्य रखा गया था परन्तु गोरखपुर जनपद से 24, फैजाबाद से 25 और बांदा से 19 प्रशिक्षणार्थी प्रशिक्षण में उपस्थित हुए। इस प्रकार आख्यागत वर्ष में कुल 68 प्रधान अध्यापकों और प्रधानाध्यापिकाओं को प्रशिक्षित किया गया। बलिया जनपद का कार्यक्रम माह सितम्बर, 1994 के सम्पन्न करना प्रस्तावित था परन्तु अपरिहार्य कारण बस यह कार्यक्रम सम्पन्न नहीं किया जा सका।

2. कार्यशाला/विचार गोष्ठी

विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों के अनुरक्षण की विधि निर्धारण विषय से सन्दर्भित एक कार्यशाला/विचार गोष्ठी का आयोजन दिनांक 9.8.94 से 11.8.94 तक कार्यालय परिसर में किया गया। कार्यशाला में कुल 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया। विषय विशेषज्ञ के रूप में श्री इन्द्रपाल यादव प्रवक्ता रा.जी.आई., इलाहाबाद ने

सहभागिता की। इस कार्यशाला/विचार गोष्ठी के समापन के दिन जो विचार उभर कर सामने आये उनके अनुश्रवण की निम्नलिखित विधियों को अपनाने की ओर संकेत किया गया।

1. मूल्यांकन विधि

(क) निरीक्षणात्मक विधि

(ख) परीक्षणात्मक विधि

(ग) प्रेक्षपण विधि

(घ) प्रचारात्मक विधि

2. अन्य विधि

(क) निर्देश विधि

(ख) परामर्श विधि

(ग) पुनर्बोधन प्रशिक्षण, कार्यशाला गोष्ठी

अनौपचारिक शिक्षा के सफलता पूर्वक प्रचार–प्रसार के प्रभावशाली माध्यमों की खोज हेतु "सुनो–गुनो" शीर्षक पर आधारित विषय–वस्तुओं के संकलन हेतु दिनांक 22.3.95 से 25.3.95 तक दूसरी कार्यशाला सम्पन्न किया गया। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में प्रचार–प्रसार के ऐसे सशक्त आडियो माध्यमों का चयन करना रहा जो ग्रामीण क्षेत्र में निरक्षर लोगों को साक्षर करने हेतु उत्प्रेरणा दे सके। इस कार्यशाला में आडियो/क्रियाकलापों से सम्बधित रेडियो स्टेशन, इलाहाबाद, स्थानीय शहर में इस क्षेत्र में कार्यरत स्वयंसेवी संस्थाओं के सफल कलाकर विषयों के संकलन के विद्वान तथा प्रचार–प्रसार कार्यक्रमों संलग्न कुशल कार्यकर्ता के रूप में कुल 36 प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया। इस विचार गोष्ठी में उपस्थित विद्वानों कलाकारों तथा प्रचार–प्रसार कार्य में सलग्न कार्यकर्ताओं द्वारा यह विचार व्यक्त किया गया कि ग्रामीणों को आकर्षित करने हेतु शैक्षिक सम सामयिक विषयों पर आधारित नुक्कड़, नाटक, लोकगीत, कजरी, विरहा और नौटंकी तथा कठपुतली शैली पर आडियो कैसेट का निर्माण किया जाय जो अत्यधिक आकर्षक एवं प्रभावशाली रहेगा।

तीसरी कार्यशाला दिनांक 26.10.94 से 28.10.94 तक राजकीय ग्रामीण पुस्तकालयों की स्थिति सुधार के उपाय तथा वर्तमान परिवेश में अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में इन पुस्तकालयों की भूमिका से सम्बन्धित विषय पर आमंत्रित की गई। इस कार्यशाला के आयोजन का लक्ष्य उन बिन्दुओं की खोज करना रहा है जिनसे ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित इस विभाग द्वारा संचालित राजकीय ग्रामीण पुस्तकालय (1400) की दशा सुधारने तथा उनका बेहतर उपयोग करने की दिशा में कुछ व्यवस्था दी जा सके।

विचारगोष्ठी में जो विचार उभरकर आये हैं उनसे स्पष्ट है कि इन पुस्तकालयों की वर्तमान समय में पहले से भी अधिक उपयोगिता बढ़ गयी है। अस् इन पुस्तकालयों के पुनर्गठन की आवश्यकता है और इन

पुस्तकालयों में ऐसे नवीनतम साहित्य और पत्र–पत्रिकायें सुलभ कराई जांय जिनसे अनौपचारिक शिक्षा, समग्र साक्षरता के कार्यक्रम को बल मिले और यह पुस्तकालय अन्य विभागों के क्रिया–कलापों के लिये संदर्भ केन्द्र के रूप में विकसित हो सके। इस सम्बन्ध में एक संकलित रिपोर्ट भी शासन को भेजी जा चुकी है।

अनौपचारिक शिक्षा और समग्र साक्षरता के व्यापक प्रचार–प्रसार को लक्ष्य करके दिनांक 6.3.95 से 12.3.95 तक बलिया जनपद के नवानगर और सीयर विकास क्षेत्रों में जनजागरण का कार्यक्रम चलाया गया। इस कार्यक्रम में कुल 3 प्रचार वाहनों का प्रयोग करके 14 चलचित्र प्रदर्शन, 12 सभायें, 10 गोष्ठियां और 11 सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के दिन सुबह 12 प्रभातफेरियां निकाली गईं तथा विद्यालय के बच्चों और ग्रामीण नवयुवकों को सम्मिलित करके खेलकूद का भी आयोजन किया गया। खेलकूद तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों में कुल 200 बच्चों ने भाग लिया। यह कार्यक्रम बलिया जनपद के दोनों विकासक्षेत्रों के 68 गांवों में संचालित किया। सम्पूर्ण कार्यक्रम से लगभग 400000 लोग लाभन्वित हुये हैं जिन क्षेत्रों में प्रभात फेरियां निकाली गईं वहां लगभग 10,000 जनजागरण साहित्य तथा कार्यक्रम की 5000 प्रतियां निःशुल्क वितरित की गई।

3. शोध / अध्ययन / सर्वेक्षण

विगत वर्षो में श्रव्य–दृश्य शिक्षा तकनीकी में प्रशिक्षित उच्च प्राथमिक विद्यालय के प्रधान अध्यापक / अध्यापिकाओं द्वारा कक्षा शिक्षण में श्रव्य–दृश्य उपादानों के प्रयोगों के सम्बन्ध में आख्यागत वर्ष में जनपद उन्नाव के उच्च प्राथमिक विद्यालय सदरवालर और उच्च प्राथमिक विद्यालय किला, नगरक्षेत्र तथा रायबरेली जनपद के जू.हा.स्कूल बेलीगंज, जिला शिक्षा प्रशिक्षण संस्थान रायबरेली एवं वाराणसी जनपद में बालिका जू. हा. स्कूल उमरहा, राजकीय आदर्श विद्यालय सारनाथ के कक्षाओं में एक सर्वेक्षण करके यह पता लगाया गया कि श्रव्य–दृश्य तकनीकी शिक्षा में प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापक कितनी मात्रा उपादानों का कक्षा में प्रयोग करते हैं। इस सर्वेक्षण एवं अध्ययन से स्पष्ट हुआ है कि केवल 50 प्रतिशत अंध्यापक ही इन उपादानों का कक्षा शिक्षण में प्रयोग करते हैं अस्तु इन अध्यापकों को अनुश्रवण के आधार पर उत्प्रेरित करने की आवश्यकता है।

दूसरा सर्वेक्षण वाराणसी मंडल के जनपदों में स्थित राजकीय ग्रामीण पुस्तकालयों के सम्बन्ध में किया गया इस मंडल के कुल 124 पुस्तकालयों के सम्बन्ध में सर्वेक्षण प्रपत्र भेजकर स्थिति की जानकारी प्राप्त की गई। इनमें मात्र 50 पुस्तकालयों से प्रपत्र वापस प्राप्त हुये हैं। 35 पुस्तकालयों से प्रचार–प्रसार कार्यक्रम में संलग्न कार्यकर्ताओं को भेजकर स्थिति की जानकारी प्राप्त की गई।

इस सर्वेक्षण से प्राप्त जानकारी के आधार पर स्पष्ट हुआ कि इन पुस्तकालयों की स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गई है। यह सभी राजकीय ग्रामीण पुस्तकालय मृतप्राय हो चुके हैं। अस्तु इनकी गुणवत्ता वृद्धि तथा स्थिति में सुधार लाने की दृष्टि से दिनांक 26.10.94 से 28.10.94 तक तीन दिवसीय कार्यशाला / विचार गोष्ठी आहूत की गई। इस विचार गोष्ठी में वाराणसी मंडल के सभी जनपदों के दो परियोजना अधिकारियों और उपजिला विद्यालय निरीक्षकों ने भाग लिया। तीन दिन तक विस्तृत विचार–विश्लेषण के उपरान्त यह सुनिश्चित किया गया कि अनौपचारिक शिक्षा और समग्र साक्षरता के सफलता के लिये तथा विकास के विभिन्न कार्यक्रमों में संलग्न ग्रामीण स्तर के कार्यकर्ताओं के लिये संदर्भ केन्द्र के रूप में इन पुस्तकालयों को विकसित करने की

अत्यधिक आवश्यकता है। अस्तु इन पुस्तकालयों का पुर्नगठन किया जाना चाहिये। इसी विचार के अनुरूप पुस्तकालयों के पुनर्गठन हेतु शासन को रिपोर्ट भेजी गई है।

परियोजना :–

आख्यागत वर्ष में आडियों कैसेट के निर्माण का कार्य प्राथमिकता के आधार पर सम्पन्न किया गया। वर्ष में अनौपचारिक शिक्षा के पाठ्यक्रम पर आधारित 4 पाठ्यक्रमों पर एक कैसेट 60 मिनट का तथा आदिवासियों के 8 गीतों का एक कैसेट 60 मिनट का तैयार किया गया। साथ ही सुनो–गुनों कार्यशाला के आधार पर विषयों का चयन करके नाटक शैली पर आधारित चार कैसेट तैयार किये गये है।

5. विशिष्ट कार्यक्रम :–

आख्यागत वर्ष में फिल्म लाइब्रेरी में कुल 340 फिल्में निर्गत की गयी हैं और सदस्यों की संख्या 446 रही है इस वर्ष कोई नई फिल्म नहीं क्रय की गई है। फिल्मों के अनुरक्षण, निर्गमन, वापसी और जांच का कार्य नियमित चलता रहा है। फिल्मों के अनुरक्षण हेतु दो एयर कन्डीशनर क्रय करने का प्रस्ताव शासन को भेजा गया है।

अनौपचारिक शिक्षा और समग्र साक्षरता के प्रचार–प्रसार कार्यक्रम के अन्तर्गत आख्यागत वर्ष में मीरजापुर, सिद्धार्थनगर, इटावा, फिरोजाबाद, गोरखपुर, बांदा, वाराणसी, बलिया, गाजीपुर, सुल्तानपुर, फैजाबाद और महराजगंज जनपद प्रस्तावित थे, इन्ही जनपदों के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचार–प्रसार के विभिन्न माध्यमों द्वारा ग्रामीण जनता को उत्प्रेरणा का व्यापक कार्यक्रम चलाया गया। आडियो कैसेट के आकर्षक एवं प्रभावशाली गीतों, लघु नाटकों तथा चलचित्रों के प्रदर्शन, व्यक्तिगत जनसम्पर्क और जन सभाओं, विचारगोष्ठियों के माध्यम द्वारा प्रचार–प्रसार का कार्यक्रम सम्पन्न किया गया। इस कार्यक्रम के आख्यागत वर्ष में कुल लगभग बीस लाख लोग लाभान्वित हुये हैं।

प्रचार–प्रसार के इसी तारतम्य में माघ मेला क्षेत्र प्रयाग में दिनांक 10 जनवरी, 1995 से 16 जनवरी, 1995 तक शिक्षा शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में देश–विदेश से आये हुये स्नानार्थियों, धर्मावलम्बियों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं के लाभार्थ नित्य प्रति पुस्तकालय, वाचनालय, सेवा शैक्षिक प्रदर्शनी तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों अथवा चलचित्र प्रदर्शन का आयोजन किया जाता रहा है। इस वर्ष शिविरावधि में कुल 32 दिन पुस्तकालय वाचनालय सेवा, 18 दिन शैक्षिक धार्मिक चलचित्र प्रदर्शन, 2 दिन कठपुतली कार्यक्रम, एक विराट कवि सम्मेलन एक नुक्कड़ नाटक (ध्वनि–प्रकाश पर आधारित) तथा 10 समसामयिक विषयों पर वार्तायें आयोजित की गई। मेले में लगभग एक माह तक शैक्षिक लघु प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। शिविर के इन विभिन्न क्रियाकलापों से लगभग 500000 लोग लाभान्वित हुये हैं। स्नानार्थियों एवं धर्मावलम्बियों के हितार्थ कुम्भ पर्वोत्सव, माघमहात्म्य, तथा विभाग के क्रियाकलापों से सम्बन्धित पाकेटबुक, फोल्डर्स और विभागीय साहित्य की कुल 10,000 प्रतियां निःशुल्क वितरित की गई।

6. प्रकाशन

नवज्योति पत्रिका का जून 1994 अंक, सितम्बर 94 का शिक्षक दिवस अंक, दिसम्बर 94 अंक और मार्च 95 अंक प्रकाशित हो चुका है।

लोक साहित्य निर्माण (नवसाक्षरोपयोगी साहित्य) हेतु प्रस्तावित चार पुस्तकें – श्रीमद्भागवत की शिक्षाप्रद कहानियां भाग–2, सुभाषचन्द्रबोस–एक प्रेरक व्यक्तित्व, माखन लाल चतुर्वेदी का राष्ट्रीय कवितायें और फलों की खेती की पाण्डुलिपियां तैयार हैं परन्तु धन की व्यवस्था न होने के कारण प्रकाशित नहीं की जा सकी हैं।

जनजागरण साहित्य हेतु प्रस्तावित साहित्य (पाकेट बुक, फोल्डर्स आदि) की 5000 प्रतियां प्रकाशित कराई गई और जनजागरण कार्यक्रम बलिया में प्रयुक्त की गई।

श्रव्य–दृश्य शिक्षा प्रशिक्षण के अन्तर्गत प्रस्तावित विभिन्न शैक्षिक अनुश्रवण विधियों के संकलन पुस्तिका की पाण्डुलिपियां तैयार हैं। अनुमोदन के पश्चात प्रकाशित कराया जायेगा।

पाठ्यक्रम और मूल्यांकन विभाग, लखनऊ

पाठ्यक्रम और मूल्याकंन विभाग की स्थापना वर्ष 1991 में की गई है। इन विषय का मुख्य उददेश्य प्रदेश की प्रारंभिक, माध्यमिक और शिक्षेक शिक्षा में गुणात्मक सुधार और सतत एवं व्यापक मूल्याकंन को प्रभावी बनाने हेतु विभिन्न आयामों की पहचान करना है। इस विभाग के मुख्य कार्य निम्नवत् है :–

1. प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक और शिक्षक शिक्षा के वर्तमान पाठ्यक्रमों का अध्ययन, विश्लेषण तथा पुनरीक्षण हेतु विचार विमर्श।
2. प्रदेश में प्रचलित वर्तमान मूल्यांकन प्रणालियों की समीक्षा।
3. शिक्षण अधिगम में पाठ्य सहगामी क्रियाओं का योगदान।
4. विभिन्न प्रदेशों में प्रचलित विभिन्न स्तरीय पाठ्यक्रम परीक्षा व्यवस्था तथा मूल्याकंन प्रणालियों का तुलनात्मक अध्ययन।
5. पाठ्यक्रम, पाठ्य सामग्री तथा मूल्यांकन विधा से संबंधित समस्याओं पर क्रियात्मक अनुसंधान।
6. पाठ्यक्रम में स्थानीय पाठ्यांश तथा शैक्षिक नवाचारों के समावेश की संभावनाओं की खोज।
7. सतत् और व्यापक मूल्याकंन के क्रियान्वयन तथा तद्संबंधी समस्याओं का निराकरण।

वर्ष 1994–95 में विभाग द्वारा सम्पादित कार्यों का संक्षिप्त विवरण निम्नवत् है:–

1. उत्तर प्रदेश की शिक्षा कार्ययोजना विषयक गोष्ठी

शिक्षा विभाग के विभिन्न निदेशालयों द्वारा निर्मित उत्तर प्रदेश की शिक्षा की राज्य कार्ययोजना के अंतिम स्वरूप प्रदान करने के लिए दिनांक 10 तथा 11 जून 1994 को योजना भवन लखनऊ के सभागार में एक राज्य स्तरीय गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस गोष्ठी में भारत सरकार तथा प्रदेश सरकार के शैक्षिक प्रशासकों सहित शिक्षा विभाग के अधिकारी, स्वैच्छिक संगठनों के प्रतिनिधि, तथा विशिष्ट संस्थानों के विशेषज्ञों ने प्रतिभाग किया। गोष्ठी से प्राप्त सुझावों और संस्तुतियों की सभाहित कर कार्ययोजना को अन्तिम स्वरूप प्रदान किया गया। इस कार्य योजना को भारत सरकार के अनुमोदनार्थ प्रदेश सरकार को प्रेषित किया गया। कार्य योजना की प्रतियां आवश्यक कार्यवाही हेतु शासन तथा सभी शिक्षा निदेशालयों की भी उपलब्ध करायी गयी।

2. माध्यमिक शिक्षकों के सेवारत प्रशिक्षण पाठ्यक्रम का निर्माण विषयक कार्यशाला

जून 1994 में जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान भीमताल नैनीताल में एक पांच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशालाा में कक्षा 9 और 10 के पढ़ाने वाले सेवारत शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया। प्रदेश की आवश्यकता के अनुरूप हिन्दी, विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान, शारीरिक शिक्षा और खेलकूद तथा साहित्यिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों से संबंधित बिन्दुओं पर व्यापक विचार विमर्श करते हुए 5 समूहों में पाठ्यक्रम निर्माण का कार्य किया गया।

3. सबके लिए शिक्षा वातावरण सृजन विषयक प्रशिक्षण

यूनीसेफ की सहायता से प्रदेश के 5 जनपदों–सिद्धार्थनगर, मिरजापुर, अल्मोडा, बाराबंकी, लखनऊ में सबके लिए शिक्षा का वातावरण सृजित करने तथा 6 वर्ष की आयु के सभी बच्चों को विद्यालय में प्रवेश दिलाने के लिए चार स्तरीय प्रशिक्षण की व्यवस्था की गयी। राज्य स्तर पर दिनांक 20 तथा 21 मई, 1994 को मास्टर्स ट्रेनर्स का प्रशिक्षण आयोजित किया गया। जनपद स्तर पर 24 तथा 25 मई, 1994 को ब्लाक स्तर पर 25 से 30 मई, 1994 तथा विद्यालय संकुल स्तर पर 26 मई से 10 जून, 1994 तक विभिन्न अधिकारियों, शिक्षकों अभिकर्मियों तथा जनप्रतिनिधियों के प्रशिक्षण आयोजित किये गये। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ तथा यूनीसेफ का सक्रिय सहयोग रहा।

4. प्राथमिक शिक्षको का विशेष अनुस्थापन कार्यक्रम

भारत सरकार की सहायता से एन.सी.ई. आर.टी. नई दिल्ली के विश्व निर्देशन में प्राथमिक शिक्षकों के विशेष अनुस्थापन कार्यक्रम के अन्तर्गत दिनांक 10 से 16 मई, 1994 को 4 प्रशिक्षण केन्द्रों पर तथा 27 मई से 2 जून 1994 तक 8 प्रशिक्षण केन्द्रों पर रिसोर्स पर्सन्स प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इस प्रकार कुल 12 प्रशिक्षण केन्द्रों पर 625 रिसोर्स पर्सन्स के प्रशिक्षण की व्यवस्था की गयी। जिसमें कुल 569 रिसोर्स पर्सन्स ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण को क्रियात्मक, व्यावहारिक तथा प्रभावी बनाने हेतु प्रशिक्षण से संबंधित साहित्य तैयार किया गया जिससे प्रशिक्षण के समय प्रतिभागियों को उपलब्ध कराया गया।

5. शिक्षा बिना बोल के प्रो. यशपाल कमेटी की रिपोर्ट पर आख्या का निर्माण

समिति राष्ट्रीय स्तर पर प्रो. यशपाल की अध्यक्षता में गठित समिति शिक्षा बिना बोझ के की रिपोर्ट तथा उस पर राष्ट्रीय सलाहकार समिति की सिफारिशों को लागू करने की संभाव्यता की जांच करने के लिए गठित दल की रिपोर्ट के आलोक में प्रदेश की आख्या तैयार की गयी और इसका प्रकाशन कराकर इसे शासन तथा सभी संबंधित संस्थाओं को उपलब्ध कराया गया।

6. प्रो. हरिकृष्ण अवस्थी समिति के प्रतिवेदन से संबंधित आख्या

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा सार्वजनिक परीक्षाओं में अनुचित साधनों की प्रवृति को रोकने परीक्षा और मूल्यांकन पद्धति में सुधार तथा शैक्षिक स्तरोत्तयन हेतु डा. हरि कृष्ण अवस्थी की अध्यक्षता में गठित समिति के प्रतिवेदन पर आख्या तैयार की गयी और उक्त समिति की सिफारिशों के क्रियान्वयन पर कार्यवाही करने हेतु शासन को उपलब्ध करायी गयी।

7. बेस लाइन सर्वेक्षण

विश्व बैंक द्वारा पोषित उ.प्र. सभी के लिये शिक्षा परियोजना से आच्छादित प्रदेश के 10 जनपदों में से गोरखपुर और बाराबंकी जनपद में सर्वेक्षण का कार्य किया गया। प्रत्येक जनपद के 45 प्राथमिक विद्यालयों में 9 उपकरणों को प्रशासित कर आकड़ों का संकलन किया गया। इस सर्वेक्षण कार्य की विश्व बैंक के मिशन के प्रोफेसर एन.के. जागीरा ने गोरखपुर जनपद में स्थल निरीक्षण कर सराहना की।

8. अन्य कार्य

1. यूनीसेफ तथा उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ के सहयोग से शिक्षक दिवस 5 सितम्बर 1994 को प्राथमिक शिक्षकों द्वारा लिये जाने वाले संकल्प विषयक पोस्टर का निर्माण।
2. शिक्षक समाख्या योजना के अन्तर्गत प्राथमिक शिक्षक संघ के पदाधिकारियों, नेहरू युवक केन्द्र के समन्वयकों तथा बेसिक शिक्षा अधिकारियों के प्रशिक्षण में सहयोग।
3. विश्व बैंक पोषित उ.प्र. सभी के लिए शिक्षा परियोजना के अन्तर्गत प्रकाशित होने वाली संकल्प पत्रिका की सामग्री के निर्माण तथा सम्पादन में सहायता।
4. अरबी, फारसी, मद्रासी तथा संस्कृत पाठशालाओं में प्रचलित पाठ्यक्रमों का तुलनात्मक अध्ययन।
5. बी.टी.सी. तथा डिप्लोमा इन टीचिंग (उर्दू माध्यम अलीगढ़ मुस्लिम विश्व विद्यालय) का तुलनात्मक अध्ययन।
6. अलीगढ़ मुस्लिम विश्व विद्यालय के डिप्लोमा इन टीचिंग (उर्दू माध्यम) तथा फलाहेदीन एजूकेशनल सोसाइटी लखनऊ के एस.यू.टी. पाठ्यक्रम का तुलनात्मक अध्ययन।

शैक्षिक प्रशासन और नियोजन विभाग

1. प्रशिक्षण

संविधान के 73–74 वें संशोधन के संदर्भ में बेसिक शिक्षा अधिनियम में संशोधन की सम्भावनायें। (3 दिवसीय)

(अ) संविधान के 73वें 74वें संशोधन के संदर्भ में पंचायती राज व्यवथा के अन्तर्गत जिला पंचायत, क्षेत्रीय पंचायत, ग्राम स्तरीय पंचायत एवं ग्राम शिक्षा समितियों को शिक्षा के क्षेत्र में समाज की सहभागिता की दृष्टि में काफी अधिकार एवं कर्तव्य शासन स्तर से पंचायती राज व्यवस्था के अन्तर्गत दिये जाने का प्राविधान है। परिषद द्वारा इसका गहनता से अध्ययन इस उद्देश्य से किया जा रहा है कि बेसिक शिक्षा परिषद जो कि स्वात्तय सेवी संस्था है और सभी परिषदीय विद्यालयों का नियंत्रण बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा किया जाता है अतः पंचायती राज व्यवस्था के अन्तर्गत क्या परिवर्तन अपेक्षित है इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु प्रशिक्षण किया जाना प्रस्तावित था।

इस व्यवस्था के विभिन्न पक्षों पर परिषद द्वारा गहनतम अध्ययन किया जा रहा है और प्रशिक्षण साहित्य निर्मित किया जा रहा है।

2. कार्यशाला / विचारगोष्ठी

माध्यमिक शिक्षा के निजीकरण के संबंध में सहयोग की सम्भावनायें

(ब) माध्यमिक शिक्षा के निजीकरण के संबंध में सहयोग की सम्भावनाएं वर्तमान सरकार की यह नीति निर्धारित की गयी कि माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में और सहयोग की सम्भावनाएं तलाशी जांय। केवल सरकार के माध्यम से सम्पूर्ण शिक्षा की व्यवस्था प्रभावी ढंग से की जाने में वित्तीय दृष्टिकोण से सम्भव प्रतीत नहीं हो रही है। इस विषय क्षेत्र में गहनता से अध्ययन किया जा रहा है। और प्रयास यह है कि ऐसी व्यवस्था विकसित की जाय जो प्रभावी हो। विचारों का क्रम जारी है।

3. शोध / अध्ययन / सर्वेक्षण

(स) **शैक्षिक प्रशासन की दृष्टि से शैक्षिक उन्नयन के लिए दिशावाद**

इस शोध अध्ययन का प्रस्ताव वर्ष 1994–95 में प्रस्तावित किया गया था। जिस पर अध्ययन एवं शोध की प्रक्रिया के निर्धारण से संबंधित कार्यवाही चल रही है तथा शोध अध्ययन हेतु आवश्यक टूल्स का निर्माण किया जा रहा है।

4. परियोजना

विभिन्न प्रदेशों की राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा किये गये नवाचारात्मक कार्यो का संकलन

(द) विभिन्न प्रदेशों की राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा किये गए नवाचारात्मक कार्यो की जानकारी हेतु उनसे संकलन मांगा गया है जिससे उस प्रकार की योजनाएं चलायी जा सकें। इससे विभिन्न परिषदों एवं उत्तर प्रदेश की परिषद में सम्वाद का सिलसिला प्रारम्भ होगा जिससे आपस में विचार विमर्श और नये शैक्षिक कार्यो की जानकारी हो सकेगी।

अतिरिक्त कार्य :

1. विश्व बैंक परियोजना द्वारा संचालित प्राथामिक शिक्षा के लिए छात्रों की वर्तमान शैक्षिक सम्प्राप्ति एवं विभिन्न कारक जो शैक्षिक सम्प्राप्ति को प्रभावित करते हैं, के लिए परिषद द्वारा दो जनपदों के बेस लाइन सर्वेक्षण का कार्य सम्पन्न किया गया और शेष छः जनपद जिनके सर्वेक्षण का कार्य गोविन्द बल्लभ पंत इस्टीट्यूट ऑफ सांइसेज, इलाहाबाद तथा यू.पी. डिस्को लखनऊ के कार्यो का समन्वय किया गया। देश में एन.सी.ई.आर.टी. के अतिरिक्त प्रथम बार राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद लखनऊ द्वारा यह मैहत्वपूर्ण विशिष्ठ कार्य सम्पन्न किया गया है। यह प्रदेश के लिए गरिमा की बात है। इस कार्य की प्रशंसा विश्व बैंक मिशन द्वारा भी की गयी।

व्यवसायपरक शिक्षा विभाग

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद का व्यवसायपरक शिक्षा विभाग वर्ष 1991 से मुख्यालय, उत्तर प्रदेश, लखनऊ में कार्यरत है। इस विभाग के मुख्य उद्देश्य व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय एवं प्रदेशीय आवश्यकताओं एवं अपेक्षाओं के अनुरूप गुणात्मक उन्नयन हेतु शोध, सर्वेक्षण, परियोजना, पाठ्यक्रम निर्माण और विकास आदि कार्यों का सम्पादन करना है। प्रमुख कार्य अधोलिखित हैं:–

(i) प्रदेश स्तर पर जनपदीय व्यावसायिक सर्वेक्षण।

(ii) व्यावसायिक शिक्षा के महत्वपूर्ण संघटकों पर आधारित शोध/सर्वेक्षण/अध्ययन/परियोजना।

(iii) सामान्य व्यावसायिक पाठ्यांशो पर आधारित पाठ्यक्रम निर्माण/विकास।

(iv) ट्रेड आधारित पाठ्य पुस्तकों तथा शिक्षण संदर्शिकाओं की रचना।

(v) शिक्षकों का सेवा–पूर्व सेवाकालीन प्रशिक्षण मंजूषाओं का प्रणयन।

(vi) व्यावसायिक विद्यालयों में व्यावसायिक निर्देशन सेवा।

2. जनपदीय व्यावसायिक शिक्षा सर्वेक्षण :–

प्रदेश के 60 जनपदों में दो चरणों में जनपदीय व्यावसायिक शिक्षा सर्वेक्षण का दायित्व राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, लखनऊ, उत्तर प्रदेश वहन करता है। प्रथम चरण के 20 जनपदों में सर्वेक्षण कार्य पूर्ण हो चुके हैं तथा 12 जनपदों की सर्वेक्षण आख्याएँ मुद्रित कराई जा चुकी हैं।

द्वितीय चरण के 40 जनपदों में से 23 जनपदों में सर्वेक्षण कार्य पूर्ण हो चुका है तथा आख्याएँ तैयार कर ली गई हैं। शेष 17 जनपदों में सर्वेक्षण कार्य प्रगति पर है।

3. व्यावसायिक शिक्षा–एक सर्वेक्षण:–

माध्यमिक शिक्षा निदेशालय द्वारा परिषद के व्यवसायपरक शिक्षा विभाग को शोध/अध्ययन/सर्वेक्षण हेतु एक प्रकरण आवंटित किया गया जिसका शीर्षक "व्यावसायिक शिक्षा–एक अध्ययन" था। उक्त विषय पर विभाग के शोध प्राध्यापकों, शोध सहायकों द्वारा एक विस्तृत प्रपत्र विकसित किया गया।

उक्त प्रपत्र प्रदेश में संचालित व्यावसायिक शिक्षा के विद्यालयों में से 70 चयनित विद्यालयों को भेजा गया। ये विद्यालय बालक/बालिका, नगर/ग्रामीण क्षेत्र से संबंधित है। विद्यालयों द्वारा प्राप्त कराये गये प्रपत्रों में उल्लिखित सूचना के आधार पर प्रदत्त विश्लेषण तथा आख्या लेखन का कार्य किया जा रहा है।

4. विश्वबैंक परियोजना सबंधी कार्य में सहयोग/सहभागिताः—

विभाग के शोध प्राध्यापक श्री एस.एस. अवस्थी तथा शोध सहायक श्रीमती प्रेमबाला शुक्ला ने संदर्भदाता प्रशिक्षण संदर्शिका के निर्माण में योगदान किया। श्री शशि शंकर अवस्थी ने जुलाई, अगस्त, 1994 में एन.सी. ई.आर.टी. नई दिल्ली में आयोजित कार्यशालाओं में प्रतिभाग किया तथा प्रशिक्षण मंजूषा के निर्माण में सहयोग किया।

विश्व बैंक परियोजना के अन्तर्गत 'आधारित अध्ययन' प्रशिक्षण कार्यशाला (एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली के सौजन्य से) में माह अक्टूबर, नवम्बर, 1994 में श्री शशि शंकर अवस्थी शोध प्राध्यापक तथा शोध सहायक श्री एस.एन. सिंह ने गोरखपुर जनपद के तीन विकास खण्डों (चरगांवा, कौड़ीराम तथा गोला) में स्थित 45 चयनित विद्यालयों में उपलब्धि परीक्षणों के संचालन हेतु जनवरी/फरवरी 1995 में फील्ड सुपरवाइजर के रूप में काम किया।

5. यूनीसेफ परियोजना संबंधी कार्यों में सहयोग/सहभागिताः—

प्रदेश के छः चयनित जनपदों (अल्मोड़ा, लखनऊ, बाराबंकी, सोनभद्र, सिद्धार्थनगर तथा मीरजापुर) में सुरूचिपूर्ण अधिगम विषयक कार्यकलापों के क्रियाकलापों के क्रियान्वयन में राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद की ओर से श्री अवस्थी, श्रीमती प्रेमबाला शुक्ला, श्रीमती रीता जोशी व श्री एस.एन. सिंह ने सक्रिय रूप से सहभाग एवं सहयोग किया।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान

शिक्षा एक सतत् एवं क्रमिक प्रक्रिया है जिसमें शिक्षा के सर्वीकरण के साथ गुणवत्ता की सम्प्राप्ति हमारे सभी शैक्षिक प्रयासों का केन्द्र बिन्दु रही है। राष्ट्रीय एवं प्रदेशीय विकास के परिप्रेक्ष्य में जनपदीय शैक्षिक विकास के विवेकपूर्ण संयोजन की दिशा में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान की स्पापना एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

प्रारंभिक शिक्षा के प्रसार तथा उसमें गुणात्मक उन्नयन की दृष्टि से केन्द्र पुरोनिधानित योजनान्तर्गत प्रदेश के सभी जनपदों में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान की स्पाथना क्रमिक चरणों में की जा रही है। अध्यापक शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा तथा प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों से सम्बन्धित अधिकारियों एवं अभिकर्मियों के शैक्षिक स्तर में सुधार तथा उन्नयन के उदेदश्य से स्थापित हो रहे इन संस्थानों के माध्यम से शैक्षिक पाठ्यक्रम, तकनीकी प्रबन्ध एवं नियोजन की शैक्षिक जानकारी शोध, अभिनव प्रयोग तथा नवीनतम शैक्षिक उपलब्धियों को ऐसे ग्रामीण अंचलों तक पहुँचाने की संकल्पना की गई है जो इन आवश्यक सुविधाओं से अपवंचित है। इन संस्थानों की स्थापना की प्रगति आख्या निम्नवत है–

योजना के प्रथम चरण में निम्नलिखित 20 जनपदों में संस्थानों की स्थापना की गई है–

1. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, लखनऊ
2. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, उन्नाव
3. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, मंझनपुर–इलाहाबाद
4. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, अजीतमल–इटावा।
5. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, फरीदपुर–बरेली।
6. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बीसलपुर–पीलीभीत।
7. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बरूआसागर–झाँसी।
8. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चरखारी–हमीरपुर।
9. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, फैजाबाद।
10. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, कांठ–मुरादाबाद।

11. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, पयागपुर, बहराइच।
12. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बुलन्दशहर।
13. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, सारनाथ–वाराणसी।
14. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, मवाना, मेरठ।
15. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, पकवाइनार बलिया।
16. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, गोरखपुर।
17. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, आगरा।
18. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बाद–मथुरा।
19. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, भीमताल–नैनीताल।
20. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, डीडीहाट–पिथौरागढ़।

द्वितीय चरण में निम्नांकित जनपदों में सस्थान स्थापित किए गए हैं–

1. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, फतेहपुर।
2. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, नर्वल–कानपुर।
3. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, छिबरामऊ–फर्रूखाबाद।
4. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, ददरौल–शाहजहाँपुर।
5. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, ललितपुर।
6. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, रामपुर।
7. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, मुजफ्फरनगर।
8. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, राबर्ट्सगंज–सोनभद्र।
9. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, हाथरस–अलीगढ़।
10. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, अलमोड़ा।
11. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, हरदोई।
12. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, गणेशपुर–बाराबंकी।
13. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, भोगांव–मैनपुरी।
14. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान जौनपुर।

15. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, हापुड़–गाजियाबाद।
16. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बदायूँ।
17. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, देहरादून।
18. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, रायबरेली।
19. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, कर्बी बाँदा।
20. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, रूड़की–हरिद्वार।

तृतीय चरण में स्वीकृत 23 संस्थानों के नाम निम्नवत् हैं–

1. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, सैदपुर–गाजीपुर।
2. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बड़कोट–उत्तरकाशी।
3. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, पिण्डारी क्षेत्र–कोंच जालौन।
4. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, इस्माइलपुर–बिजनौर।
5. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, दर्जीकुँआ–गोण्डा।
6. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, रामपुर कारखाना देवरिया।
7. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, सुल्तानपुर।
8. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, पटेहराकलां–मिर्जापुर।
9. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, इमलिया–मऊ।
10. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, जाफरपुर–आजमगढ़।
11. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, भैंसऊ, कानपुर देहात।
12. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, खैराबाद–सीतापुर।
13. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, गैरसैंण–चमोली।
14. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, राजापुर,लखीमपुर खीरी।
15. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बाँसी–सिद्धार्थनगर।
16. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, बस्ती।
17. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, नगला अमान मौजानेपई, फिरोजाबाद।
18. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, अतरसण्ड–प्रतापगढ़।

19. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, पटनी–सहारनपुर।

20. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, हरचन्दपुर कलाँ–एटा।

21. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, चड़िगाँव–खण्डाह, पौढ़ी।

22. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, मदननेगी–टेहरी।

23. जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, महाराजगंज।

संस्थानों के भवन–निर्माण तथा उपकरणों के क्रय हेतु स्वीकृतियाँ:

तीनों चरणों में स्वीकृत 63 संस्थानों के भवनों के निर्माण तथा आवश्यक उपकरणों के क्रय हेतु भारत सरकार द्वारा जो धनराशि स्वीकृत की गई है उसमें से प्रदेश सरकार द्वारा 62 संस्थानों के भवन निर्माण तथा उपकरणों हेतु स्वीकृत धनराशि को उनमुक्त कर दिया गया है। जनपद महाराजगंज में स्थल चयन की कार्यवाही की जा रही है।

स्वीकृत धनरशि का विवरण निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है :–

(लाख रू. में)

	कुल अनावर्तक स्वीकृति					कुल अनावर्तक धनराशि	
वर्ष	संस्थानों की सं.	भवनों हेतु स्वीकृत धनराशि	अवमुक्त	उपकरणों हेतु स्वीकृत धनराशि	अवमुक्त	स्वीकृत	अवमुक्त
1	2	3	4	5	6	7	8
1987–88 प्रथम चरण	20	727.11	727.11	200.00	172.94	927.11	900.05
1988–89 द्वितीय चरण	20	841.10	841.00	199.00	134.00	1040.10	975.00
1991–92 तृतीय चरण	23	2216.00	2166.00	233.00	161.54	2449.00	2327.54
योग	**63**	**3784.21**	**3734.11**	**632.00**	**468.48**	**4416.21**	**4202.59**

भवनों के निर्माण की प्रगति :

भौतिक स्थिति :

संस्थानों के भवनों के निर्माण और निर्मित भवनों के "टेक ओवर" तथा निर्माणाधीन भवनों का विवरण निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है--

	स्वीकृत भवनों की संख्या	भवनों की संख्या जिनका 'टेक ओवर' हो चुका है	कार्य प्रगति पर (निर्माणाधीन भवनों की सें0)
प्रथम चरण	20	20	–
द्वितीय चरण	20	15	05
तृतीय चरण	23	04	19
योग	**63**	**39**	**24**

उक्त से स्पष्ट है कि प्रथम चरण के सभी 20 संस्थानों का तथा द्वितीय चरण के 20, संस्थानों में सें 15 का "टेक ओवर" हो चुका है। केवल द्वितीय चरण के 5 भवन निर्माणाधीन हैं।

तृतीय चरण के 4 भवनों का टेक ओवर हो गया है तथा 17 भवन निर्माणाधीन हैं। इसमें से दो जनपदों बस्ती और चमोली के भूमि अधिग्रहण की कार्यवाही की जा रही है तथा महाराजगंज में स्थल चयन की कार्यवाही की जा रही है।

उपकरणों का क्रय :

प्रथम तथा द्वितीय चरण के 20, 20 संस्थानों कमशः रू. 172.94 लाख तथा रू. 134.00 लाख की धनराशि पुस्तकों, उपकरणों एवं काष्ठोपकरण कारणों के क्रयार्थ सम्बन्धित संस्थानों के प्राचार्यो को उपलब्ध कराई जा चुकी है और उपकरणों का क्रय प्राचार्यो द्वारा किया जा रहा है।

पद सृजन एवं नियुक्ति :

कुल स्वीकृत 63 संस्थानों में से प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय चरण के 62 संस्थानों में भारत सरकार द्वारा अनुमोदित 48 पद प्रति संस्थान सृजित किए जा चुके हैं। प्रत्येक संस्थान के 48 पदों में से 25 शैक्षिक पद हैं तथा 23 शिक्षणोत्तर पद है। शैक्षिक पदों का विवरण निम्नवत् है:-

1.	प्राचार्य, (उप निदेशक स्तर) वेतनक्रम	रू.	3000–4750	1 पद
2.	उप प्राचार्य (उ.प्र. शैक्षिक सेजवा ज्येष्ठ)		3000–4500	1 पद
3.	वरिष्ठ प्रवक्ता (उ.प्र. शैक्षिक सेवा कनिष्ठ) वेतनक्रम।		2200–4000	6 पद
4.	प्रवक्ता (इण्टर कालेजों का प्रवक्ता वेतनक्रम)		1600–2660	17 पद
			योग	**25 पद**

5. सेवा नियमावली :

प्रथम तथा द्वितीय चरण के जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थानों में प्राचार्य तथा उप प्राचार्य के पद सम्वर्गीय घोषित किये गये हैं अवशेष पदों को सम्वर्गीय घोषित किये जाने की कार्यवाही शासन द्वारा की जा रही है। तृतीय चरण के सभी पद सम्वर्गीय हैं।

वर्ष 1993–94 में सम्पादित कार्य :

विद्यालयी शिक्षा एवं शिक्षक शिक्षा के गुणात्मक विकास एवं युगीन आवश्यकताओं के सन्दर्भ में जिला संस्थानों के निम्नांकित 7 विभाग प्रयासरत हैं।

1. सेवा पूर्व शिक्षक शिक्षा विभाग।
2. कार्यानुभव विभाग।
3. सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण क्षेत्रीय सम्पर्क तथा प्रवर्तन समन्वय विभाग।
4. जिला संसाधन इकाई।
5. पाठ्यक्रम, पाठ्य सामग्री विकास तथा मूल्यांकन विभाग।
6. शैक्षिक तकनीकी विभाग।
7. योजना एवं प्रबन्ध विभाग।

प्रथम तथा द्वितीय चरण में स्थापित जिला संस्थानों में शिक्षकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था निम्नवत् है :-

1. सेवापूर्व प्रशिक्षण

प्रत्येक जिला संस्थान में प्रारंभिक शिक्षकों के सेवापूर्व प्रशिक्षण द्विवषीय बी.टी.सी. प्रशिक्षण का आयोजन किया जाता है।

2. सेवाकालीन प्रशिक्षण

सेवा पूर्व प्रशिक्षण के अतिरिक्त प्रारम्भिक विद्यालयों के सहायक/प्रधान अध्यापकों तथा अनौपचारिक शिक्षा के अनुदेशकों का सेवाकालीन पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण का भी आयोजन किया जाता है। वर्ष 1994–95 में

आयोजित क्रमागत प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सम्मिलित प्रशिक्षणार्थियों की कुल संख्या 9745 रही। इसके अतिरिक्त मृतक क्रमागत तथा उ.प्र. सभी के लिये शिक्षा के अन्तर्गत समन्वया संदर्भदाता प्रशिक्षण आदि भी आयोजित किये जाते हैं। विस्तृत विवरण संलग्नक 'क' पर है।

कार्यशाला / विचारगोष्ठी

जिला संस्थान प्रशिक्षण के आयोजन के अतिरिक्त शैक्षिक विषयों एवं समस्याओं पर शैक्षिक कार्यशालाओं एवं गोष्ठियों का आयोजन भी करते हैं। इन शैक्षिक गोष्ठियों में विशेषज्ञ, शिक्षक शिक्षाविद तथा विभागीय अधिकारियों को आमंत्रित किया जाता है।

शोध / अध्ययन / सर्वेक्षण / परियोजना

विद्यालयी शिक्षा एवं अध्यापक शिक्षा के गुणात्मक विकास एवं प्रासंगिक आवश्यकताओं के संदर्भ में शोध / अध्ययन / सर्वेक्षण का सम्पादन जिला संस्थानों द्वारा किया जा रहा है।

वार्षिक पत्रिकाएँ

जिला संस्थानों की वार्षिक पत्रिकाओं के नाम निम्नलिखित हैं:–

प्रथम चरण के संस्थान

क्रमांक	पत्रिका का शीर्षक	संस्थान का नाम
1.	उपलब्धि	लखनऊ
2.	प्रवाह	उन्नाव
3.	त्रिवेणी	मंझनपुर–इलाहाबाद
4.	अभिलाषा	अजीतमल–इटावा
5.	संस्थान प्रणव	फरीदपुर–बरेली
6.	दीप शिखा	बीसलपुर–पीलीभीत
7.	सागर	बरूआसागर–झाँसी
8.	सुरभि	फैजाबाद
9.	अरूणोदय	पयागपुर–बहराइच
10.	दिव्या	सारनाथ–वाराणसी
11.	उपज	मवाना–मेरठ
12.	प्रभा	गोरखपुर

13.	खोज	आगरा
14	कर्मभूमि	बाद–मथुरा
15	शिखरदीप	भीमताल–नैनीताल
16	ज्ञानपुञ्ज	डीडीहाट–पिथौरागढ़
17	ब्रह्मज्योति	पकवाइनार–बलिया

द्वितीय चरण के संस्थान

18	जागृति	फतेहपुर
19	विकास	नर्वल–कानपुर नगर
20	रश्मि	ददरौल–शाहजहाँपुर
21	शिखा	ललितपुर
22	अनुभूति	मुजफ्फरनगर
23	सोनप्रवाह	राबर्टसगंज–सोनभद्र
24	दीपरश्मि	हाथरस–अलीगढ़
25	शिक्षा और प्रशिक्षण	अल्मोड़ा
26	धुवा	हरदोई
27	जागृति	जौनपुर
28	दीप्त रश्मि	देहरादून
29	उन्नयन	रायबरेली
30	अस्मिता	कर्बी–बाँदा

सेवा कालीन प्रशिक्षण

क्रम सं.	संस्थान का नाम	विषय	प्रतिभागी जिनके लिए कार्यक्रम आयोजित किया गया	तिथियाँ	अवधि	फेरा	सम्मिलित
1	2	3	4	5	6	7	8
1	भवाना मेरठ	सेवा कालीन प्रशिक्षण	सहा. अध्यापक प्रा. विद्यालय	19.10.94—30.11.94	10 दिन	3	126
		तदैव	प्रधानाध्यापक उच्च प्रा. विद्यालय	8.12.94—17.12.94	10 दिन	1	33
		तदैव	सहा. अध्यापक प्रा. वि. (मृतक आश्रित)	2.1.95—11.1.95	10 दिन	1	73
							252
2	हाथरस अलीगढ	उ.प्र. सभी के लिए शिक्षा के अर्न्तगत समन्वय/संदर्भ दाता प्रशिक्षण	सहायक अध्यापक/प्रधानाध्यापक	15.10.94—1.11.94	18 दिन	2	49
		पुनर्वोधात्मक प्रशिक्षण	सहायक अध्यापक प्रा. वि.	21.11.94—5.2.95	10 दिन	4	207
		अप्रशिक्षित मृतक आश्रित अध्यापकों का प्रशिक्षण	सहायक अध्यापक प्रा. वि.	17.1.95—26.1.95	10 दिन	1	11
		पुनर्वोधात्मक प्रशिक्षण	प्रधानाध्यापक	17.1.95—24.1.95	8 दिन	1	41
		तदैव	अनुदेशक/अनुदेशिका अनौपचारिक शिक्षा	6.3.95—15.3.95	10 दिन	1	39
		मास्टर ट्रेनर कोर्स निदेशक प्रशिक्षण	सहायक अध्यापक प्रधानाध्यापक	21.11.94—11.3.95			
							1873
3	डीडीहाट पिथौरागढ़	सेवारत प्रशिक्षण प्राथमिक स्तर	सहायक अध्यापक	6.12.94—13.3.95	10 दिन	6	198
		सेवारत प्रशिक्षण उच्च प्रा. स्तर	सहायक अध्यापक	19.2.95—23.2.95	5 दिन	1	50
							248
4	बरूआ सागर झासी	विशेष अनुस्थापक प्रशिक्षण	रिसोंस पर्सन्स रा. दी. वि.	27.5.95—2.6.96	7 दिन	1	45
		जी. विज्ञान प्रशिक्षण	सहायक अध्यापक हाईस्कूल	3.8.94—12.8.94	10 दिन	1	19
		सेवाकालीन प्रशिक्षण	प्रधानाध्यापक उ.प्र. वि.	15.11.94—13.1.95	10 दिन	3	151
		सेवाकालीन प्रशिक्षण	सहा. अध्यापक प्रा. वि.	27.1.95—15.2.95	10 दिन	3	134
							349

सेवा कालीन प्रशिक्षण

क्रम सं.	संस्थान का नाम	विषय	प्रतिभागी जिनके लिए कार्यक्रम आयोजित किया गया	तिथियाँ	अवधि	फेरा	सम्मिलित
1	2	3	4	5	6	7	8
5	राबर्टसगंज सोनभद्र	कोई क्रार्यक्रम	आयोजित नही हुआ				
6	फैजाबाद	पुर्नवोधात्मक प्रशिक्षण	प्रा. अ. उ. वि.	21.10.94–30.10.94	10 दिन	1	24
		तदैव	स. उ. प्रा. वि.	30.11.94–9.3.95	10 दिन	6	228
							252
7	बुलन्दशहर	पुनर्वोधात्मक प्रा. शि.	प्रा./उ.प्र. विद्यालय के मृतक आश्रित स.अ.	6.2.95–15.2.95	10 दिन	1	53
		टी.वी./बी.सी आर. प्रशिक्षण	स. अध्यापक प्राथमिक विद्यालय	29.3.95	1 दिन	1	11
							64
8	पौढ़ी	सेवारत प्रशिक्षण	स. अ. प्राथमिक विद्यालय/ मृतक आश्रित स. अध्यापक	4.1.95–13.1.95	10 दिन	1	41
		तदैव	स. अ. प्राथमिक विद्यालय	16.1.95–15.2.95	10 दिन	3	121
		तदैव	प्राथमिक विद्यालय के प्र	16.2.95–25.2.95	10 दिन	1	41
		तदैव	प्रधानाध्यापक उ.प्रा. विद्यालय	6.3.95–15.3.95	10 दिन	1	41
		तदैव	उच्च प्राथमिक वि. के सहायक अध्यापक	20.3.95–29.3.95	10 दिन	2	78
							322
9	पटनी सहारनपुर	सभी के लिये शिक्षा के अन्तर्गत प्रशिक्षण	समन्वयक/संदर्भ व्यक्ति	15.10.94–1.11.94	10 दिन	1	30
		तदैव	प्रा. वि. के प्रधानाध्यापक स.अध्यापक	21.11.94–23.3.95	10 दिन		850
							880
10	अल्मोड़ा	पुर्नवोधात्मक प्रशि.	प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक/सहा. अध्यापक	2.1.95–29.3.95	10 दिन	6	263
							263
11	उन्नाव	कार्यानुभव प्रशिक्षण	तदैव	21.10.94–30.10.94	10 दिन	1	45
		विज्ञान/गणित प्रशि.	उच्च प्राथमिक वि. के स. अ.	21.11.94–30.11.94	10 दिन	1	30
		प्रबन्ध एवं नियोजन	तदैव	1.12.94–10.12.94	10 दिन	1	75

सेवा कालीन प्रशिक्षण

क्रम सं.	संस्थान का नाम	विषय	प्रतिभागी जिनके लिए कार्यक्रम आयोजित किया गया	तिथियाँ	अवधि	फेरा	सम्मिलित
1	2	3	4	5	6	7	8
		पाठ्यक्रम विकास	प्रा. वि. के प्रधान/सहायक अध्यापक	13.12.94–22.12.94	10 दिन	1	50
		पुर्नवोधात्मक प्रशि.	अनौपचारिक शिक्षा के अनुदेशन	1.2.95–30.3.95	4 दिन	1	476
		विज्ञानकिट प्रशिक्षण	प्राथमिक विद्यालय के सहायक अध्यापक	18.7.94–21.7.94			37
							713
12	सारनाथ वाराणसी	एस.के.पी.टी. प्रशिक्षण	रा.दी.वि. सहायक अध्यापक	27.5.94–2.6.94	7 दिन	1	40
		विज्ञान किट् प्रशिक्षण	सहायक अध्यापक प्राथमिक प्राथमिक विद्यालय	20.7.94–23.7.94	4 दिन	1	56
		सबके लिये शिक्षा प्रशिक्षण	बी.आर.सी. समन्वयक	15.10.94–1.11.94	18 दिन	1	65
							161
13	लखनऊ	पुर्नवोधात्मक प्रशिक्षण	प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक	15.11.94–9.2.95	10 दिन	4	199
		शिक्षा के सार्वजनीकरण से संबंधित प्रशिक्षण	प्राथमिक विद्यालय के स. अध्यापक	20.12.94–7.5.95	5 दिन	13	497
							696
14	देहरादून	पुर्नबोधात्मक प्रशिक्षण	स. अ. प्रा. वि.	6.2.95–15.2.95			
				24.2.95–5.3.95	10 दिन	4	125
				20.3.95–29.3.95			
		तदैव	प्र. अ. उ. प्रा. वि.	6.2.95–15.2.95	10 दिन	1	23
			प्र. अ. प्रा. वि.	22.2.95–3.3.95	10 दिन	1	31
			स. अ. उ. प्रा.	22.2.95–3.3.95	10 दिन	2	60
			स. अ. पा.वि.	20.3.95–29.3.95	10 दिन	1	24
		जीव विज्ञान प्रशिक्षण हाईस्कूल स्तरीय विज्ञान प्रशिक्षण	स. अ. हाईस्कूल तदैव	3.8.94–12.8.94	10 दिन	1	39
				20.3.95–29.3.95	10 दिन	1	22

सेवा कालीन प्रशिक्षण

क्रम सं.	संस्थान का नाम	विषय	प्रतिभागी जिनके लिए कार्यक्रम आयोजित किया गया	तिथियाँ	अवधि	फेरा	सम्मिलित
1	2	3	4	5	6	7	8
		टू इन वन प्रशिक्षण	प्राथमिक विद्यालय के अध्यापक	7.3.95–8.3.95	2 दिन	1	21
							345
15	शिवरामपुर बांदा	पुर्नबोधात्मक प्रशिक्षण	स. आ. प्रा. वि.	8.11.94–22.11.94	10 दिन	3	132
		तदैव	स. आ. प्रा. वि.	3.12.94–12.12.94	10 दिन	1	53
			स. आ. प्रा. वि.	16.1.95–25.1.95	10 दिन	1	33
			प्र. आ.उ. प्रा.	2.1.95–13.1.95	10 दिन	1	30
		गणित प्रशिक्षण	स. अ. उ. प्रा.	24.10.94–28.10.94	5 दिन	1	51
		दृश्य श्रव्य प्रशिक्षण	प्र. आ. उ. प्रा.	13.2.95–18.2.95	6 दिन	1	22
							322
16	रूढ़की हरिद्वार	सेवाकालीन प्रशिक्षण मृतक आश्रित	स. अ. प्र. वि.	20.10.94–24.10.94	10 दिन	1	47
		पुर्नबोधात्मक प्रशिक्षण	तदैव	7.11.94–23.2.95	10 दिन	4	188
		तदैव	सहारनपुर जनपद के स. अ.	1.3.95–27.3.95	10 दिन	2	187
							422
17	गोरखपुर	पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण	प्राथमिक विद्यालयों के सहायक अध्यापक	7.11.94–30.11.95	10 दिन	6	265
							265
18	बीसलपुर पीलीभीत	कोई भी प्रशिक्षण	कार्यक्रम आयोजित	नहीं हुआ			
19	वाद–मथुरा	पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण	प्राथमिक विद्यालयों के सहायक अध्यापक	1.10.94–29.3.95	10 दिन	6	260
		तदैव	उच्च प्राथमिक विद्यालयों के सहायक अध्यापक	15.11.94–26.2.95	5 दिन	2	43
							303
20	मुजफ्फरनगर	पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण	प्राथमिक विद्यालयों के सहायक अध्यापक	8.11.94–29.30.95	10 दिन	5	225
							225

सेवा कालीन प्रशिक्षण

क्रम सं.	संस्थान का नाम	विषय	प्रतिभागी जिनके लिए कार्यक्रम आयोजित किया गया	तिथियाँ	अवधि	फेरा	सम्मिलित
1	2	3	4	5	6	7	8
21	अजीतमल इटावा	पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण	प्राथमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापक	21.11.94–15.12.94	10 दिन	2	86
		तदैव	प्राथमिक विद्यालयों के सहायक अध्यापक	15.12.94–16.2.95	10 दिन	2	108
		तदैव	उच्च प्राथमिक विद्याालय के प्रधानाध्यापक	18.2.95–13.3.95	10 दिन	1	51
							245
22	रामपुर	पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण	प्राथमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापक	10.8.94–30.8.94	10 दिन	2	100
		तदैव	प्रा. वि. के सहायक अध्यापक	7.11.94–16.11.94	10 दिन	1	50
		तदैव	अनौपचारिक शिक्षा के अनुदेशक	18.10.94–6.11.94	10 दिन	2	100
							250
23	आगरा	अधिनवीकरण प्रशिक्षण	प्राथमिक विद्यालयों के मृतक आश्रित सहा. अध्यापक	7.11.94–16.11.94	10 दिन	1	47
		पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण	प्राथमिक विद्या. के प्रधानाध्यापक एव सहायक अध्यापक	7.11.94–15.2.95	10 दिन	5	251
							298
24	फरीदपुर बरेली	पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण	प्राथमिक विद्यालयों के सहायक अध्यापक	1.12.94–11.1.95	10 दिन	3	181
		तदैव	प्रा. वि. के प्रधानाध्यापक	12.1.95–21.1.95	10 दिन	1	57
							238
25	फतेहपुर	सेवारत प्रशिक्षण	उच्च प्राथमिक विद्यालय के सहायक अध्यापक	11.9.94–15.9.94	5 दिन	1	60
			प्राथमिक विद्यालय के सहायक अध्यापक	3.10.94–14.12.94	10 दिन	5	292
							352

सेवा कालीन प्रशिक्षण

क्रम सं.	संस्थान का नाम	विषय	प्रतिभागी जिनके लिए कार्यक्रम आयोजित किया गया	तिथियाँ	अवधि	फेरा	सम्मिलित
1	2	3	4	5	6	7	8
26	छिवरामऊ फर्रूखाबाद	सेवारत प्रशिक्षण	प्राथमिक विद्यालय के सहायक अध्यापक	21.11.94–10.3.95	10 दिन	5	295
		पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण	अनौपचारिक शिक्षा के अनुदेशक	1.12.94–14.3.95	10 दिन	8	1297
							1592
27	भोगांव मैनपुरी	पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण	प्राथमिक विद्यालयों के सहायक अध्यापक एवं प्रधानध्यापक	8.11.94–15.3.95	10 दिन	5	311
							311
28	रायबरेली	पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण	प्राथमिक विद्यालय के सहायक अध्यापक	20.10.94–10.11.94	10 दिन	2	98
		तदैव	प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक	21.11.94–30.11.94	10 दिन	1	50
		तदैव	प्राथमिक विद्यालयों के सहायक अध्यापक एवं प्रधानाध्यापक	1.3.95–29.3.95	10 दिन	2	86
							265
29	हापुड़ गाजियाबाद	पुनर्बोधात्मक प्रशिक्षण	उच्च प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक	3.10.94–12.10.94	10 दिन	1	50
		तदैव	प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक	17.10.94–26.10.94	10 दिन	1	50
		तदैव	प्राथमिक विद्यालय के सहायक अध्यापक	28.10.94–30.11.94	10 दिन	3	152
							252
30	सीतापुर	पुर्नबोधात्मक प्रशिक्षण	स. अ. प्रा. वि.	3.1.95–26.1.95	10 दिन	3	93
		तदैव	प्र. अ. प्रा. वि.	6.2.95–15.2.95	10 दिन	1	43
		तदैव	उ. प्रा. वि. के स. अ.	20.2.95–1.3.95	10 दिन	1	42
		तदैव	अ. प्रा. वि. के प्र. अ.	4.3.95–13.3.95	10 दिन	1	40
							218

सेवा कालीन प्रशिक्षण

क्रम सं.	संस्थान का नाम	विषय	प्रतिभागी जिनके लिए कार्यक्रम आयोजित किया गया	तिथियाँ	अवधि	फेरा	सम्मिलित
1	2	3	4	5	6	7	8
31	पयागपुर बहराइच	सेवा कालीन प्रशिक्षण	प्रा. वि. के स. अ. (मृतक आश्रित)	3.10.94–12.10.94	10 दिन	1	50
		तदैव	अ. प्रा. वि. के स. आ.	25.11.94–25.1.95	10 दिन	3	141
		तदैव	प्रा. वि. के स. अ.	3.1.95 – 22.2.95	10 दिन	2	85
		तदैव	उ. प्रा. वि. के स. अ.	23.3.95–25.3.95	3 दिन	1	49
							274
32	भीमताल नैनीताल	विज्ञान/गणित प्रशि.	हाईस्कूल के गणित अध्यापक	4.8.95–23.8.95	10 दिन	2	25
		पुनर्बोधात्मक प्रशि.	प्रा. वि. के अ.	23.12.94–22.3.95	10 दिन	7	299
		गणित प्रशि.	प्रा. वि. के प्रधानाध्यापक/ स. अध्यापक	21.2.95–13.3.95	5 दिन	1	23
							346
33	मंझनपुर इलाहाबाद	विज्ञान प्रा. शि.	हा. स्कूल वि. अ.	15.10.94–1.11.94	10 दिन	1	07
		सभी के लिए शिक्षा के अन्तर्गत प्रशिक्षण	सदर्भदाता समन्वयक	15.10.94–1.11.94	10 दिन	2	48
		पुनर्बोधात्मक प्रशि.	प्रा. वि. के प्र. स. अध्यापक	21.2.95–12.3.95	10 दिन	18	277
							332
34	नर्वल कानपुर	पुनर्बोधात्मक प्रशि.	प्रा. वि. के स. अ.	8.11.94–30.11.94	10 दिन	2	170
		तदैव	प्रा. वि. के. प्र. अ.	5.12.94–11.1.95	10 दिन	2	66
							236

LIBRARY & DOCUMENTATION CENTRE
National Institute of Educational
Planning and Administration.
17-B, Sri Aurobindo Marg,
New Delhi-110016
DOC, No.....
Date.....